RATNA JYOTI
RATNA JYOTI

Sample

30 Aug 1988

10:00 AM

Delhi

Model: Life-Horoscope-Web

SrNo: 101-111-105-1030 / 253

Phone: +91-341-2668022
Mobile : +91-9732150484
Whatsapp : +91-9732150484

RATNA JYOTI®

Website: https://www.ratnajyoti.com/
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan ,W.B , India ,Zip-713322

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Sample

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**30/08/1988**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**10:00:00 घंटे**
इष्ट	10:04:32 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	09:38:52 घंटे
वेलान्तर	-00:00:36 घंटे
साम्पातिक काल	08:13:13 घंटे
सूर्योदय	05:58:11 घंटे
सूर्यास्त	18:44:43 घंटे
दिनमान	12:46:32 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	13:19:12 सिंह
लग्न के अंश	05:27:33 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**रेवती - 2**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	गण्ड
करण	बव
गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दो-द्रोणी
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1910	भाद्रपद	8
पंजाबी	संवत : 2045	भाद्रपद	15
बंगाली	सन् : 1395	भाद्रपद	14
तमिल	संवत : 2045	आवनी	15
केरल	कोल्लम : 1164	चिगंम	14
नेपाली	संवत : 2045	भाद्रपद	15
चैत्रादि	संवत : 2045	भाद्रपद	कृष्ण 4
कार्तिकादि	संवत : 2045	श्रावण	कृष्ण 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 4
तिथि समाप्ति काल _____: 26:42:00
जन्म तिथि _____: 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 23:24:11 घंटे
जन्म योग _____: रेवती
सूर्योदय कालीन योग ____: गण्ड
योग समाप्ति काल _____: 22:35:17 घंटे
जन्म योग _____: गण्ड
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 16:06:28 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 20:55:51
भभोग _____: 54:26:16
भोग्य दशा काल _____: बुध 10 वर्ष 5 मा 1 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरूड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

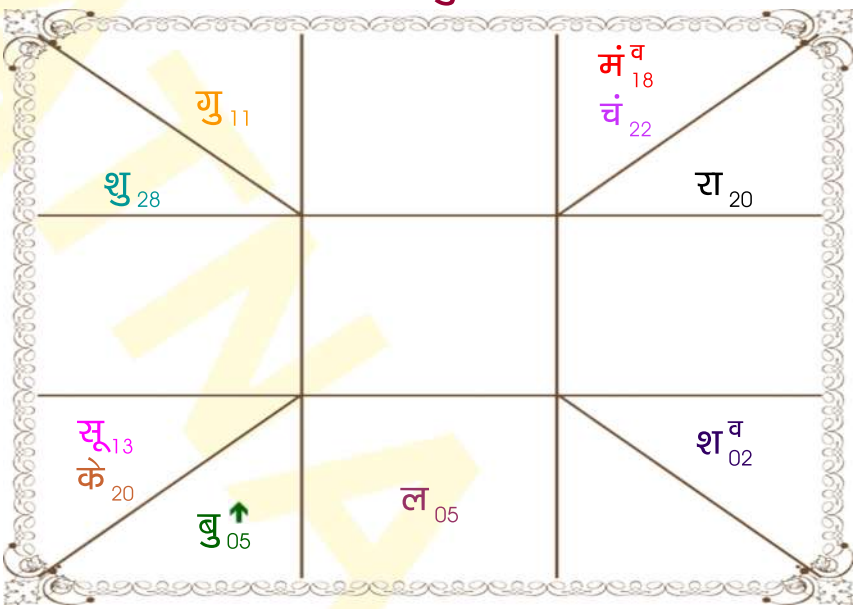

चन्द्र कुंडली

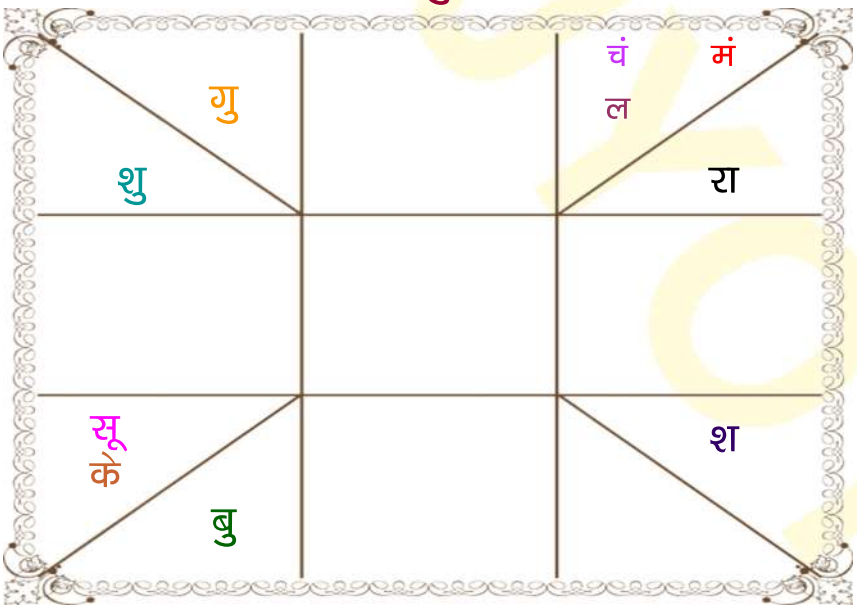

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

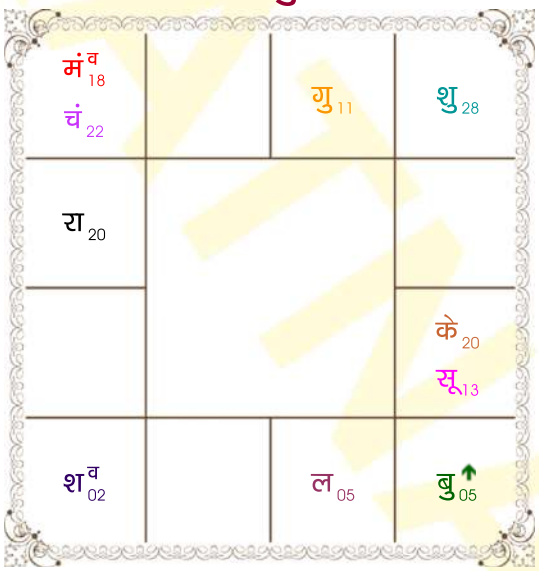

लग्न कुंडली

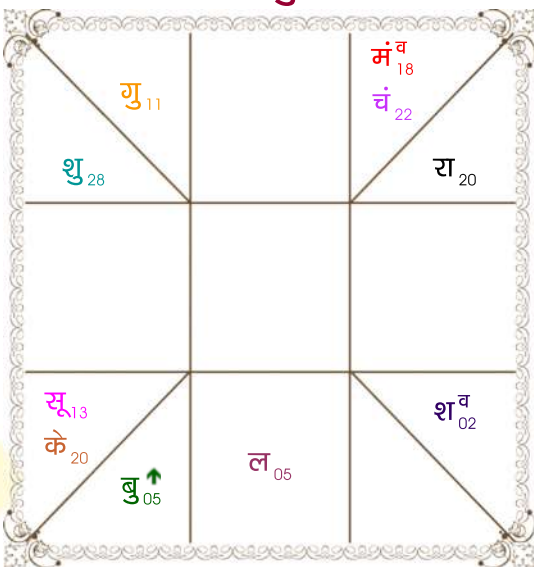

विंशोत्तरी
बुध 10वर्ष 5मा 1दि

बुध

30/08/1988

01/02/2102

बुध	31/01/1999
केतु	31/01/2006
शुक्र	31/01/2026
सूर्य	31/01/2032
चन्द्र	31/01/2042
मंगल	30/01/2049
राहु	31/01/2067
गुरु	31/01/2083
शनि	01/02/2102

योगिनी
उल्का 3वर्ष 8मा 4दि

भद्रिका

04/05/2017

05/05/2022

भद्रिका	13/01/2018
उल्का	13/11/2018
सिद्धा	04/11/2019
संकटा	13/12/2020
मंगला	02/02/2021
पिंगला	15/05/2021
धान्या	14/10/2021
भ्रामरी	05/05/2022

गणना

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	05:27:33	312:21:30	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	---
सूर्य			सिंह	13:19:12	00:58:00	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मूलत्रिकोण
चंद्र			मीन	21:49:38	14:44:07	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	सम राशि
मंगल	व		मीन	17:40:25	00:03:02	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
बुध			कन्या	05:20:07	01:27:43	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	उच्च राशि
गुरु			वृष	11:22:54	00:04:50	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि
शुक्र			मिथु	27:43:05	01:00:40	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
शनि	व		धनु	02:13:44	00:00:01	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
राहु			कुंभ	20:23:00	00:00:23	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	मित्र राशि
केतु			सिंह	20:23:00	00:00:23	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		धनु	03:21:37	00:00:19	मूल	2	19	गुरु	केतु	सूर्य	---
नेप	व		धनु	13:49:23	00:00:37	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	16:31:54	00:01:21	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
दशम भाव			कर्क	07:22:48	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	केतु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:42:00

लग्न-चलित

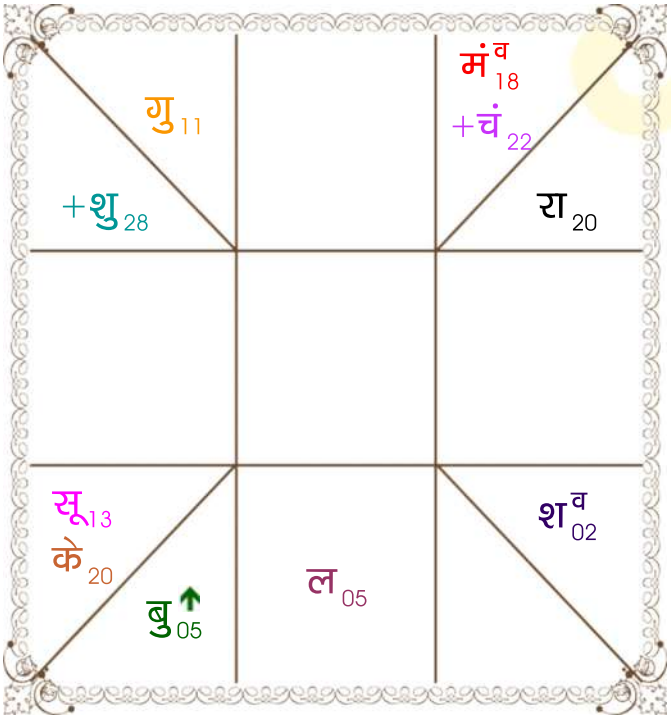

चन्द्र कुंडली

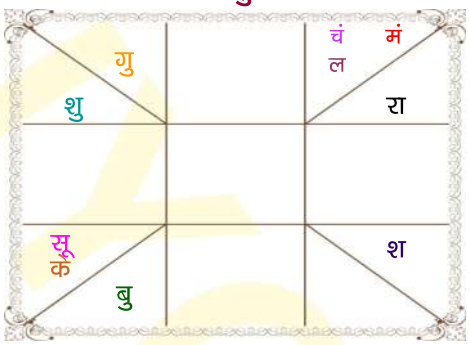

नवमांश कुंडली

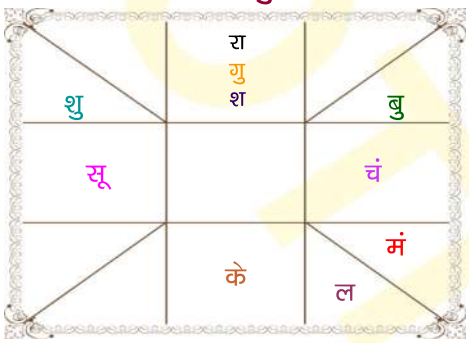

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	20:46:45	तुला	05:27:33
2	तुला	20:46:45	वृश्चिक	06:05:58
3	वृश्चिक	21:25:10	धनु	06:44:23
4	धनु	22:03:36	मकर	07:22:48
5	मकर	22:03:36	कुम्भ	06:44:23
6	कुम्भ	21:25:10	मीन	06:05:58
7	मीन	20:46:45	मेष	05:27:33
8	मेष	20:46:45	वृष	06:05:58
9	वृष	21:25:10	मिथुन	06:44:23
10	मिथुन	22:03:36	कर्क	07:22:48
11	कर्क	22:03:36	सिंह	06:44:23
12	सिंह	21:25:10	कन्या	06:05:58

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	05:27:33
2	वृश्चिक	04:19:51
3	धनु	05:08:31
4	मकर	07:22:48
5	कुम्भ	09:34:27
6	मीन	09:24:38
7	मेष	05:27:33
8	वृष	04:19:51
9	मिथुन	05:08:31
10	कर्क	07:22:48
11	सिंह	09:34:27
12	कन्या	09:24:38

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

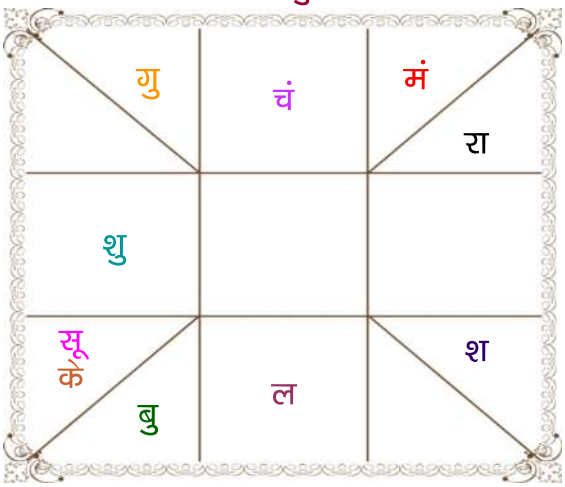

भाव कुंडली

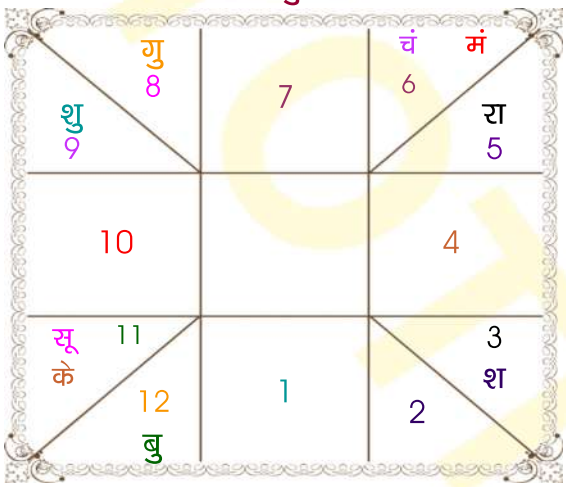

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	स्वस्थ	निद्रा	6.30	58 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	कुमार	शक्त	उपवेशन	8.33	75 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	युवा	मुदित	उपवेशन	4.83	32 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	मृत	दीप्त	आगम	14.19	39 %
गुरु	पुत्र	धन	वृद्ध	खल	प्रकाश	4.91	64 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	मृत	मुदित	उपवेशन	5.29	56 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	शक्त	भोजन	1.91	21 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	मुदित	प्रकाश	0.00	7 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	खल	गमन	0.00	7 %
कुल						45.77	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

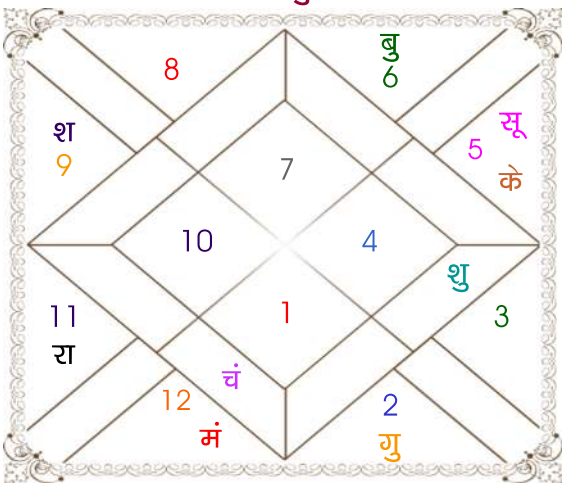

लग्न-चलित

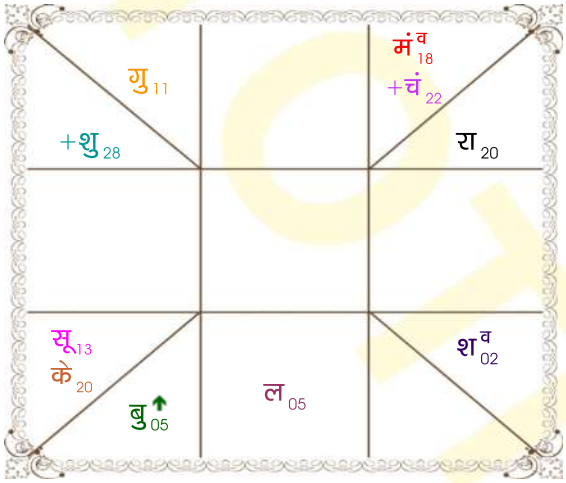

सुदर्शन चक्र

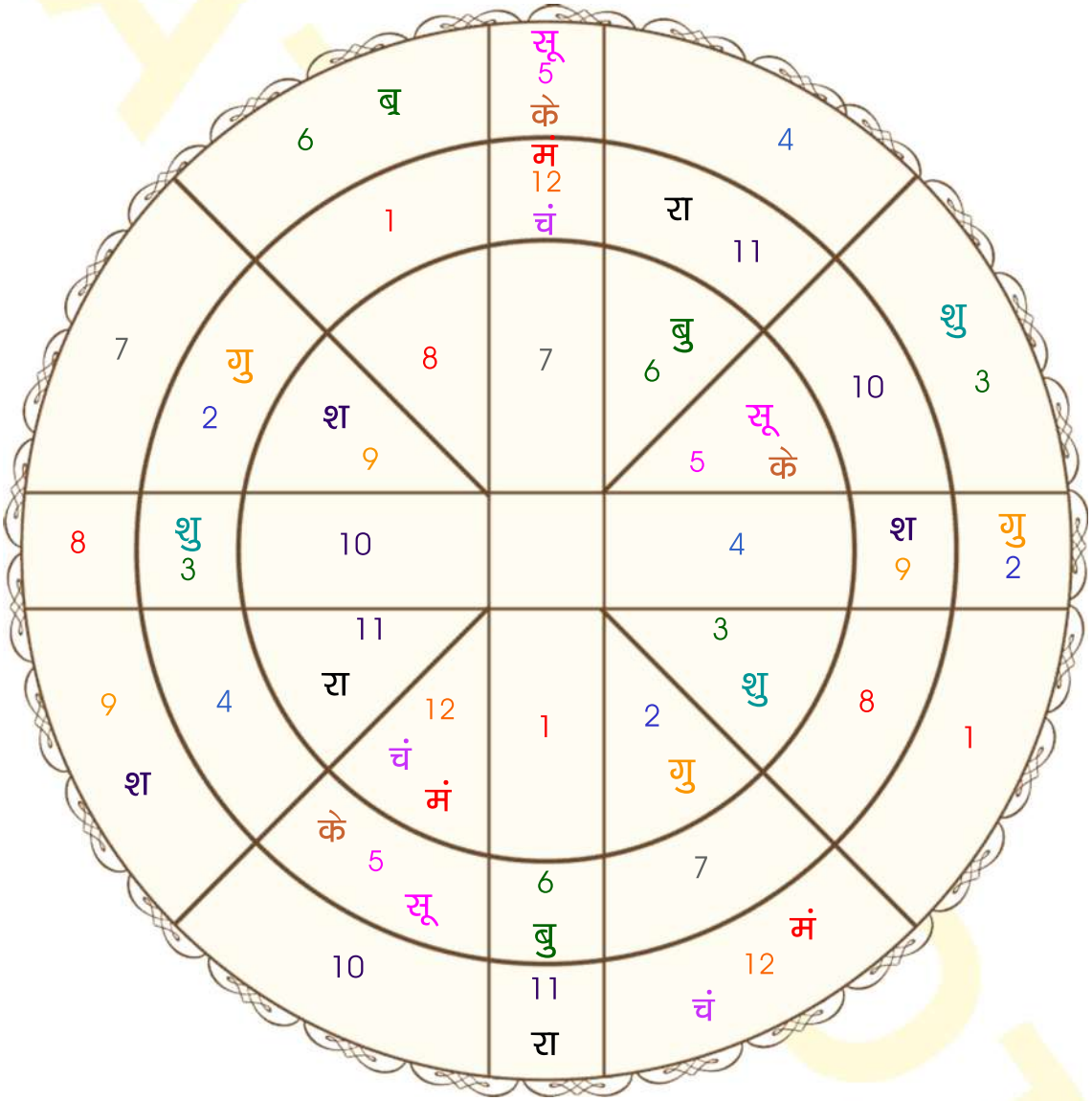

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

इन पृष्ठों में ज्योतिष की कृष्णमूर्ति पद्धति से संबंधित आपके सभी आवश्यक विवरण दिए गए हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति भारतीय ज्योतिष एवं पाश्चात्य ज्योतिष का मिश्रण है जिसमें ज्योतिष के सभी महत्वपूर्ण शाखाओं से महत्वपूर्ण सिद्धांत लिए गए हैं। वर्तमान समय में यह ज्योतिष की सर्वाधिक सटीक एवं विशुद्ध पद्धति मानी जाती है जिसे सीखना तथा लागू करना बेहद आसान है। हिंदू शास्त्रीय ज्योतिष के विपरीत कृष्णमूर्ति पद्धति क्रमबद्ध एवं अच्छी तरह से परिभाषित है। कृष्णमूर्ति पद्धति के लाभ हेइ समें इस पद्धति से संबंधित आंकड़े यथा कस्पल चार्ट, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप स्वामी, उप उप स्वामी सभी ग्रहों के दिए गए हैं साथ ही निरयण भाव, भावों के कारक, कारक ग्रह आदि भी सम्मिलित किए गए हैं। इतना ही नहीं, इसमें दृष्टि युति, भाव मध्य आदि भी शुद्ध गणना के साथ दिए गए हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 3 मास 13 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	13:25:29	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शुक्र
चंद्र		मीन	21:55:55	गुरु	बुध	सूर्य	शनि
मंगल	व	मीन	17:46:43	गुरु	बुध	बुध	राहु
बुध		कन्या	05:26:25	बुध	सूर्य	बुध	केतु
गुरु		वृष	11:29:11	शुक्र	चंद्र	मंगल	शनि
शुक्र		मिथु	27:49:23	बुध	गुरु	शुक्र	गुरु
शनि	व	धनु	02:20:02	गुरु	केतु	शुक्र	शनि
राहु		कुंभ	20:29:17	शनि	गुरु	गुरु	शनि
केतु		सिंह	20:29:17	सूर्य	शुक्र	गुरु	शनि
हर्ष	व	धनु	03:27:54	गुरु	केतु	सूर्य	बुध
नेप	व	धनु	13:55:40	गुरु	शुक्र	शुक्र	चंद्र
प्लूटो		तुला	16:38:11	शुक्र	राहु	शुक्र	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	05:33:50	शुक्र	मंगल	चंद्र	चंद्र
2	वृश्चि	04:26:08	मंगल	शनि	शनि	शुक्र
3	धनु	05:14:48	गुरु	केतु	मंगल	बुध
4	मक	07:29:05	शनि	सूर्य	केतु	गुरु
5	कुंभ	09:40:44	शनि	राहु	गुरु	शुक्र
6	मीन	09:30:55	गुरु	शनि	शुक्र	गुरु
7	मेष	05:33:50	मंगल	केतु	राहु	राहु
8	वृष	04:26:08	शुक्र	सूर्य	शनि	मंगल
9	मिथु	05:14:48	बुध	मंगल	सूर्य	शनि
10	कर्क	07:29:05	चंद्र	शनि	केतु	शुक्र
11	सिंह	09:40:44	सूर्य	केतु	शनि	बुध
12	कन्या	09:30:55	बुध	सूर्य	शुक्र	शनि

के.पी. अयनांश : 23:35:43

फॉरच्युना : वृष 14:04:16

लग्न कुंडली

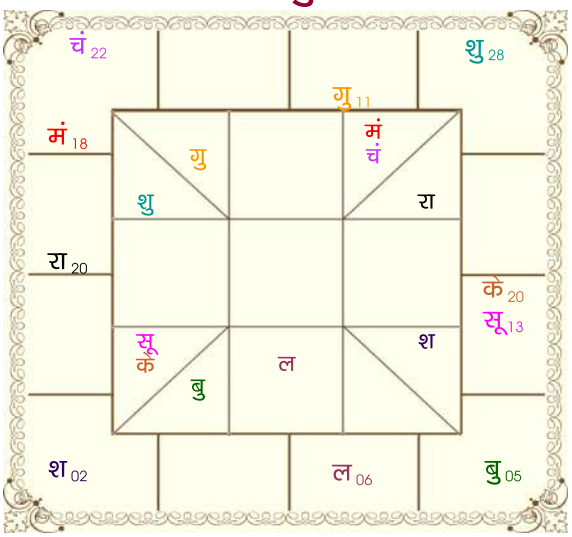

भाव कुंडली

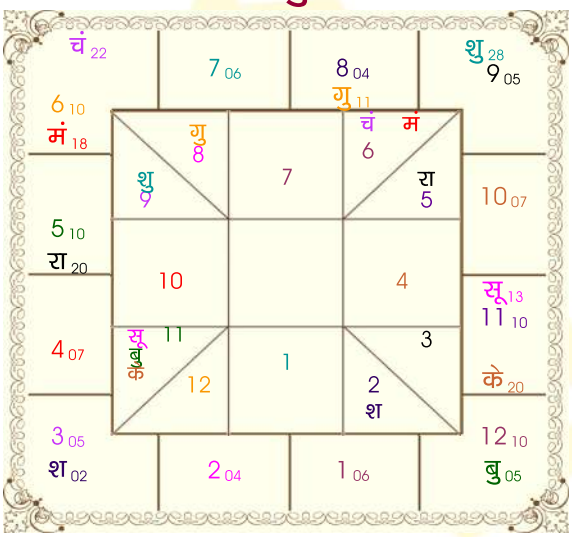

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- शुक्र- केतु-
2	मंगल- शनि,
3	गुरु- शुक्र- राहु-
4	शनि-
5	शनि- राहु,
6	चंद्र, मंगल, गुरु+ शुक्र- राहु-
7	मंगल-
8	सूर्य- गुरु, शुक्र+ राहु, केतु-
9	सूर्य, चंद्र- मंगल- बुध- शुक्र, केतु,
10	चंद्र- गुरु-
11	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध+ शनि, केतु,
12	चंद्र- मंगल- बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 8- 9, 11,
चंद्र	6, 9- 10- 11, 12-
मंगल	2- 6, 7- 9- 11, 12-
बुध	9- 11+ 12-
गुरु	3- 6+ 8, 10-
शुक्र	1- 3- 6- 8+ 9,
शनि	2, 4- 5- 11,
राहु	3- 5, 6- 8,
केतु	1- 8- 9, 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	चन्द्र
राशि अन्तर स्वामी	सूर्य

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	सू के	शु
2	--	श	--	मं
3	--	--	शु रा	गु
4	--	--	--	श
5	--	रा	--	श
6	गु	चं मं	शु रा	गु
7	--	--	--	मं
8	शु रा	गु	सू के	शु
9	सू के	शु	चं मं	बु
10	--	--	गु	चं
11	चं मं बु श	सू बु के	बु	सू
12	--	--	चं मं	बु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	11	4,8,12	सिंह	11
चंद्र	10	---	मीन	6
मंगल	2,7	1,9	मीन	6
बुध	9,12	---	कन्या	11
गुरु	3,6	---	वृष	8
शुक्र	1,8	---	मिथुन	9
शनि	4,5	2,6,10	धनु	2
राहु	---	5	कुम्भ	5
केतु	---	3,7,11	सिंह	11

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	1,8	---	9	1,8	---	9
चंद्र	9,12	---	11	11	4,8,12	11
मंगल	9,12	---	11	9,12	---	11
बुध	11	4,8,12	11	9,12	---	11
गुरु	10	---	6	2,7	1,9	6
शुक्र	3,6	---	8	1,8	---	9
शनि	---	3,7,11	11	1,8	---	9
राहु	3,6	---	8	3,6	---	8
केतु	1,8	---	9	3,6	---	8

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	133.32	351.83	347.67	155.34	41.38	87.72	242.23	320.38	140.38	243.36	253.82	196.53
सूर्य	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	युति	--	पंच	तृती
133.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.39	7.39	0.00	2.97	2.00
चंद्र	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	--	--	--	--
351.83	0.00	0.00	9.07	0.00	0.00	0.09	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	युति	--	सप्त	--	4था	--	--	--	--	--	8वां
347.67	0.00	9.07	0.00	2.75	0.00	4.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.93
बुध	--	--	सप्त	--	--	--	चतु	सप्त	युति	चतु	--	--
155.34	0.00	0.00	2.75	0.00	0.00	0.00	2.06	0.05	0.05	2.61	0.00	0.00
गुरु	चतु	--	--	5वां	--	--	--	--	--	--	--	--
41.38	2.62	0.00	0.00	8.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	अष्ट	--	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--
87.72	0.59	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.15	0.00
शनि	--	--	--	10वा	--	--	--	--	10वा	युति	युति	--
242.23	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00	0.00	0.00	0.00	3.24	9.93	3.49	0.00
राहु	सप्त	--	--	सप्त	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
320.38	7.39	0.00	0.00	0.05	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	युति	--	--	युति	--	--	--	सप्त	--	--	--	तृती
140.38	7.39	0.00	0.00	0.05	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	1.60
हर्ष	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	युति	--
243.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	4.57	0.00
नेप	--	--	चतु	--	--	सप्त	युति	--	--	युति	--	--
253.82	0.00	0.00	1.60	0.00	0.00	1.15	3.49	0.00	0.00	4.57	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	अष्ट	पंच	--	--	तृती	--
196.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.46	1.60	0.00	0.00	2.28	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	185.46	216.10	246.74	277.38	306.74	336.10	5.46	36.10	66.74	97.38	126.74	156.10
सूर्य	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
133.32	0.00	0.00	0.00	0.00	7.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.72	0.00
चंद्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	अष्ट	--	--	अष्टां	--
351.83	1.43	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.43	0.41	0.00	0.00	0.99	0.00
मंगल	8वां	--	--	--	--	युति	--	--	4था	--	--	सप्त
347.67	2.88	0.00	0.00	0.00	0.00	3.51	0.00	0.00	4.13	0.00	0.00	3.51
बुध	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
155.34	0.00	2.94	2.80	0.00	0.00	9.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.97
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
41.38	0.00	8.51	0.00	9.13	0.00	0.00	0.00	8.51	0.00	1.50	1.04	8.51
शुक्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--
87.72	0.00	0.00	0.00	5.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.30	0.03	0.00
शनि	--	--	युति	--	3रा	चतु	--	--	सप्त	--	--	10वा
242.23	0.00	0.00	8.90	0.00	8.90	1.59	0.00	0.00	8.90	0.00	0.00	9.19
राहु	--	--	--	--	युति	--	अष्ट	--	--	--	सप्त	--
320.38	0.00	0.00	0.00	0.00	1.42	0.00	0.99	0.00	0.00	0.00	1.42	0.00
केतु	अष्ट	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
140.38	0.99	0.00	0.00	0.00	1.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.42	0.00
हर्ष	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
243.36	0.00	0.00	9.38	0.00	1.90	2.26	2.56	0.00	9.38	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
253.82	0.00	0.00	7.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.37	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
196.53	4.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	185.46	214.33	245.14	277.38	309.57	339.41	5.46	34.33	65.14	97.38	129.57	159.41
सूर्य	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
133.32	0.00	0.00	0.00	0.00	9.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.24	0.00
चंद्र	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	--	--	--	--	सप्त
351.83	1.43	0.00	0.00	0.00	0.00	2.67	1.43	0.00	0.00	0.00	0.00	2.67
मंगल	8वां	--	--	--	--	युति	--	--	4था	--	--	सप्त
347.67	2.88	0.00	0.00	0.00	0.00	6.48	0.00	0.00	2.56	0.00	0.00	6.48
बुध	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
155.34	0.00	2.90	3.00	0.00	0.00	9.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.10
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
41.38	0.00	7.40	0.00	9.13	0.00	0.00	0.00	7.40	0.00	1.50	2.67	9.79
शुक्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	पंचा
87.72	0.00	0.00	0.00	5.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.30	0.00	0.89
शनि	--	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा
242.23	0.00	0.00	9.54	0.00	7.18	0.00	0.00	0.00	9.54	0.00	0.00	7.30
राहु	--	--	--	--	युति	--	अष्ट	--	--	--	सप्त	--
320.38	0.00	0.00	0.00	0.00	4.25	0.00	0.99	0.00	0.00	0.00	4.25	0.00
केतु	अष्ट	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
140.38	0.99	0.00	0.00	0.00	4.25	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.25	0.00
हर्ष	--	--	युति	--	--	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--
243.36	0.00	0.00	9.83	0.00	0.00	0.00	2.56	0.05	9.83	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--
253.82	0.00	0.00	6.14	0.00	1.33	1.21	0.00	0.00	6.14	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
196.53	4.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

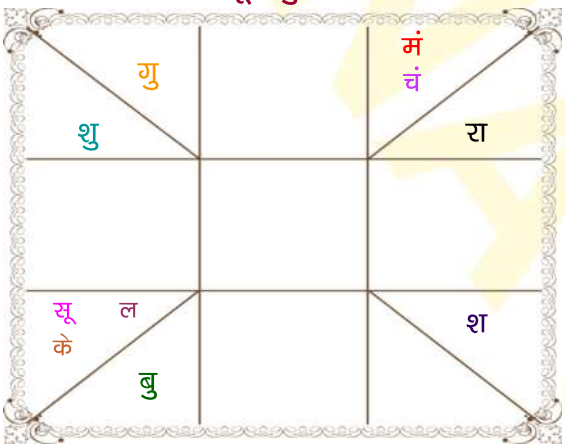

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

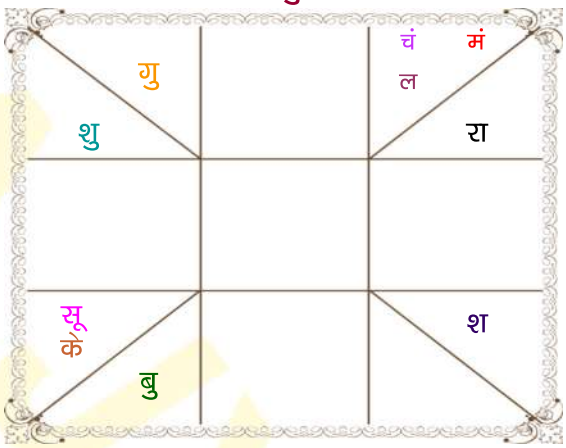

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

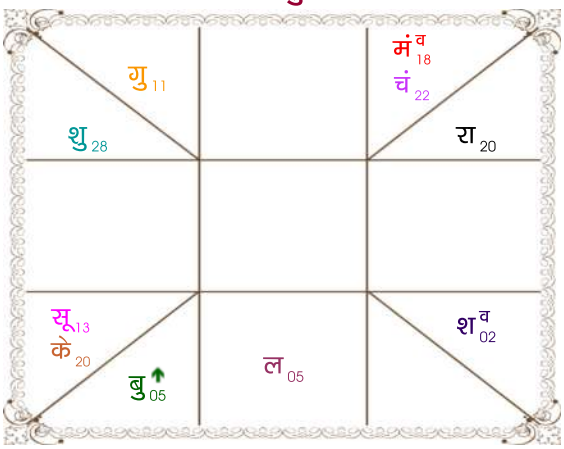

देह विचारः

होरा कुंडली

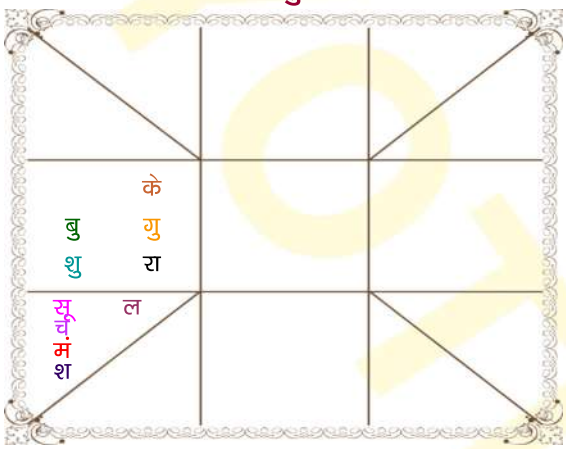

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

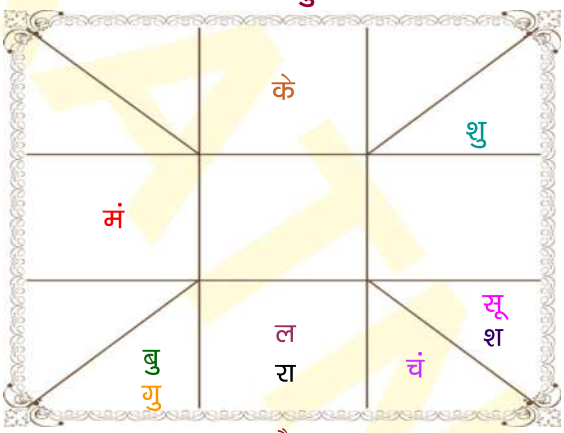

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

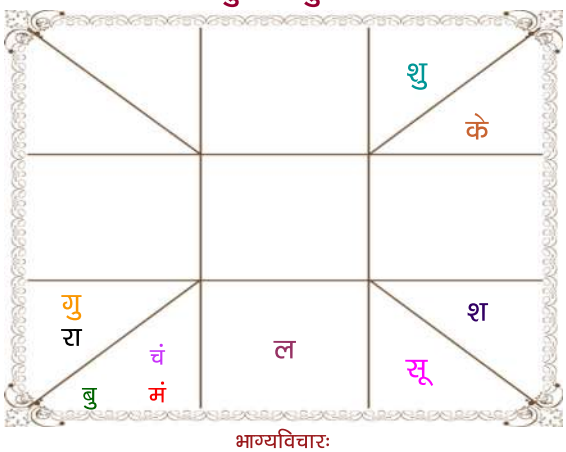

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

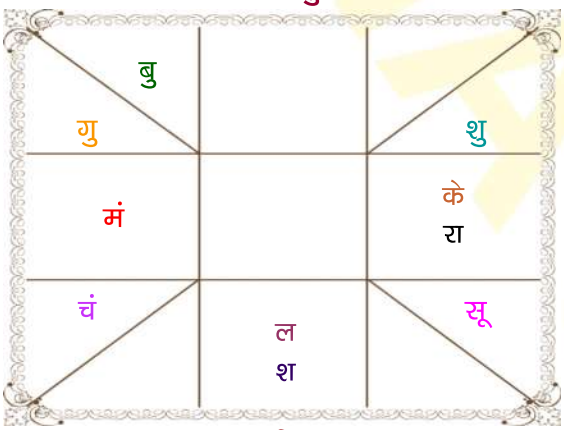

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

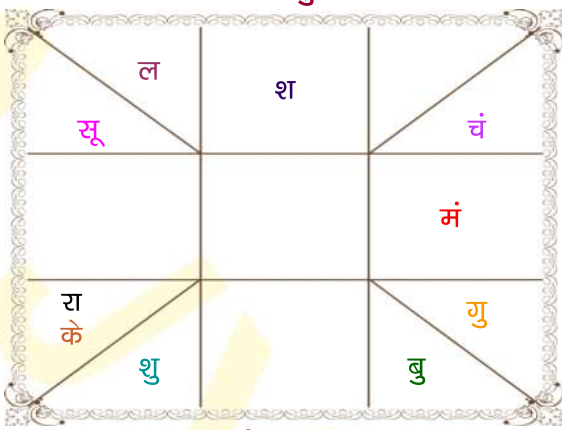

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

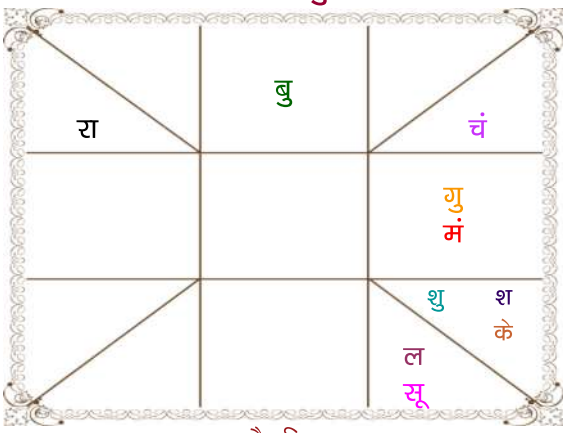

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

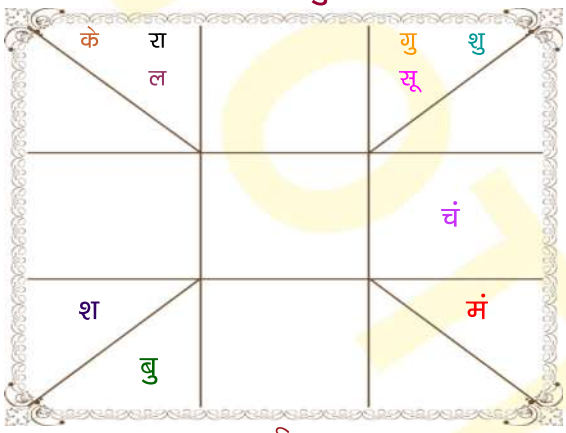

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

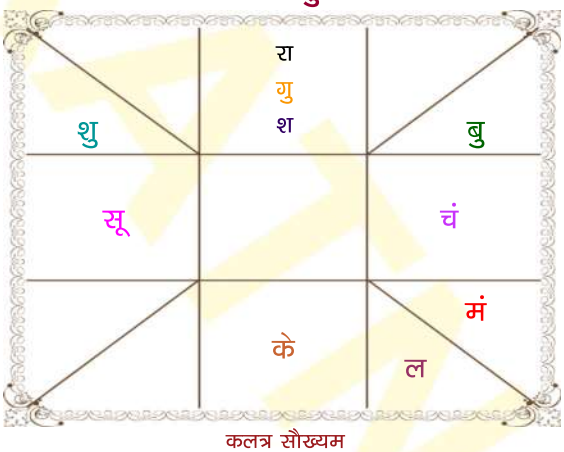

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

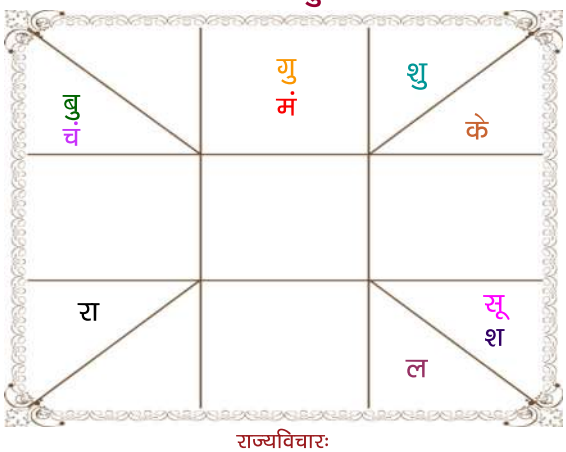

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

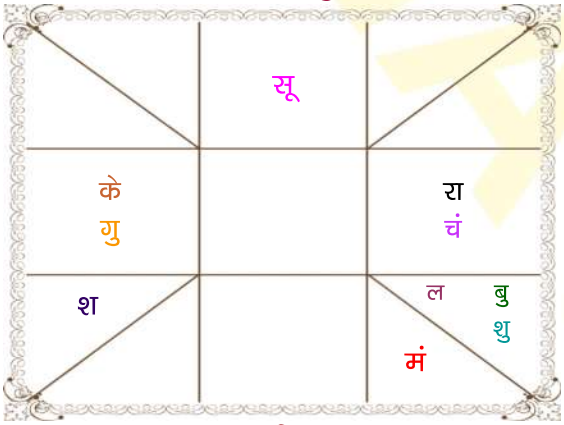

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

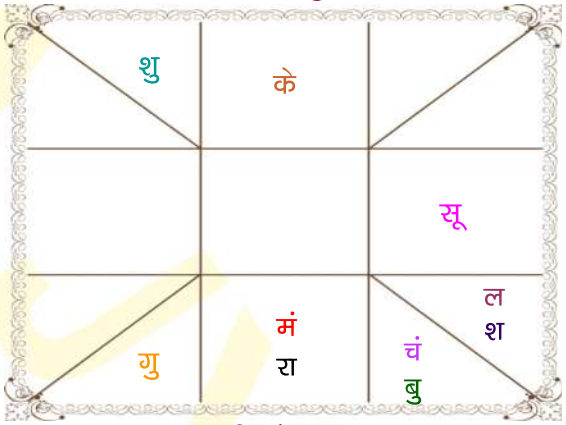

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

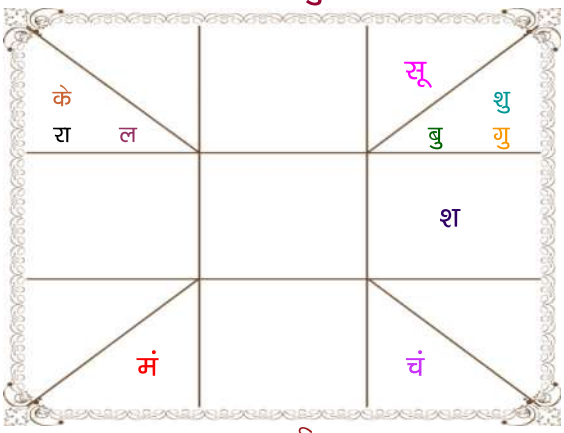

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

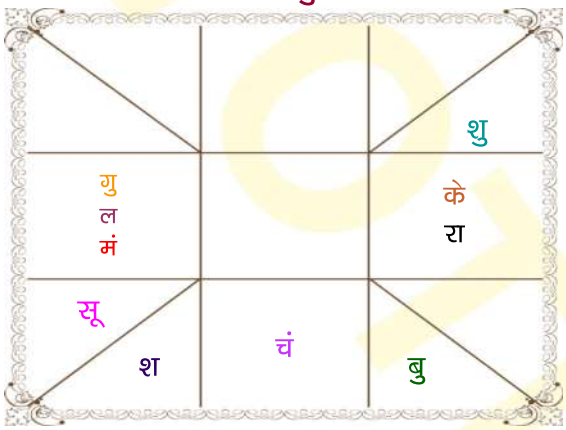

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

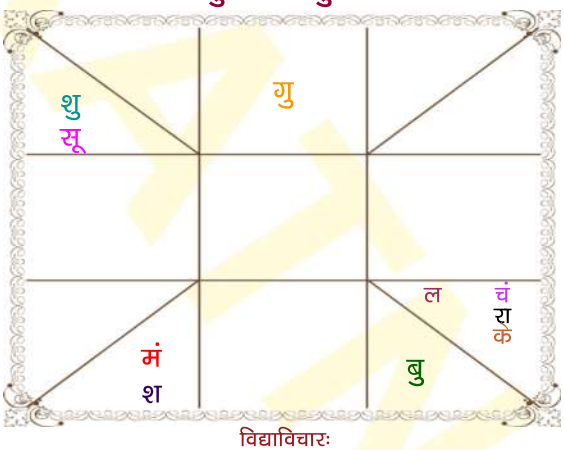

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

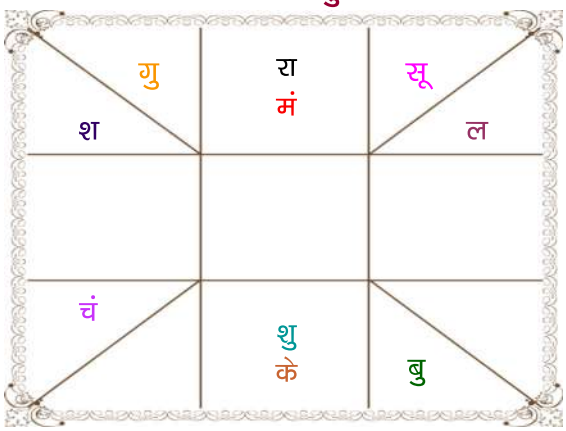

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

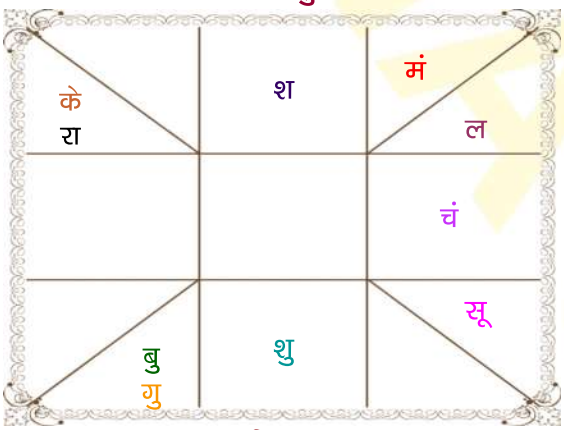

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

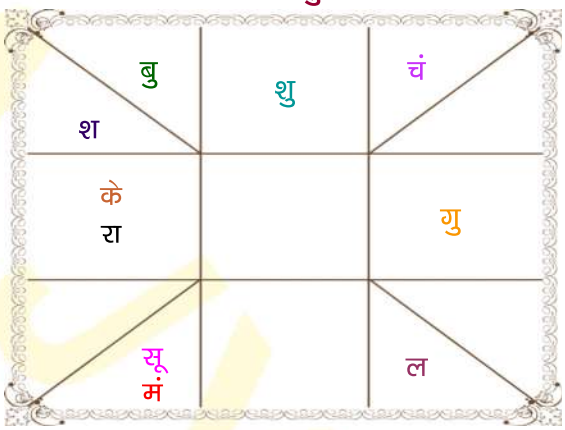

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

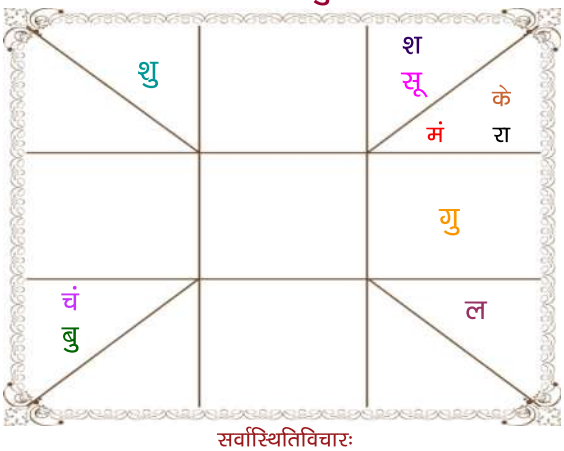

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

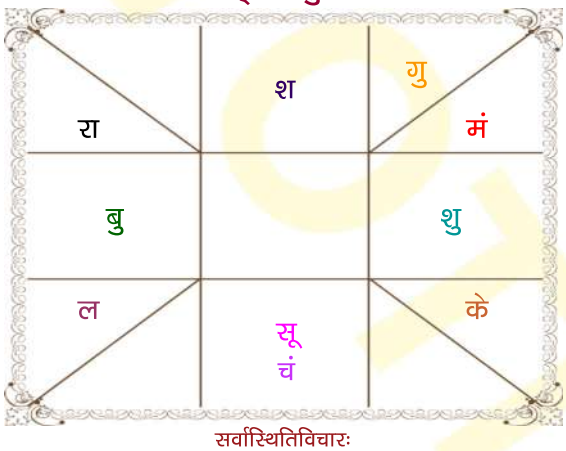

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	तुला	सिंह	मीन	मीन	कन्या	वृष	मिथु	धनु	कुंभ	सिंह
होरा	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	तुला	धनु	वृश्चि	कर्क	कन्या	कन्या	कुंभ	धनु	तुला	मेष
चतुर्थांश	तुला	वृश्चि	कन्या	कन्या	कन्या	सिंह	मीन	धनु	सिंह	कुंभ
सप्तमांश	वृश्चि	वृश्चि	कुंभ	मक	मेष	मक	धनु	धनु	मिथु	धनु
नवमांश	वृश्चि	कर्क	मक	धनु	कुंभ	मेष	मिथु	मेष	मेष	तुला
दशमांश	वृश्चि	धनु	मिथु	मेष	मिथु	मेष	मीन	धनु	सिंह	कुंभ
द्वादशांश	धनु	मक	वृश्चि	तुला	वृश्चि	कन्या	वृष	धनु	तुला	मेष
षोडशांश	मिथु	मीन	वृश्चि	कन्या	कुंभ	कुंभ	कुंभ	मक	मिथु	मिथु
विंशांश	कर्क	सिंह	तुला	कर्क	वृश्चि	कर्क	कुंभ	कन्या	मक	मक
चतुर्विंशांश	धनु	मिथु	धनु	कन्या	वृश्चि	मेष	मिथु	कन्या	धनु	धनु
सप्तविंशांश	कुंभ	मीन	सिंह	मेष	वृश्चि	वृष	तुला	मिथु	मेष	तुला
त्रिंशांश	कुंभ	धनु	मक	मीन	कन्या	कन्या	तुला	मेष	मिथु	मिथु
खवेदांश	वृश्चि	कन्या	मीन	कन्या	वृष	मक	मेष	मिथु	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	धनु	मीन	सिंह	कुंभ	सिंह	मक	वृष	मीन	कुंभ	कुंभ
षष्ट्यंश	सिंह	तुला	तुला	कुंभ	कर्क	मीन	मक	मेष	मिथु	धनु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
चन्द्र	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
मंगल	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
बुध	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
गुरु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
राहु	1 ---	2 किंसुक	4 गोपुर	4 नागपुष्प
केतु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	15.50	12.10	15.30	15.95	11.05	15.90	7.70	12.25	10.25
सप्तवर्ग	14.60	12.50	15.33	14.45	10.73	15.93	7.63	11.48	10.93
दशवर्ग	14.28	12.45	14.78	12.43	12.73	14.05	9.03	9.40	11.48
षोडशवर्ग	14.83	12.85	14.00	13.28	13.25	14.55	10.50	10.55	11.65

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	सम	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षड्बल और अष्टकवर्ग

जन्मकुंडली में ग्रहों एवं भावों के बिल्कुल सही बल को जानें।

किसी भी ग्रह के सही बल का निर्धारण भचक्र में उस ग्रह की स्थिति का विश्लेषण कर किया जाता है। ग्रहों की भिन्न-भिन्न स्थिति षड्बल के अलग-अलग शक्तियों को दर्शाते हैं। किसी ग्रह का बल अथवा उसकी कमजोरी का पता उसके षड्बल पर निर्भर करता है। षड्बल एवं भावबल सारणी को देखकर आप पता कर सकते हैं कि कौन सा ग्रह आपकी कुंडली में कितना मजबूत है। भावबल के द्वारा जन्मकुंडली के सभी 12 भावों के बल का ज्ञान होता है। इससे साफ निर्देश मिल जाता है कि जीवन के किस क्षेत्र में आप बलशाली हैं अथवा जीवन के किस पहलू में आपकी कमजोरी एवं असफलता छिपी हुई है।

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	19	46	43	57	42	30	46
सप्तवर्गज बल	137	75	113	129	62	135	32
ओजयुग्मक बल	15	30	15	15	15	0	30
केन्द्र बल	30	15	15	15	30	15	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	0	15	0
कुल स्थान बल	201	181	186	216	149	195	123
कुल दिग्बल	48	35	23	50	12	3	19
नतोन्नत बल	48	12	12	60	48	48	12
पक्ष बल	13	94	13	47	47	47	13
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	83	22	36	31	57	58	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	144	188	121	198	243	153	85
कुल चेष्टाबल	0	0	54	23	34	35	36
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	8	-2	-2	-3	-2	-12	17
कुल षट्बल	461	454	399	510	469	417	288
रूप षट्बल	7.7	7.6	6.7	8.5	7.8	7.0	4.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.3	1.3	1.2	1.2	1.3	1.0
संबंधित पद	1	4	2	5	6	3	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	26.67	46.72	48.36	36.35	37.58	32.39	40.74
कष्ट फल	30.30	13.27	10.10	10.88	21.75	27.35	18.33

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	417	399	469	288	288	469	399	417	510	454	461	510
भावदिग्बल	60	10	40	0	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	44	58	88	72	32	46	33	23	-2	-1	36	22
कुल भाव बल	521	467	597	360	340	555	462	480	528	454	547	582
रूप भाव बल	8.7	7.8	10.0	6.0	5.7	9.2	7.7	8.0	8.8	7.6	9.1	9.7
संबंधित पद	6	8	1	11	12	3	9	7	5	10	4	2

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

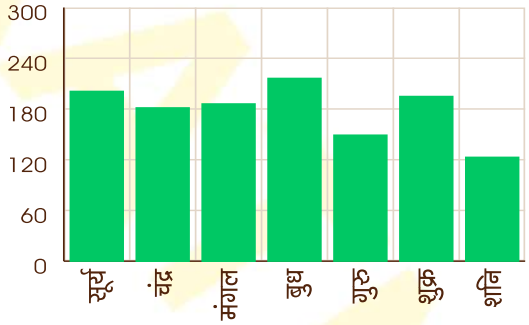

दिग्बल

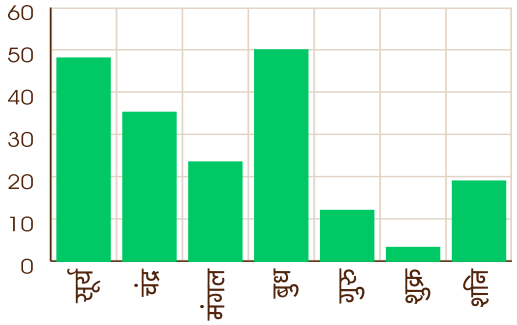

कालबल

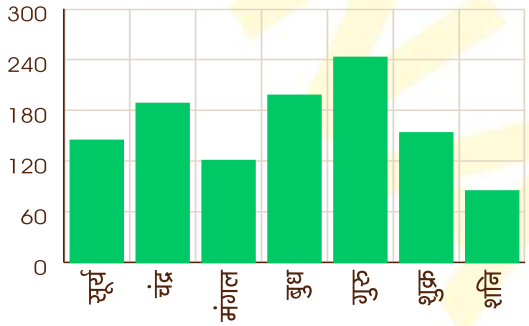

चेष्टाबल

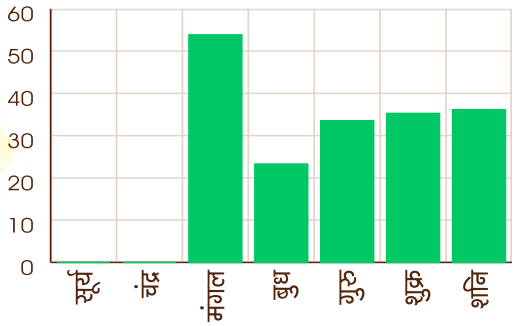

नैसर्गिक बल

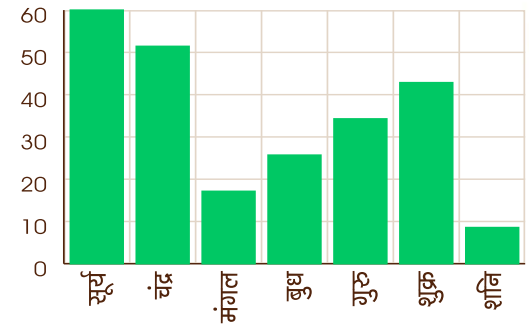

दृग्बल

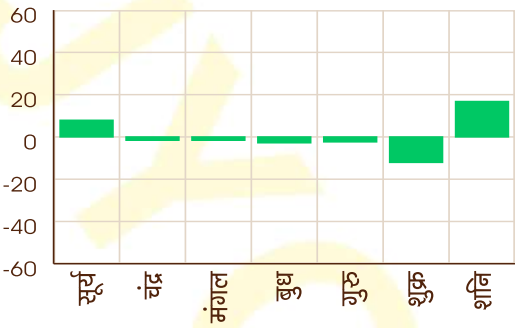

रूप षट्बल

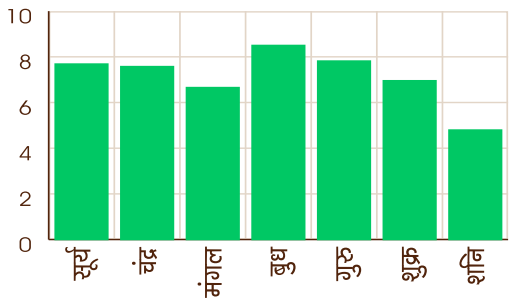

न्यूनतम षट्बल

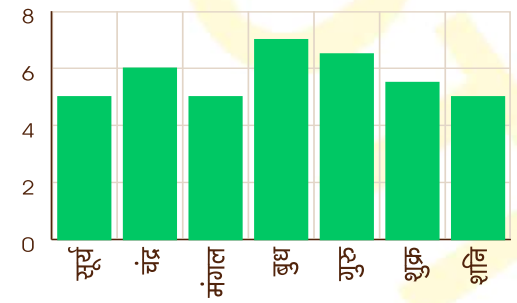

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

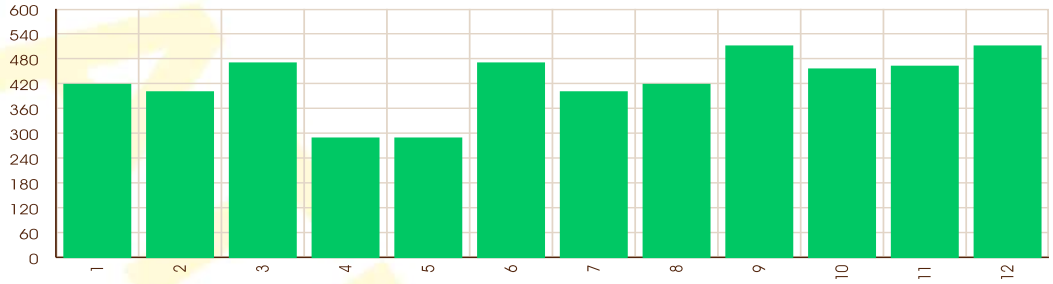

भावदिग्बल

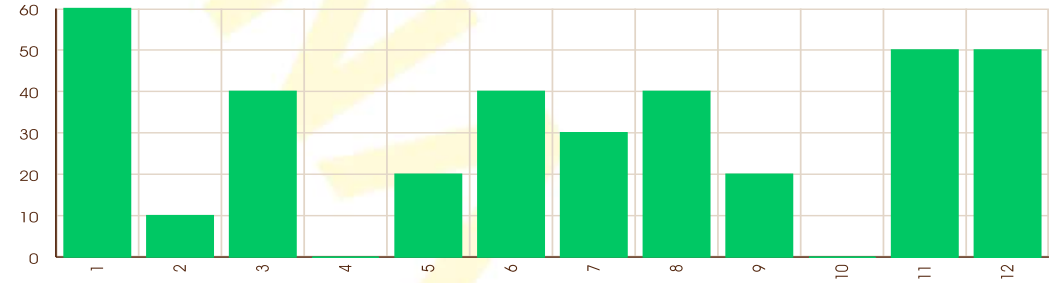

भावदृष्टि बल

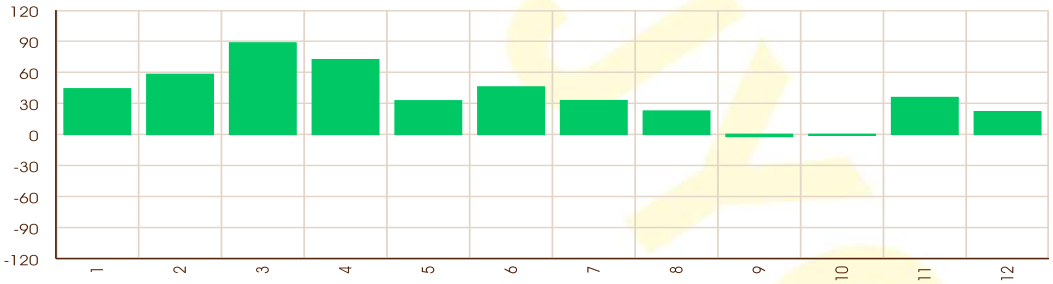

भाव बल

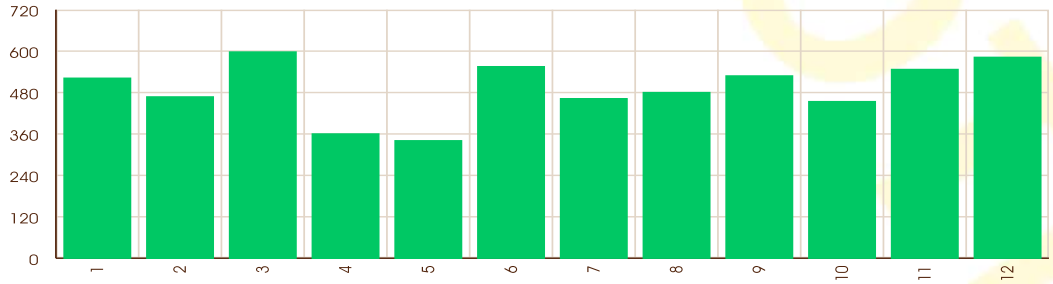

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

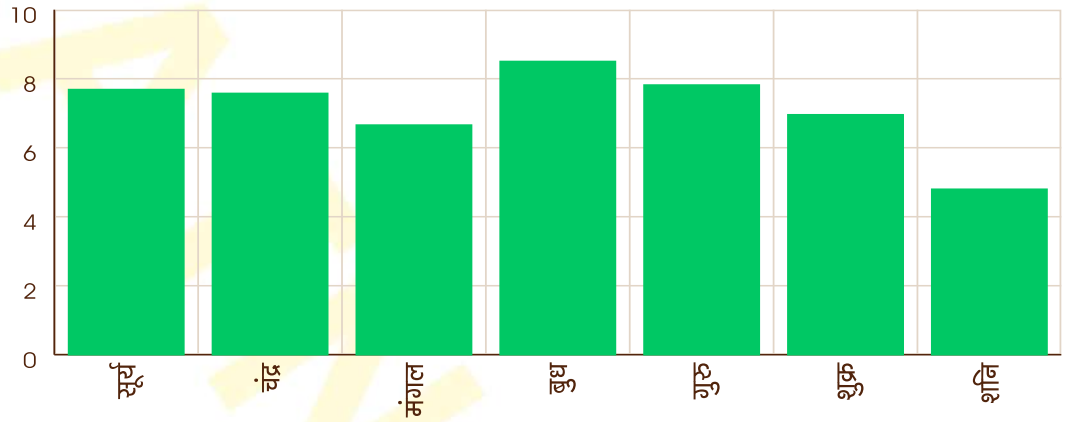

इष्ट - कष्ट फल

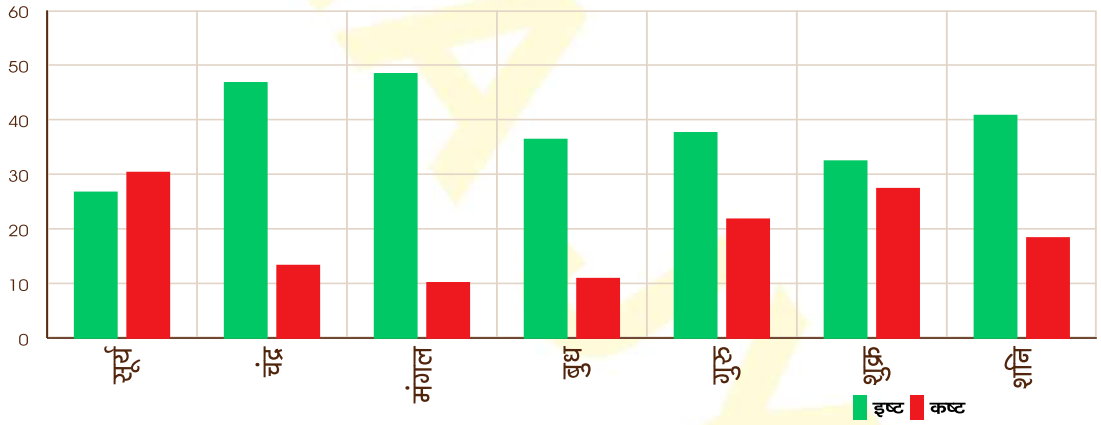

रूप भाव बल

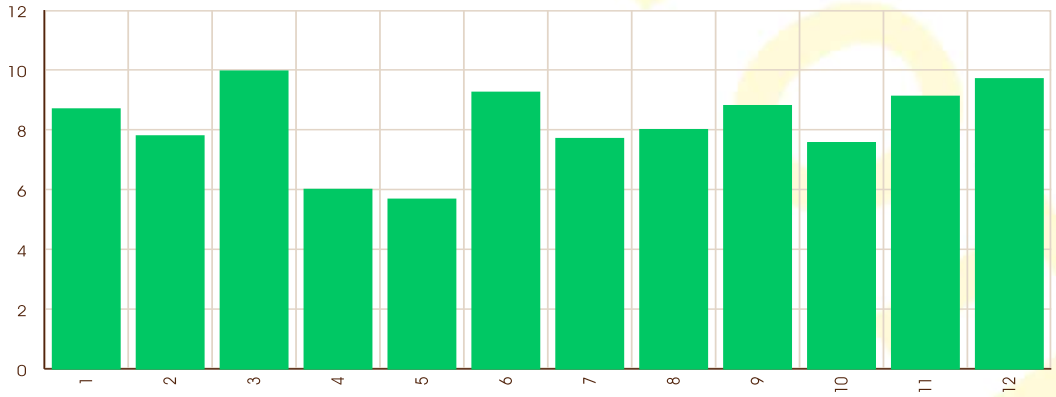

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	तुला	05:27:33	--	--	चित्रा	4	14
गुलिक	गु	वृश्चि	26:29:05	--	--	ज्येष्ठा	3	18
काल	का	धनु	18:42:24	--	--	पूर्वाषाढ़ा	2	20
मृत्यु	मृ	कन्या	03:23:47	--	--	उ०फाल्गुनी	3	12
यमघंटक	यम	तुला	15:31:29	--	--	स्वाति	3	15
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	24:43:59	--	--	चित्रा	1	14
धूम	धू	धनु	26:39:12	--	--	पूर्वाषाढ़ा	4	20
व्यतिपात	व्य	कर्क	03:20:48	--	--	पुष्य	1	8
परिवेश	परि	मक	03:20:48	--	--	उत्तराषाढ़ा	3	21
इन्द्रचाप	इ	मिथु	26:39:12	नीच	--	पुनर्वसु	2	7
उपकेतु	उप	कर्क	13:19:12	--	मूल	पुष्य	3	8

प्राणपद	:	सिंह	22:22:13	कारकाँश लग्न	:	मिथु	09:27:49
भाव लग्न	:	तुला	13:46:21	होरा लग्न	:	धनु	14:13:30
घटी लग्न	:	मिथु	15:34:57	वर्णद लग्न	:	मिथु	19:41:02

उपग्रह कुंडली

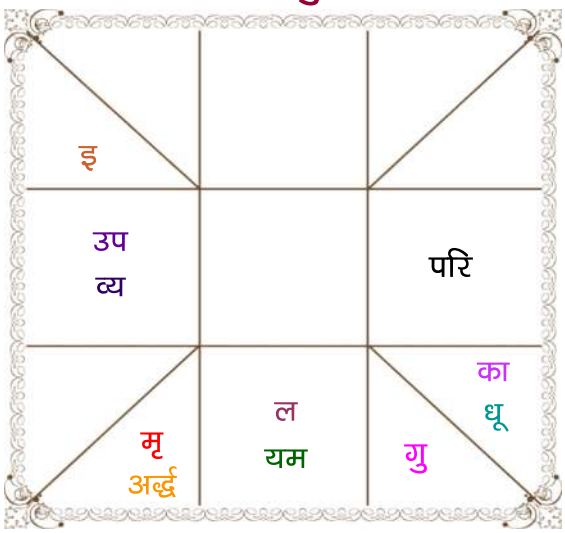

आरूढ़ कुंडली

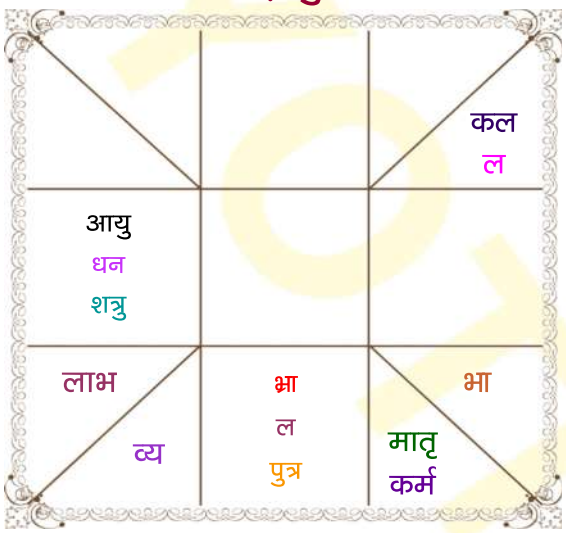

षन्नाडी चक्र

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	5	5	3	4	5	6	2	5	2	4	4	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	6
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	6	4	5	3	3	5	3	3	3	6	4	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
बुध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
कुल	4	3	3	3	3	3	2	5	2	4	5	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	4	6	3	5	7	2	4	5	2	6	5	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
शुक्र	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	6
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
कुल	4	5	5	3	4	5	6	3	4	6	5	6	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	5
चंद्र	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	9
लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
कुल	5	5	4	3	4	4	2	6	7	5	3	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	2	3	4	3	4	6	2	3	5	2	3	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	2	5	5	5	4	1	5	4	4	5	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	6	2	3	5	2	3	2	2	3	4	3	39
गुरु	6	4	5	5	3	4	5	6	3	4	6	5	56
मंगल	3	3	3	3	3	2	5	2	4	5	2	4	39
सूर्य	2	4	4	3	5	5	3	4	5	6	2	5	48
शुक्र	3	4	5	5	4	3	4	4	2	6	7	5	52
बुध	5	2	6	5	5	4	6	3	5	7	2	4	54
चंद्र	4	5	3	3	5	3	3	3	6	4	4	6	49
बिन्दु	27	28	28	27	30	23	29	24	27	35	27	32	337
रेखा	29	28	28	29	26	33	27	32	29	21	29	24	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	0	1	3	0	1	0	0	1	2	1	15
गुरु	3	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	5
मंगल	0	1	1	1	0	0	3	0	1	3	0	2	12
सूर्य	0	0	2	0	3	1	1	1	3	2	0	2	15
शुक्र	1	1	1	1	2	0	0	0	0	3	3	1	13
बुध	0	0	4	2	0	2	4	0	0	5	0	1	18
चंद्र	0	2	0	0	1	0	0	0	2	1	1	3	10
रेखा	6	8	8	5	9	3	9	2	6	15	7	10	88

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	0	1	3	0	0	0	0	1	1	1	13
गुरु	2	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	2	0	1	3	0	2	11
सूर्य	0	0	2	0	3	1	1	1	3	2	0	2	15
शुक्र	1	1	1	1	2	0	0	0	0	0	0	1	7
बुध	0	0	4	2	0	2	4	0	0	5	0	1	18
चंद्र	0	2	0	0	1	0	0	0	2	0	0	3	8
रेखा	5	8	8	5	9	3	7	2	6	11	2	10	76

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	127	84	84	115	33	61	116
ग्रह पिंड	75	74	48	51	0	40	68
शोध्य पिंड	202	158	132	166	33	101	184

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

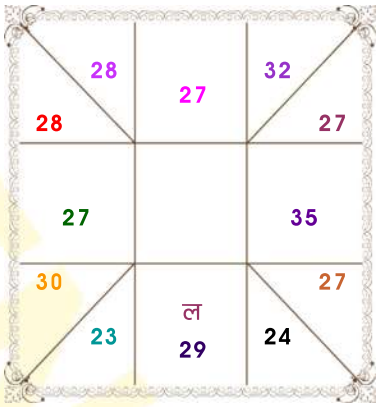

सूर्य का अष्टकवर्ग

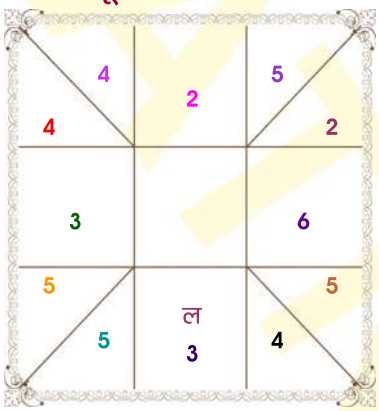

चंद्र का अष्टकवर्ग

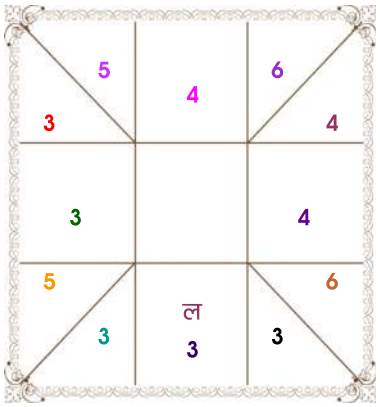

मंगल का अष्टकवर्ग

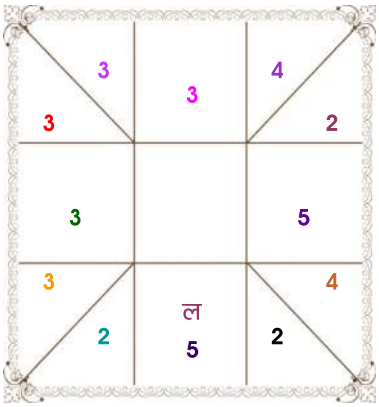

बुध का अष्टकवर्ग

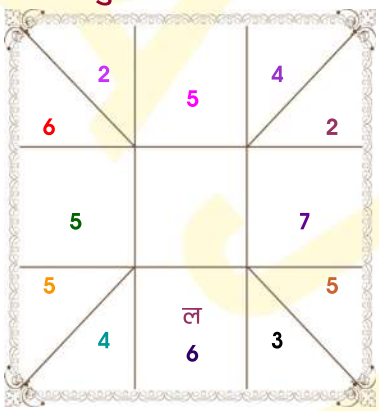

गुरू का अष्टकवर्ग

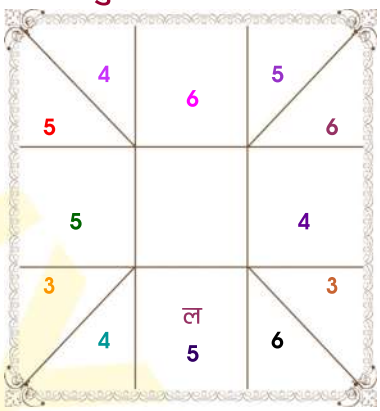

शुक्र का अष्टकवर्ग

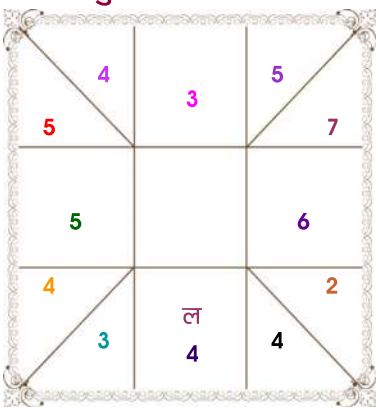

शनि का अष्टकवर्ग

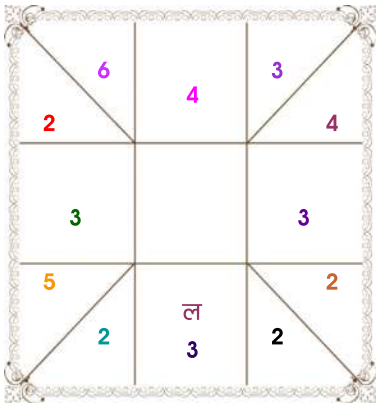

लग्न का अष्टकवर्ग

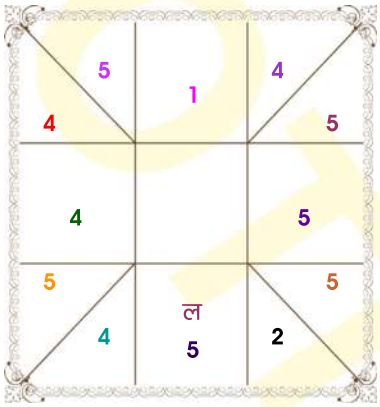

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

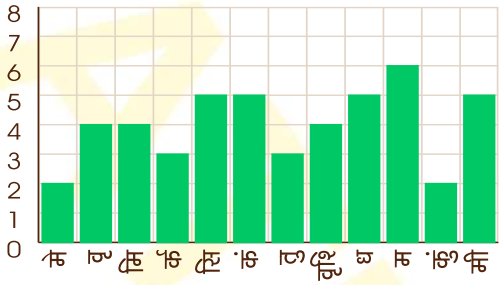

चन्द्र

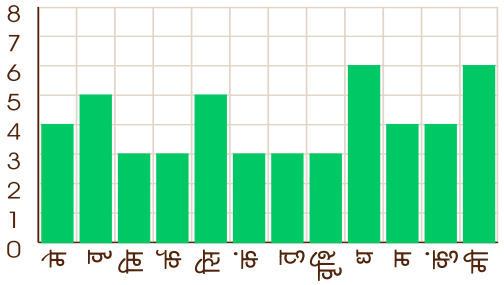

मंगल

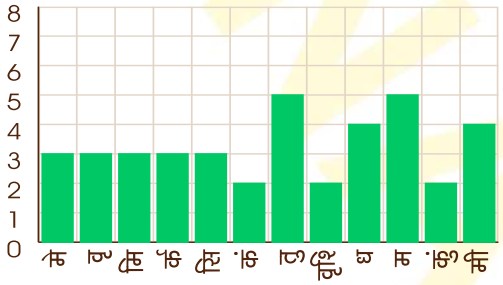

बुध

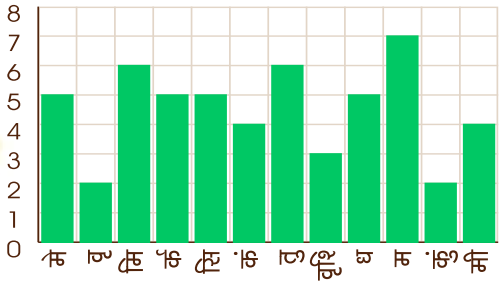

गुरु

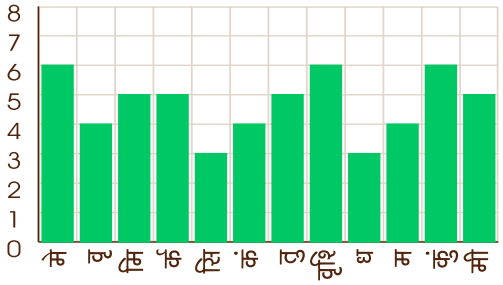

शुक्र

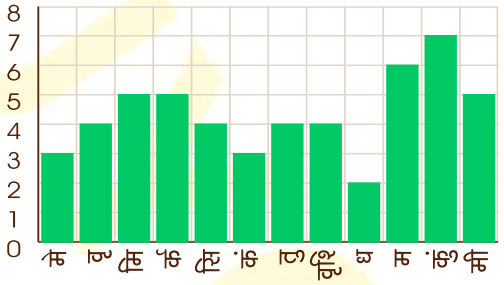

शनि

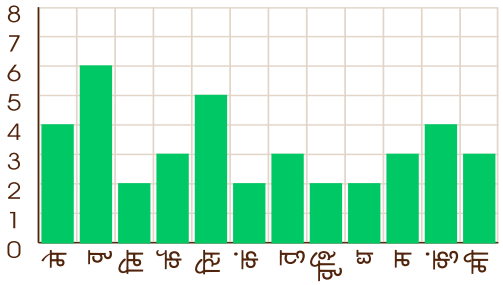

लग्न

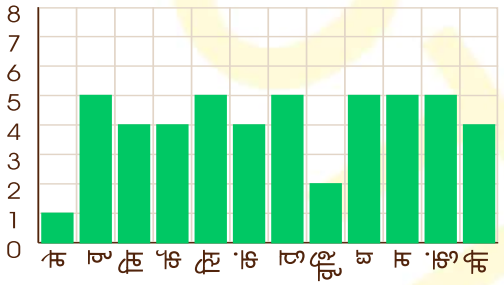

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

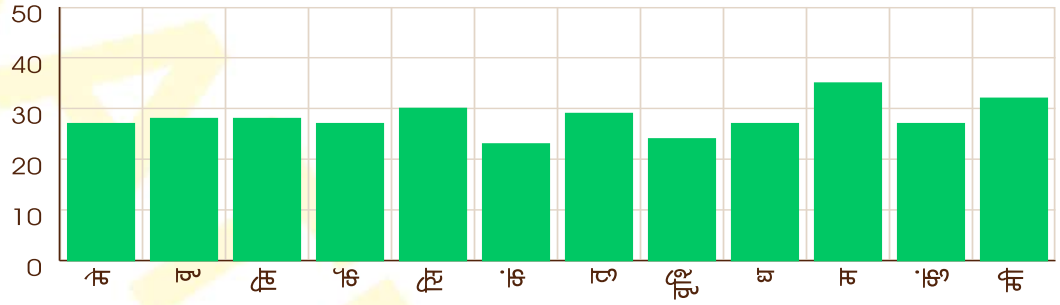

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

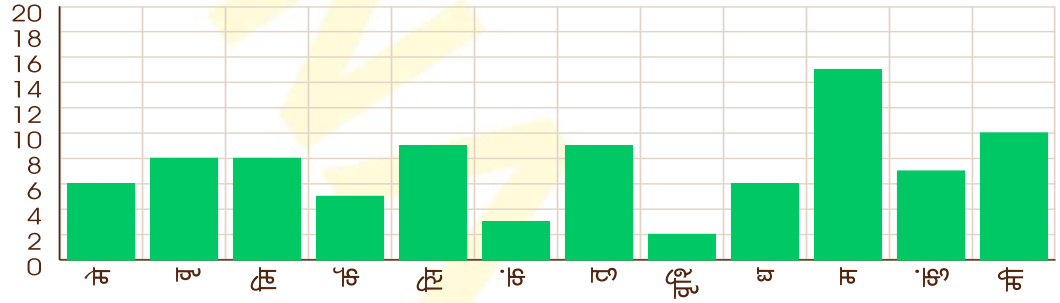

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

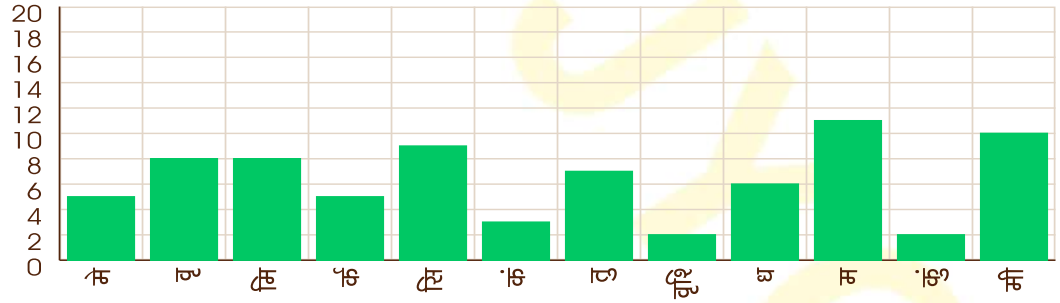

शोध्य पिंड

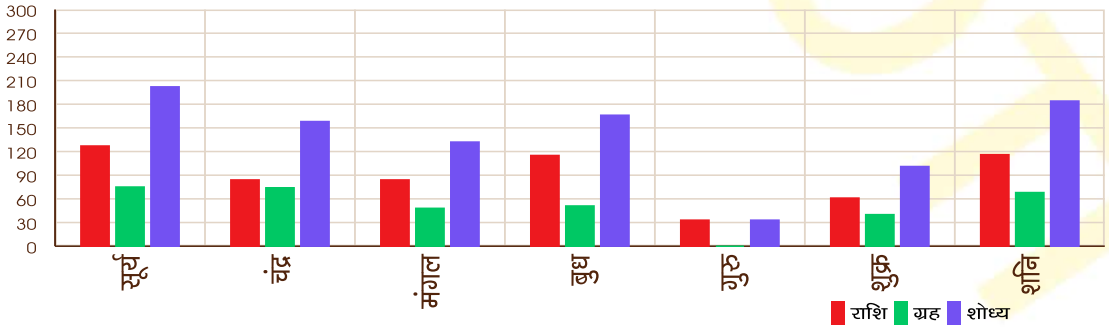

दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी या बुरी दशाओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे-बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा-अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्यान्य समस्याओं, पीड़ा जनित कष्ट, बाधा, असफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 5 मास 1 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
30/08/1988		31/01/1999		31/01/2006		31/01/2026		31/01/2032	
31/01/1999		31/01/2006		31/01/2026		31/01/2032		31/01/2042	
	00/00/0000	केतु	29/06/1999	शुक्र	01/06/2009	सूर्य	20/05/2026	चंद्र	01/12/2032
	00/00/0000	शुक्र	28/08/2000	सूर्य	01/06/2010	चंद्र	19/11/2026	मंगल	02/07/2033
	30/08/1988	सूर्य	03/01/2001	चंद्र	31/01/2012	मंगल	27/03/2027	राहु	31/12/2034
सूर्य	02/03/1989	चंद्र	04/08/2001	मंगल	01/04/2013	राहु	18/02/2028	गुरु	01/05/2036
चंद्र	01/08/1990	मंगल	31/12/2001	राहु	01/04/2016	गुरु	07/12/2028	शनि	01/12/2037
मंगल	30/07/1991	राहु	19/01/2003	गुरु	01/12/2018	शनि	19/11/2029	बुध	02/05/2039
राहु	15/02/1994	गुरु	26/12/2003	शनि	31/01/2022	बुध	25/09/2030	केतु	01/12/2039
गुरु	23/05/1996	शनि	02/02/2005	बुध	01/12/2024	केतु	31/01/2031	शुक्र	01/08/2041
शनि	31/01/1999	बुध	31/01/2006	केतु	31/01/2026	शुक्र	31/01/2032	सूर्य	31/01/2042

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
31/01/2042		30/01/2049		31/01/2067		31/01/2083		01/02/2102	
30/01/2049		31/01/2067		31/01/2083		01/02/2102		00/00/0000	
मंगल	29/06/2042	राहु	14/10/2051	गुरु	20/03/2069	शनि	03/02/2086	बुध	29/06/2104
राहु	17/07/2043	गुरु	08/03/2054	शनि	01/10/2071	बुध	13/10/2088	केतु	27/06/2105
गुरु	22/06/2044	शनि	12/01/2057	बुध	06/01/2074	केतु	22/11/2089	शुक्र	26/04/2108
शनि	01/08/2045	बुध	02/08/2059	केतु	13/12/2074	शुक्र	21/01/2093	सूर्य	31/08/2108
बुध	29/07/2046	केतु	19/08/2060	शुक्र	13/08/2077	सूर्य	03/01/2094		00/00/0000
केतु	25/12/2046	शुक्र	20/08/2063	सूर्य	01/06/2078	चंद्र	05/08/2095		00/00/0000
शुक्र	25/02/2048	सूर्य	14/07/2064	चंद्र	01/10/2079	मंगल	12/09/2096		00/00/0000
सूर्य	01/07/2048	चंद्र	12/01/2066	मंगल	06/09/2080	राहु	20/07/2099		00/00/0000
चंद्र	30/01/2049	मंगल	31/01/2067	राहु	31/01/2083	गुरु	01/02/2102		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 10 वर्ष 5 मा 17 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य	
30/08/1988	
02/03/1989	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	30/08/1988
गुरु	20/09/1988
शनि	08/11/1988
बुध	22/12/1988
केतु	09/01/1989
शुक्र	02/03/1989

बुध - चंद्र	
02/03/1989	
01/08/1990	
चंद्र	14/04/1989
मंगल	14/05/1989
राहु	31/07/1989
गुरु	08/10/1989
शनि	29/12/1989
बुध	12/03/1990
केतु	11/04/1990
शुक्र	06/07/1990
सूर्य	01/08/1990

बुध - मंगल	
01/08/1990	
30/07/1991	
मंगल	22/08/1990
राहु	16/10/1990
गुरु	03/12/1990
शनि	29/01/1991
बुध	22/03/1991
केतु	12/04/1991
शुक्र	11/06/1991
सूर्य	29/06/1991
चंद्र	30/07/1991

बुध - राहु	
30/07/1991	
15/02/1994	
राहु	16/12/1991
गुरु	18/04/1992
शनि	13/09/1992
बुध	23/01/1993
केतु	18/03/1993
शुक्र	20/08/1993
सूर्य	06/10/1993
चंद्र	23/12/1993
मंगल	15/02/1994

बुध - गुरु	
15/02/1994	
23/05/1996	
गुरु	05/06/1994
शनि	14/10/1994
बुध	09/02/1995
केतु	29/03/1995
शुक्र	14/08/1995
सूर्य	24/09/1995
चंद्र	02/12/1995
मंगल	20/01/1996
राहु	23/05/1996

बुध - शनि	
23/05/1996	
31/01/1999	
शनि	25/10/1996
बुध	14/03/1997
केतु	10/05/1997
शुक्र	21/10/1997
सूर्य	09/12/1997
चंद्र	01/03/1998
मंगल	27/04/1998
राहु	22/09/1998
गुरु	31/01/1999

केतु - केतु	
31/01/1999	
29/06/1999	
केतु	09/02/1999
शुक्र	05/03/1999
सूर्य	13/03/1999
चंद्र	25/03/1999
मंगल	03/04/1999
राहु	25/04/1999
गुरु	15/05/1999
शनि	08/06/1999
बुध	29/06/1999

केतु - शुक्र	
29/06/1999	
28/08/2000	
शुक्र	08/09/1999
सूर्य	29/09/1999
चंद्र	04/11/1999
मंगल	29/11/1999
राहु	01/02/2000
गुरु	28/03/2000
शनि	04/06/2000
बुध	03/08/2000
केतु	28/08/2000

केतु - सूर्य	
28/08/2000	
03/01/2001	
सूर्य	04/09/2000
चंद्र	14/09/2000
मंगल	22/09/2000
राहु	11/10/2000
गुरु	28/10/2000
शनि	17/11/2000
बुध	05/12/2000
केतु	13/12/2000
शुक्र	03/01/2001

केतु - चंद्र	
03/01/2001	
04/08/2001	
चंद्र	21/01/2001
मंगल	02/02/2001
राहु	06/03/2001
गुरु	04/04/2001
शनि	07/05/2001
बुध	06/06/2001
केतु	19/06/2001
शुक्र	24/07/2001
सूर्य	04/08/2001

केतु - मंगल	
04/08/2001	
31/12/2001	
मंगल	13/08/2001
राहु	04/09/2001
गुरु	24/09/2001
शनि	18/10/2001
बुध	08/11/2001
केतु	16/11/2001
शुक्र	11/12/2001
सूर्य	19/12/2001
चंद्र	31/12/2001

केतु - राहु	
31/12/2001	
19/01/2003	
राहु	27/02/2002
गुरु	19/04/2002
शनि	19/06/2002
बुध	12/08/2002
केतु	03/09/2002
शुक्र	06/11/2002
सूर्य	25/11/2002
चंद्र	27/12/2002
मंगल	19/01/2003

केतु - गुरु	
19/01/2003	
26/12/2003	
गुरु	05/03/2003
शनि	28/04/2003
बुध	15/06/2003
केतु	05/07/2003
शुक्र	31/08/2003
सूर्य	17/09/2003
चंद्र	16/10/2003
मंगल	05/11/2003
राहु	26/12/2003

केतु - शनि	
26/12/2003	
02/02/2005	
शनि	28/02/2004
बुध	25/04/2004
केतु	19/05/2004
शुक्र	25/07/2004
सूर्य	14/08/2004
चंद्र	17/09/2004
मंगल	11/10/2004
राहु	10/12/2004
गुरु	02/02/2005

केतु - बुध	
02/02/2005	
31/01/2006	
बुध	26/03/2005
केतु	16/04/2005
शुक्र	15/06/2005
सूर्य	03/07/2005
चंद्र	03/08/2005
मंगल	24/08/2005
राहु	17/10/2005
गुरु	04/12/2005
शनि	31/01/2006

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
31/01/2006		01/06/2009		01/06/2010		31/01/2012		01/04/2013	
01/06/2009		01/06/2010		31/01/2012		01/04/2013		01/04/2016	
शुक्र	22/08/2006	सूर्य	19/06/2009	चंद्र	22/07/2010	मंगल	25/02/2012	राहु	13/09/2013
सूर्य	21/10/2006	चंद्र	20/07/2009	मंगल	27/08/2010	राहु	29/04/2012	गुरु	06/02/2014
चंद्र	31/01/2007	मंगल	10/08/2009	राहु	26/11/2010	गुरु	25/06/2012	शनि	29/07/2014
मंगल	12/04/2007	राहु	04/10/2009	गुरु	15/02/2011	शनि	31/08/2012	बुध	31/12/2014
राहु	12/10/2007	गुरु	22/11/2009	शनि	23/05/2011	बुध	31/10/2012	केतु	05/03/2015
गुरु	22/03/2008	शनि	18/01/2010	बुध	17/08/2011	केतु	24/11/2012	शुक्र	04/09/2015
शनि	01/10/2008	बुध	11/03/2010	केतु	21/09/2011	शुक्र	03/02/2013	सूर्य	29/10/2015
बुध	22/03/2009	केतु	02/04/2010	शुक्र	01/01/2012	सूर्य	25/02/2013	चंद्र	28/01/2016
केतु	01/06/2009	शुक्र	01/06/2010	सूर्य	31/01/2012	चंद्र	01/04/2013	मंगल	01/04/2016

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
01/04/2016		01/12/2018		31/01/2022		01/12/2024		31/01/2026	
01/12/2018		31/01/2022		01/12/2024		31/01/2026		20/05/2026	
गुरु	09/08/2016	शनि	02/06/2019	बुध	26/06/2022	केतु	25/12/2024	सूर्य	05/02/2026
शनि	10/01/2017	बुध	13/11/2019	केतु	26/08/2022	शुक्र	06/03/2025	चंद्र	14/02/2026
बुध	28/05/2017	केतु	20/01/2020	शुक्र	14/02/2023	सूर्य	28/03/2025	मंगल	21/02/2026
केतु	24/07/2017	शुक्र	30/07/2020	सूर्य	07/04/2023	चंद्र	02/05/2025	राहु	09/03/2026
शुक्र	02/01/2018	सूर्य	26/09/2020	चंद्र	02/07/2023	मंगल	27/05/2025	गुरु	24/03/2026
सूर्य	20/02/2018	चंद्र	31/12/2020	मंगल	31/08/2023	राहु	30/07/2025	शनि	10/04/2026
चंद्र	12/05/2018	मंगल	09/03/2021	राहु	03/02/2024	गुरु	25/09/2025	बुध	26/04/2026
मंगल	08/07/2018	राहु	29/08/2021	गुरु	20/06/2024	शनि	01/12/2025	केतु	02/05/2026
राहु	01/12/2018	गुरु	31/01/2022	शनि	01/12/2024	बुध	31/01/2026	शुक्र	20/05/2026

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
20/05/2026		19/11/2026		27/03/2027		18/02/2028		07/12/2028	
19/11/2026		27/03/2027		18/02/2028		07/12/2028		19/11/2029	
चंद्र	04/06/2026	मंगल	26/11/2026	राहु	15/05/2027	गुरु	28/03/2028	शनि	31/01/2029
मंगल	15/06/2026	राहु	16/12/2026	गुरु	28/06/2027	शनि	14/05/2028	बुध	21/03/2029
राहु	13/07/2026	गुरु	02/01/2027	शनि	19/08/2027	बुध	24/06/2028	केतु	10/04/2029
गुरु	06/08/2026	शनि	22/01/2027	बुध	04/10/2027	केतु	11/07/2028	शुक्र	07/06/2029
शनि	04/09/2026	बुध	09/02/2027	केतु	24/10/2027	शुक्र	29/08/2028	सूर्य	24/06/2029
बुध	30/09/2026	केतु	16/02/2027	शुक्र	17/12/2027	सूर्य	12/09/2028	चंद्र	23/07/2029
केतु	10/10/2026	शुक्र	10/03/2027	सूर्य	03/01/2028	चंद्र	07/10/2028	मंगल	12/08/2029
शुक्र	10/11/2026	सूर्य	16/03/2027	चंद्र	30/01/2028	मंगल	24/10/2028	राहु	03/10/2029
सूर्य	19/11/2026	चंद्र	27/03/2027	मंगल	18/02/2028	राहु	07/12/2028	गुरु	19/11/2029

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
19/11/2029		25/09/2030		31/01/2031		31/01/2032		01/12/2032	
25/09/2030		31/01/2031		31/01/2032		01/12/2032		02/07/2033	
बुध	02/01/2030	केतु	03/10/2030	शुक्र	02/04/2031	चंद्र	26/02/2032	मंगल	13/12/2032
केतु	20/01/2030	शुक्र	24/10/2030	सूर्य	20/04/2031	मंगल	14/03/2032	राहु	14/01/2033
शुक्र	12/03/2030	सूर्य	30/10/2030	चंद्र	20/05/2031	राहु	29/04/2032	गुरु	11/02/2033
सूर्य	28/03/2030	चंद्र	10/11/2030	मंगल	11/06/2031	गुरु	09/06/2032	शनि	17/03/2033
चंद्र	23/04/2030	मंगल	17/11/2030	राहु	05/08/2031	शनि	27/07/2032	बुध	16/04/2033
मंगल	11/05/2030	राहु	07/12/2030	गुरु	22/09/2031	बुध	08/09/2032	केतु	29/04/2033
राहु	27/06/2030	गुरु	24/12/2030	शनि	19/11/2031	केतु	26/09/2032	शुक्र	03/06/2033
गुरु	07/08/2030	शनि	13/01/2031	बुध	10/01/2032	शुक्र	15/11/2032	सूर्य	14/06/2033
शनि	25/09/2030	बुध	31/01/2031	केतु	31/01/2032	सूर्य	01/12/2032	चंद्र	02/07/2033

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
02/07/2033		31/12/2034		01/05/2036		01/12/2037		02/05/2039	
31/12/2034		01/05/2036		01/12/2037		02/05/2039		01/12/2039	
राहु	22/09/2033	गुरु	06/03/2035	शनि	01/08/2036	बुध	12/02/2038	केतु	15/05/2039
गुरु	04/12/2033	शनि	23/05/2035	बुध	22/10/2036	केतु	14/03/2038	शुक्र	19/06/2039
शनि	01/03/2034	बुध	31/07/2035	केतु	25/11/2036	शुक्र	09/06/2038	सूर्य	30/06/2039
बुध	17/05/2034	केतु	28/08/2035	शुक्र	01/03/2037	सूर्य	04/07/2038	चंद्र	18/07/2039
केतु	18/06/2034	शुक्र	17/11/2035	सूर्य	30/03/2037	चंद्र	17/08/2038	मंगल	30/07/2039
शुक्र	17/09/2034	सूर्य	11/12/2035	चंद्र	17/05/2037	मंगल	16/09/2038	राहु	31/08/2039
सूर्य	15/10/2034	चंद्र	21/01/2036	मंगल	20/06/2037	राहु	02/12/2038	गुरु	28/09/2039
चंद्र	30/11/2034	मंगल	18/02/2036	राहु	15/09/2037	गुरु	09/02/2039	शनि	01/11/2039
मंगल	31/12/2034	राहु	01/05/2036	गुरु	01/12/2037	शनि	02/05/2039	बुध	01/12/2039

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
01/12/2039		01/08/2041		31/01/2042		29/06/2042		17/07/2043	
01/08/2041		31/01/2042		29/06/2042		17/07/2043		22/06/2044	
शुक्र	12/03/2040	सूर्य	10/08/2041	मंगल	08/02/2042	राहु	25/08/2042	गुरु	01/09/2043
सूर्य	11/04/2040	चंद्र	25/08/2041	राहु	03/03/2042	गुरु	15/10/2042	शनि	25/10/2043
चंद्र	01/06/2040	मंगल	05/09/2041	गुरु	23/03/2042	शनि	15/12/2042	बुध	12/12/2043
मंगल	06/07/2040	राहु	02/10/2041	शनि	15/04/2042	बुध	08/02/2043	केतु	01/01/2044
राहु	06/10/2040	गुरु	27/10/2041	बुध	06/05/2042	केतु	02/03/2043	शुक्र	27/02/2044
गुरु	26/12/2040	शनि	25/11/2041	केतु	15/05/2042	शुक्र	05/05/2043	सूर्य	15/03/2044
शनि	01/04/2041	बुध	21/12/2041	शुक्र	09/06/2042	सूर्य	24/05/2043	चंद्र	12/04/2044
बुध	27/06/2041	केतु	31/12/2041	सूर्य	16/06/2042	चंद्र	25/06/2043	मंगल	02/05/2044
केतु	01/08/2041	शुक्र	31/01/2042	चंद्र	29/06/2042	मंगल	17/07/2043	राहु	22/06/2044

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
22/06/2044		01/08/2045		29/07/2046		25/12/2046		25/02/2048	
01/08/2045		29/07/2046		25/12/2046		25/02/2048		01/07/2048	
शनि	25/08/2044	बुध	21/09/2045	केतु	07/08/2046	शुक्र	06/03/2047	सूर्य	02/03/2048
बुध	22/10/2044	केतु	12/10/2045	शुक्र	01/09/2046	सूर्य	28/03/2047	चंद्र	13/03/2048
केतु	14/11/2044	शुक्र	12/12/2045	सूर्य	08/09/2046	चंद्र	02/05/2047	मंगल	20/03/2048
शुक्र	21/01/2045	सूर्य	30/12/2045	चंद्र	21/09/2046	मंगल	27/05/2047	राहु	08/04/2048
सूर्य	10/02/2045	चंद्र	29/01/2046	मंगल	29/09/2046	राहु	30/07/2047	गुरु	25/04/2048
चंद्र	16/03/2045	मंगल	19/02/2046	राहु	22/10/2046	गुरु	25/09/2047	शनि	15/05/2048
मंगल	08/04/2045	राहु	15/04/2046	गुरु	11/11/2046	शनि	01/12/2047	बुध	03/06/2048
राहु	08/06/2045	गुरु	02/06/2046	शनि	04/12/2046	बुध	31/01/2048	केतु	10/06/2048
गुरु	01/08/2045	शनि	29/07/2046	बुध	25/12/2046	केतु	25/02/2048	शुक्र	01/07/2048

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
01/07/2048		30/01/2049		14/10/2051		08/03/2054		12/01/2057	
30/01/2049		14/10/2051		08/03/2054		12/01/2057		02/08/2059	
चंद्र	19/07/2048	राहु	27/06/2049	गुरु	07/02/2052	शनि	20/08/2054	बुध	24/05/2057
मंगल	01/08/2048	गुरु	06/11/2049	शनि	25/06/2052	बुध	14/01/2055	केतु	17/07/2057
राहु	02/09/2048	शनि	11/04/2050	बुध	27/10/2052	केतु	16/03/2055	शुक्र	20/12/2057
गुरु	30/09/2048	बुध	29/08/2050	केतु	18/12/2052	शुक्र	06/09/2055	सूर्य	04/02/2058
शनि	03/11/2048	केतु	25/10/2050	शुक्र	13/05/2053	सूर्य	28/10/2055	चंद्र	23/04/2058
बुध	03/12/2048	शुक्र	08/04/2051	सूर्य	26/06/2053	चंद्र	22/01/2056	मंगल	16/06/2058
केतु	15/12/2048	सूर्य	27/05/2051	चंद्र	07/09/2053	मंगल	23/03/2056	राहु	03/11/2058
शुक्र	20/01/2049	चंद्र	17/08/2051	मंगल	28/10/2053	राहु	26/08/2056	गुरु	07/03/2059
सूर्य	30/01/2049	मंगल	14/10/2051	राहु	08/03/2054	गुरु	12/01/2057	शनि	02/08/2059

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
02/08/2059		19/08/2060		20/08/2063		14/07/2064		12/01/2066	
19/08/2060		20/08/2063		14/07/2064		12/01/2066		31/01/2067	
केतु	24/08/2059	शुक्र	18/02/2061	सूर्य	05/09/2063	चंद्र	28/08/2064	मंगल	04/02/2066
शुक्र	27/10/2059	सूर्य	13/04/2061	चंद्र	03/10/2063	मंगल	29/09/2064	राहु	02/04/2066
सूर्य	15/11/2059	चंद्र	14/07/2061	मंगल	22/10/2063	राहु	20/12/2064	गुरु	23/05/2066
चंद्र	17/12/2059	मंगल	16/09/2061	राहु	10/12/2063	गुरु	03/03/2065	शनि	23/07/2066
मंगल	08/01/2060	राहु	27/02/2062	गुरु	23/01/2064	शनि	29/05/2065	बुध	15/09/2066
राहु	06/03/2060	गुरु	23/07/2062	शनि	15/03/2064	बुध	15/08/2065	केतु	08/10/2066
गुरु	26/04/2060	शनि	13/01/2063	बुध	01/05/2064	केतु	16/09/2065	शुक्र	11/12/2066
शनि	26/06/2060	बुध	17/06/2063	केतु	20/05/2064	शुक्र	16/12/2065	सूर्य	30/12/2066
बुध	19/08/2060	केतु	20/08/2063	शुक्र	14/07/2064	सूर्य	12/01/2066	चंद्र	31/01/2067

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
31/01/2067		20/03/2069		01/10/2071		06/01/2074		13/12/2074	
20/03/2069		01/10/2071		06/01/2074		13/12/2074		13/08/2077	
गुरु	15/05/2067	शनि	14/08/2069	बुध	27/01/2072	केतु	26/01/2074	शुक्र	25/05/2075
शनि	15/09/2067	बुध	23/12/2069	केतु	15/03/2072	शुक्र	24/03/2074	सूर्य	12/07/2075
बुध	04/01/2068	केतु	15/02/2070	शुक्र	31/07/2072	सूर्य	10/04/2074	चंद्र	01/10/2075
केतु	18/02/2068	शुक्र	19/07/2070	सूर्य	10/09/2072	चंद्र	08/05/2074	मंगल	27/11/2075
शुक्र	27/06/2068	सूर्य	03/09/2070	चंद्र	18/11/2072	मंगल	28/05/2074	राहु	21/04/2076
सूर्य	05/08/2068	चंद्र	19/11/2070	मंगल	06/01/2073	राहु	18/07/2074	गुरु	29/08/2076
चंद्र	09/10/2068	मंगल	12/01/2071	राहु	10/05/2073	गुरु	02/09/2074	शनि	30/01/2077
मंगल	23/11/2068	राहु	31/05/2071	गुरु	28/08/2073	शनि	26/10/2074	बुध	17/06/2077
राहु	20/03/2069	गुरु	01/10/2071	शनि	06/01/2074	बुध	13/12/2074	केतु	13/08/2077

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
13/08/2077		01/06/2078		01/10/2079		06/09/2080		31/01/2083	
01/06/2078		01/10/2079		06/09/2080		31/01/2083		03/02/2086	
सूर्य	28/08/2077	चंद्र	12/07/2078	मंगल	21/10/2079	राहु	16/01/2081	शनि	24/07/2083
चंद्र	21/09/2077	मंगल	09/08/2078	राहु	11/12/2079	गुरु	13/05/2081	बुध	27/12/2083
मंगल	08/10/2077	राहु	21/10/2078	गुरु	26/01/2080	शनि	28/09/2081	केतु	29/02/2084
राहु	21/11/2077	गुरु	25/12/2078	शनि	20/03/2080	बुध	31/01/2082	शुक्र	30/08/2084
गुरु	30/12/2077	शनि	13/03/2079	बुध	07/05/2080	केतु	23/03/2082	सूर्य	24/10/2084
शनि	14/02/2078	बुध	20/05/2079	केतु	27/05/2080	शुक्र	16/08/2082	चंद्र	23/01/2085
बुध	28/03/2078	केतु	18/06/2079	शुक्र	23/07/2080	सूर्य	29/09/2082	मंगल	28/03/2085
केतु	14/04/2078	शुक्र	07/09/2079	सूर्य	09/08/2080	चंद्र	11/12/2082	राहु	09/09/2085
शुक्र	01/06/2078	सूर्य	01/10/2079	चंद्र	06/09/2080	मंगल	31/01/2083	गुरु	03/02/2086

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
03/02/2086		13/10/2088		22/11/2089		21/01/2093		03/01/2094	
13/10/2088		22/11/2089		21/01/2093		03/01/2094		05/08/2095	
बुध	22/06/2086	केतु	05/11/2088	शुक्र	02/06/2090	सूर्य	08/02/2093	चंद्र	20/02/2094
केतु	18/08/2086	शुक्र	12/01/2089	सूर्य	30/07/2090	चंद्र	09/03/2093	मंगल	26/03/2094
शुक्र	29/01/2087	सूर्य	01/02/2089	चंद्र	04/11/2090	मंगल	29/03/2093	राहु	21/06/2094
सूर्य	19/03/2087	चंद्र	07/03/2089	मंगल	10/01/2091	राहु	20/05/2093	गुरु	06/09/2094
चंद्र	09/06/2087	मंगल	31/03/2089	राहु	03/07/2091	गुरु	05/07/2093	शनि	07/12/2094
मंगल	06/08/2087	राहु	30/05/2089	गुरु	04/12/2091	शनि	29/08/2093	बुध	27/02/2095
राहु	31/12/2087	गुरु	23/07/2089	शनि	04/06/2092	बुध	17/10/2093	केतु	01/04/2095
गुरु	10/05/2088	शनि	25/09/2089	बुध	15/11/2092	केतु	06/11/2093	शुक्र	07/07/2095
शनि	13/10/2088	बुध	22/11/2089	केतु	21/01/2093	शुक्र	03/01/2094	सूर्य	05/08/2095

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शनि - शनि		शुक्र - शनि - बुध		शुक्र - शनि - केतु		शुक्र - शनि - शुक्र	
01/12/2018 13:08		02/06/2019 16:19		13/11/2019 12:50		20/01/2020 00:07	
02/06/2019 16:19		13/11/2019 12:50		20/01/2020 00:07		30/07/2020 18:37	
शनि	30/12/2018 13:02	बुध	25/06/2019 21:25	केतु	17/11/2019 11:17	शुक्र	21/02/2020 03:12
बुध	25/01/2019 11:41	केतु	05/07/2019 10:49	शुक्र	28/11/2019 17:10	सूर्य	01/03/2020 18:31
केतु	05/02/2019 04:04	शुक्र	01/08/2019 18:14	सूर्य	02/12/2019 02:08	चंद्र	17/03/2020 20:04
शुक्र	07/03/2019 16:36	सूर्य	09/08/2019 22:52	चंद्र	07/12/2019 17:04	मंगल	29/03/2020 01:56
सूर्य	16/03/2019 20:22	चंद्र	23/08/2019 14:34	मंगल	11/12/2019 15:32	राहु	26/04/2020 23:55
चंद्र	01/04/2019 02:37	मंगल	02/09/2019 03:58	राहु	21/12/2019 18:25	गुरु	22/05/2020 16:47
मंगल	11/04/2019 19:01	राहु	26/09/2019 17:51	गुरु	30/12/2019 18:20	शनि	22/06/2020 05:19
राहु	09/05/2019 06:17	गुरु	18/10/2019 14:11	शनि	10/01/2020 10:43	बुध	19/07/2020 12:44
गुरु	02/06/2019 16:19	शनि	13/11/2019 12:50	बुध	20/01/2020 00:07	केतु	30/07/2020 18:37

शुक्र - शनि - सूर्य		शुक्र - शनि - चंद्र		शुक्र - शनि - मंगल		शुक्र - शनि - राहु	
30/07/2020 18:37		26/09/2020 14:34		31/12/2020 23:49		09/03/2021 11:05	
26/09/2020 14:34		31/12/2020 23:49		09/03/2021 11:05		29/08/2021 22:56	
सूर्य	02/08/2020 16:00	चंद्र	04/10/2020 15:20	मंगल	04/01/2021 22:16	राहु	04/04/2021 11:40
चंद्र	07/08/2020 11:40	मंगल	10/10/2020 06:16	राहु	15/01/2021 01:09	गुरु	27/04/2021 14:50
मंगल	10/08/2020 20:38	राहु	24/10/2020 17:15	गुरु	24/01/2021 01:04	शनि	25/05/2021 02:07
राहु	19/08/2020 12:49	गुरु	06/11/2020 13:41	शनि	03/02/2021 17:27	बुध	18/06/2021 16:00
गुरु	27/08/2020 05:53	शनि	21/11/2020 19:57	बुध	13/02/2021 06:51	केतु	28/06/2021 18:53
शनि	05/09/2020 09:39	बुध	05/12/2020 11:40	केतु	17/02/2021 05:18	शुक्र	27/07/2021 16:52
बुध	13/09/2020 14:16	केतु	11/12/2020 02:36	शुक्र	28/02/2021 11:11	सूर्य	05/08/2021 09:03
केतु	16/09/2020 23:14	शुक्र	27/12/2020 04:09	सूर्य	03/03/2021 20:09	चंद्र	19/08/2021 20:03
शुक्र	26/09/2020 14:34	सूर्य	31/12/2020 23:49	चंद्र	09/03/2021 11:05	मंगल	29/08/2021 22:56

शुक्र - शनि - गुरु		शुक्र - बुध - बुध		शुक्र - बुध - केतु		शुक्र - बुध - शुक्र	
29/08/2021 22:56		31/01/2022 04:08		26/06/2022 18:43		26/08/2022 03:32	
31/01/2022 04:08		26/06/2022 18:43		26/08/2022 03:32		14/02/2023 15:02	
गुरु	19/09/2021 12:26	बुध	20/02/2022 22:36	केतु	30/06/2022 07:13	शुक्र	23/09/2022 21:27
शनि	13/10/2021 22:27	केतु	01/03/2022 11:51	शुक्र	10/07/2022 08:42	सूर्य	02/10/2022 12:26
बुध	04/11/2021 18:47	शुक्र	25/03/2022 22:17	सूर्य	13/07/2022 09:08	चंद्र	16/10/2022 21:23
केतु	13/11/2021 18:41	सूर्य	02/04/2022 06:12	चंद्र	18/07/2022 09:52	मंगल	26/10/2022 22:51
शुक्र	09/12/2021 11:33	चंद्र	14/04/2022 11:25	मंगल	21/07/2022 22:23	राहु	21/11/2022 19:47
सूर्य	17/12/2021 04:37	मंगल	23/04/2022 00:40	राहु	30/07/2022 23:43	गुरु	14/12/2022 19:43
चंद्र	30/12/2021 01:03	राहु	15/05/2022 00:27	गुरु	08/08/2022 00:53	शनि	11/01/2023 03:08
मंगल	08/01/2022 00:57	गुरु	03/06/2022 13:36	शनि	17/08/2022 14:17	बुध	04/02/2023 13:34
राहु	31/01/2022 04:08	शनि	26/06/2022 18:43	बुध	26/08/2022 03:32	केतु	14/02/2023 15:02

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - बुध - सूर्य		शुक्र - बुध - चंद्र		शुक्र - बुध - मंगल		शुक्र - बुध - राहु	
14/02/2023 15:02		07/04/2023 08:53		02/07/2023 14:38		31/08/2023 23:28	
07/04/2023 08:53		02/07/2023 14:38		31/08/2023 23:28		03/02/2024 05:01	
सूर्य	17/02/2023 05:08	चंद्र	14/04/2023 13:22	मंगल	06/07/2023 03:09	राहु	24/09/2023 06:17
चंद्र	21/02/2023 12:37	मंगल	19/04/2023 14:06	राहु	15/07/2023 04:28	गुरु	14/10/2023 23:02
मंगल	24/02/2023 13:03	राहु	02/05/2023 12:34	गुरु	23/07/2023 05:39	शनि	08/11/2023 12:55
राहु	04/03/2023 07:20	गुरु	14/05/2023 00:32	शनि	01/08/2023 19:03	बुध	30/11/2023 12:42
गुरु	11/03/2023 04:55	शनि	27/05/2023 16:14	बुध	10/08/2023 08:18	केतु	09/12/2023 14:01
शनि	19/03/2023 09:32	बुध	08/06/2023 21:27	केतु	13/08/2023 20:49	शुक्र	04/01/2024 10:57
बुध	26/03/2023 17:28	केतु	13/06/2023 22:11	शुक्र	23/08/2023 22:17	सूर्य	12/01/2024 05:13
केतु	29/03/2023 17:55	शुक्र	28/06/2023 07:09	सूर्य	26/08/2023 22:43	चंद्र	25/01/2024 03:41
शुक्र	07/04/2023 08:53	सूर्य	02/07/2023 14:38	चंद्र	31/08/2023 23:28	मंगल	03/02/2024 05:01

शुक्र - बुध - गुरु		शुक्र - बुध - शनि		शुक्र - केतु - केतु		शुक्र - केतु - शुक्र	
03/02/2024 05:01		20/06/2024 04:37		01/12/2024 01:08		25/12/2024 21:43	
20/06/2024 04:37		01/12/2024 01:08		25/12/2024 21:43		06/03/2025 22:13	
गुरु	21/02/2024 14:33	शनि	16/07/2024 03:16	केतु	02/12/2024 11:56	शुक्र	06/01/2025 17:48
शनि	14/03/2024 10:54	बुध	08/08/2024 08:22	शुक्र	06/12/2024 15:22	सूर्य	10/01/2025 07:01
बुध	03/04/2024 00:02	केतु	17/08/2024 21:46	सूर्य	07/12/2024 21:12	चंद्र	16/01/2025 05:04
केतु	11/04/2024 01:13	शुक्र	14/09/2024 05:11	चंद्र	09/12/2024 22:54	मंगल	20/01/2025 08:29
शुक्र	04/05/2024 01:09	सूर्य	22/09/2024 09:49	मंगल	11/12/2024 09:42	राहु	31/01/2025 00:10
सूर्य	10/05/2024 22:44	चंद्र	06/10/2024 01:31	राहु	15/12/2024 03:12	गुरु	09/02/2025 11:26
चंद्र	22/05/2024 10:42	मंगल	15/10/2024 14:55	गुरु	18/12/2024 10:44	शनि	20/02/2025 17:19
मंगल	30/05/2024 11:52	राहु	09/11/2024 04:48	शनि	22/12/2024 09:12	बुध	02/03/2025 18:47
राहु	20/06/2024 04:37	गुरु	01/12/2024 01:08	बुध	25/12/2024 21:43	केतु	06/03/2025 22:13

शुक्र - केतु - सूर्य		शुक्र - केतु - चंद्र		शुक्र - केतु - मंगल		शुक्र - केतु - राहु	
06/03/2025 22:13		28/03/2025 05:34		02/05/2025 17:49		27/05/2025 14:23	
28/03/2025 05:34		02/05/2025 17:49		27/05/2025 14:23		30/07/2025 12:26	
सूर्य	07/03/2025 23:47	चंद्र	31/03/2025 04:35	मंगल	04/05/2025 04:37	राहु	06/06/2025 04:29
चंद्र	09/03/2025 18:23	मंगल	02/04/2025 06:18	राहु	07/05/2025 22:06	गुरु	14/06/2025 17:02
मंगल	11/03/2025 00:13	राहु	07/04/2025 14:08	गुरु	11/05/2025 05:38	शनि	24/06/2025 19:55
राहु	14/03/2025 04:55	गुरु	12/04/2025 07:46	शनि	15/05/2025 04:06	बुध	03/07/2025 21:15
गुरु	17/03/2025 01:06	शनि	17/04/2025 22:42	बुध	18/05/2025 16:37	केतु	07/07/2025 14:44
शनि	20/03/2025 10:04	बुध	22/04/2025 23:26	केतु	20/05/2025 03:25	शुक्र	18/07/2025 06:24
बुध	23/03/2025 10:30	केतु	25/04/2025 01:09	शुक्र	24/05/2025 06:50	सूर्य	21/07/2025 11:07
केतु	24/03/2025 16:20	शुक्र	30/04/2025 23:12	सूर्य	25/05/2025 12:40	चंद्र	26/07/2025 18:57
शुक्र	28/03/2025 05:34	सूर्य	02/05/2025 17:49	चंद्र	27/05/2025 14:23	मंगल	30/07/2025 12:26

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - केतु - गुरु		शुक्र - केतु - शनि		शुक्र - केतु - बुध		सूर्य - सूर्य - सूर्य	
30/07/2025 12:26		25/09/2025 08:02		01/12/2025 19:19		31/01/2026 04:08	
25/09/2025 08:02		01/12/2025 19:19		31/01/2026 04:08		05/02/2026 15:37	
गुरु	07/08/2025 02:15	शनि	06/10/2025 00:25	बुध	10/12/2025 08:34	सूर्य	31/01/2026 10:42
शनि	16/08/2025 02:09	बुध	15/10/2025 13:49	केतु	13/12/2025 21:04	चंद्र	31/01/2026 21:40
बुध	24/08/2025 03:20	केतु	19/10/2025 12:16	शुक्र	23/12/2025 22:33	मंगल	01/02/2026 05:20
केतु	27/08/2025 10:52	शुक्र	30/10/2025 18:09	सूर्य	26/12/2025 22:59	राहु	02/02/2026 01:04
शुक्र	05/09/2025 22:08	सूर्य	03/11/2025 03:07	चंद्र	31/12/2025 23:43	गुरु	02/02/2026 18:35
सूर्य	08/09/2025 18:19	चंद्र	08/11/2025 18:03	मंगल	04/01/2026 12:14	शनि	03/02/2026 15:25
चंद्र	13/09/2025 11:57	मंगल	12/11/2025 16:31	राहु	13/01/2026 13:34	बुध	04/02/2026 10:02
मंगल	16/09/2025 19:30	राहु	22/11/2025 19:24	गुरु	21/01/2026 14:44	केतु	04/02/2026 17:43
राहु	25/09/2025 08:02	गुरु	01/12/2025 19:19	शनि	31/01/2026 04:08	शुक्र	05/02/2026 15:37

सूर्य - सूर्य - चंद्र		सूर्य - सूर्य - मंगल		सूर्य - सूर्य - राहु		सूर्य - सूर्य - गुरु	
05/02/2026 15:37		14/02/2026 18:46		21/02/2026 04:11		09/03/2026 14:39	
14/02/2026 18:46		21/02/2026 04:11		09/03/2026 14:39		24/03/2026 05:17	
चंद्र	06/02/2026 09:53	मंगल	15/02/2026 03:43	राहु	23/02/2026 15:21	गुरु	11/03/2026 13:24
मंगल	06/02/2026 22:40	राहु	16/02/2026 02:44	गुरु	25/02/2026 19:57	शनि	13/03/2026 20:55
राहु	08/02/2026 07:33	गुरु	16/02/2026 23:11	शनि	28/02/2026 10:24	बुध	15/03/2026 22:36
गुरु	09/02/2026 12:46	शनि	17/02/2026 23:29	बुध	02/03/2026 18:17	केतु	16/03/2026 19:03
शनि	10/02/2026 23:28	बुध	18/02/2026 21:13	केतु	03/03/2026 17:18	शुक्र	19/03/2026 05:29
बुध	12/02/2026 06:30	केतु	19/02/2026 06:09	शुक्र	06/03/2026 11:03	सूर्य	19/03/2026 23:01
केतु	12/02/2026 19:17	शुक्र	20/02/2026 07:43	सूर्य	07/03/2026 06:46	चंद्र	21/03/2026 04:14
शुक्र	14/02/2026 07:49	सूर्य	20/02/2026 15:24	चंद्र	08/03/2026 15:38	मंगल	22/03/2026 00:42
सूर्य	14/02/2026 18:46	चंद्र	21/02/2026 04:11	मंगल	09/03/2026 14:39	राहु	24/03/2026 05:17

सूर्य - सूर्य - शनि		सूर्य - सूर्य - बुध		सूर्य - सूर्य - केतु		सूर्य - सूर्य - शुक्र	
24/03/2026 05:17		10/04/2026 13:40		26/04/2026 02:14		02/05/2026 11:38	
10/04/2026 13:40		26/04/2026 02:14		02/05/2026 11:38		20/05/2026 17:56	
शनि	26/03/2026 23:13	बुध	12/04/2026 18:27	केतु	26/04/2026 11:11	शुक्र	05/05/2026 12:41
बुध	29/03/2026 10:12	केतु	13/04/2026 16:11	शुक्र	27/04/2026 12:45	सूर्य	06/05/2026 10:36
केतु	30/03/2026 10:30	शुक्र	16/04/2026 06:17	सूर्य	27/04/2026 20:25	चंद्र	07/05/2026 23:07
शुक्र	02/04/2026 07:53	सूर्य	17/04/2026 00:54	चंद्र	28/04/2026 09:12	मंगल	09/05/2026 00:41
सूर्य	03/04/2026 04:43	चंद्र	18/04/2026 07:57	मंगल	28/04/2026 18:09	राहु	11/05/2026 18:26
चंद्र	04/04/2026 15:25	मंगल	19/04/2026 05:41	राहु	29/04/2026 17:09	गुरु	14/05/2026 04:53
मंगल	05/04/2026 15:42	राहु	21/04/2026 13:34	गुरु	30/04/2026 13:37	शनि	17/05/2026 02:16
राहु	08/04/2026 06:09	गुरु	23/04/2026 15:14	शनि	01/05/2026 13:54	बुध	19/05/2026 16:22
गुरु	10/04/2026 13:40	शनि	26/04/2026 02:14	बुध	02/05/2026 11:38	केतु	20/05/2026 17:56

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - चंद्र - चंद्र	
20/05/2026 17:56	
04/06/2026 23:11	
चंद्र	22/05/2026 00:22
मंगल	22/05/2026 21:41
राहु	25/05/2026 04:28
गुरु	27/05/2026 05:10
शनि	29/05/2026 15:00
बुध	31/05/2026 18:44
केतु	01/06/2026 16:03
शुक्र	04/06/2026 04:55
सूर्य	04/06/2026 23:11

सूर्य - चंद्र - मंगल	
04/06/2026 23:11	
15/06/2026 14:52	
मंगल	05/06/2026 14:06
राहु	07/06/2026 04:27
गुरु	08/06/2026 14:32
शनि	10/06/2026 07:01
बुध	11/06/2026 19:15
केतु	12/06/2026 10:09
शुक्र	14/06/2026 04:46
सूर्य	14/06/2026 17:33
चंद्र	15/06/2026 14:52

सूर्य - चंद्र - राहु	
15/06/2026 14:52	
13/07/2026 00:19	
राहु	19/06/2026 17:29
गुरु	23/06/2026 09:08
शनि	27/06/2026 17:14
बुध	01/07/2026 14:22
केतु	03/07/2026 04:43
शुक्र	07/07/2026 18:18
सूर्य	09/07/2026 03:10
चंद्र	11/07/2026 09:57
मंगल	13/07/2026 00:19

सूर्य - चंद्र - गुरु	
13/07/2026 00:19	
06/08/2026 08:43	
गुरु	16/07/2026 06:14
शनि	20/07/2026 02:46
बुध	23/07/2026 13:33
केतु	24/07/2026 23:38
शुक्र	29/07/2026 01:02
सूर्य	30/07/2026 06:16
चंद्र	01/08/2026 06:58
मंगल	02/08/2026 17:03
राहु	06/08/2026 08:43

सूर्य - चंद्र - शनि	
06/08/2026 08:43	
04/09/2026 06:41	
शनि	10/08/2026 22:35
बुध	15/08/2026 00:54
केतु	16/08/2026 17:23
शुक्र	21/08/2026 13:03
सूर्य	22/08/2026 23:45
चंद्र	25/08/2026 09:35
मंगल	27/08/2026 02:03
राहु	31/08/2026 10:09
गुरु	04/09/2026 06:41

सूर्य - चंद्र - बुध	
04/09/2026 06:41	
30/09/2026 03:37	
बुध	07/09/2026 22:39
केतु	09/09/2026 10:52
शुक्र	13/09/2026 18:21
सूर्य	15/09/2026 01:24
चंद्र	17/09/2026 05:09
मंगल	18/09/2026 17:22
राहु	22/09/2026 14:30
गुरु	26/09/2026 01:18
शनि	30/09/2026 03:37

सूर्य - चंद्र - केतु	
30/09/2026 03:37	
10/10/2026 19:17	
केतु	30/09/2026 18:31
शुक्र	02/10/2026 13:08
सूर्य	03/10/2026 01:55
चंद्र	03/10/2026 23:14
मंगल	04/10/2026 14:08
राहु	06/10/2026 04:29
गुरु	07/10/2026 14:35
शनि	09/10/2026 07:04
बुध	10/10/2026 19:17

सूर्य - चंद्र - शुक्र	
10/10/2026 19:17	
10/11/2026 05:47	
शुक्र	15/10/2026 21:02
सूर्य	17/10/2026 09:34
चंद्र	19/10/2026 22:26
मंगल	21/10/2026 17:03
राहु	26/10/2026 06:37
गुरु	30/10/2026 08:01
शनि	04/11/2026 03:41
बुध	08/11/2026 11:10
केतु	10/11/2026 05:47

सूर्य - चंद्र - सूर्य	
10/11/2026 05:47	
19/11/2026 08:56	
सूर्य	10/11/2026 16:44
चंद्र	11/11/2026 11:00
मंगल	11/11/2026 23:47
राहु	13/11/2026 08:40
गुरु	14/11/2026 13:53
शनि	16/11/2026 00:35
बुध	17/11/2026 07:37
केतु	17/11/2026 20:25
शुक्र	19/11/2026 08:56

सूर्य - मंगल - मंगल	
19/11/2026 08:56	
26/11/2026 19:54	
मंगल	19/11/2026 19:22
राहु	20/11/2026 22:13
गुरु	21/11/2026 22:05
शनि	23/11/2026 02:25
बुध	24/11/2026 03:46
केतु	24/11/2026 14:13
शुक्र	25/11/2026 20:03
सूर्य	26/11/2026 05:00
चंद्र	26/11/2026 19:54

सूर्य - मंगल - राहु	
26/11/2026 19:54	
16/12/2026 00:07	
राहु	29/11/2026 16:56
गुरु	02/12/2026 06:18
शनि	05/12/2026 07:10
बुध	08/12/2026 00:22
केतु	09/12/2026 03:13
शुक्र	12/12/2026 07:55
सूर्य	13/12/2026 06:55
चंद्र	14/12/2026 21:17
मंगल	16/12/2026 00:07

सूर्य - मंगल - गुरु	
16/12/2026 00:07	
02/01/2027 01:12	
गुरु	18/12/2026 06:40
शनि	20/12/2026 23:26
बुध	23/12/2026 09:23
केतु	24/12/2026 09:15
शुक्र	27/12/2026 05:26
सूर्य	28/12/2026 01:53
चंद्र	29/12/2026 11:59
मंगल	30/12/2026 11:50
राहु	02/01/2027 01:12

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - शनि - शनि - चंद्र		शुक्र - शनि - शनि - मंगल		शुक्र - शनि - शनि - राहु		शुक्र - शनि - शनि - गुरु	
16/03/2019 20:22		01/04/2019 02:37		11/04/2019 19:01		09/05/2019 06:17	
01/04/2019 02:37		11/04/2019 19:01		09/05/2019 06:17		02/06/2019 16:19	
चंद्र	18/03/2019 02:53	मंगल	01/04/2019 17:35	राहु	15/04/2019 21:54	गुरु	12/05/2019 12:25
मंगल	19/03/2019 00:15	राहु	03/04/2019 08:02	गुरु	19/04/2019 13:48	शनि	16/05/2019 09:13
राहु	21/03/2019 07:11	गुरु	04/04/2019 18:13	शनि	23/04/2019 22:11	बुध	19/05/2019 20:14
गुरु	23/03/2019 08:01	शनि	06/04/2019 10:49	बुध	27/04/2019 19:35	केतु	21/05/2019 06:25
शनि	25/03/2019 18:01	बुध	07/04/2019 23:08	केतु	29/04/2019 10:03	शुक्र	25/05/2019 08:05
बुध	27/03/2019 21:54	केतु	08/04/2019 14:06	शुक्र	03/05/2019 23:55	सूर्य	26/05/2019 13:23
केतु	28/03/2019 19:16	शुक्र	10/04/2019 08:49	सूर्य	05/05/2019 08:53	चंद्र	28/05/2019 14:13
शुक्र	31/03/2019 08:19	सूर्य	10/04/2019 21:39	चंद्र	07/05/2019 15:50	मंगल	30/05/2019 00:24
सूर्य	01/04/2019 02:37	चंद्र	11/04/2019 19:01	मंगल	09/05/2019 06:17	राहु	02/06/2019 16:19

शुक्र - शनि - बुध - बुध		शुक्र - शनि - बुध - केतु		शुक्र - शनि - बुध - शुक्र		शुक्र - शनि - बुध - सूर्य	
02/06/2019 16:19		25/06/2019 21:25		05/07/2019 10:49		01/08/2019 18:14	
25/06/2019 21:25		05/07/2019 10:49		01/08/2019 18:14		09/08/2019 22:52	
बुध	05/06/2019 23:14	केतु	26/06/2019 10:48	शुक्र	10/07/2019 00:03	सूर्य	02/08/2019 04:04
केतु	07/06/2019 07:44	शुक्र	28/06/2019 01:02	सूर्य	11/07/2019 08:49	चंद्र	02/08/2019 20:27
शुक्र	11/06/2019 04:35	सूर्य	28/06/2019 12:30	चंद्र	13/07/2019 15:26	मंगल	03/08/2019 07:55
सूर्य	12/06/2019 08:26	चंद्र	29/06/2019 07:37	मंगल	15/07/2019 05:40	राहु	04/08/2019 13:25
चंद्र	14/06/2019 06:52	मंगल	29/06/2019 21:00	राहु	19/07/2019 07:59	गुरु	05/08/2019 15:38
मंगल	15/06/2019 15:22	राहु	01/07/2019 07:24	गुरु	22/07/2019 23:23	शनि	06/08/2019 22:46
राहु	19/06/2019 02:56	गुरु	02/07/2019 14:00	शनि	27/07/2019 07:09	बुध	08/08/2019 02:37
गुरु	22/06/2019 05:12	शनि	04/07/2019 02:19	बुध	31/07/2019 04:00	केतु	08/08/2019 14:05
शनि	25/06/2019 21:25	बुध	05/07/2019 10:49	केतु	01/08/2019 18:14	शुक्र	09/08/2019 22:52

शुक्र - शनि - बुध - चंद्र		शुक्र - शनि - बुध - मंगल		शुक्र - शनि - बुध - राहु		शुक्र - शनि - बुध - गुरु	
09/08/2019 22:52		23/08/2019 14:34		02/09/2019 03:58		26/09/2019 17:51	
23/08/2019 14:34		02/09/2019 03:58		26/09/2019 17:51		18/10/2019 14:11	
चंद्र	11/08/2019 02:10	मंगल	24/08/2019 03:57	राहु	05/09/2019 20:27	गुरु	29/09/2019 15:46
मंगल	11/08/2019 21:17	राहु	25/08/2019 14:22	गुरु	09/09/2019 03:06	शनि	03/10/2019 02:47
राहु	13/08/2019 22:27	गुरु	26/08/2019 20:57	शनि	13/09/2019 00:30	बुध	06/10/2019 05:04
गुरु	15/08/2019 18:08	शनि	28/08/2019 09:16	बुध	16/09/2019 12:04	केतु	07/10/2019 11:39
शनि	17/08/2019 22:02	बुध	29/08/2019 17:46	केतु	17/09/2019 22:28	शुक्र	11/10/2019 03:02
बुध	19/08/2019 20:27	केतु	30/08/2019 07:09	शुक्र	22/09/2019 00:47	सूर्य	12/10/2019 05:15
केतु	20/08/2019 15:34	शुक्र	31/08/2019 21:23	सूर्य	23/09/2019 06:17	चंद्र	14/10/2019 00:57
शुक्र	22/08/2019 22:11	सूर्य	01/09/2019 08:51	चंद्र	25/09/2019 07:26	मंगल	15/10/2019 07:32
सूर्य	23/08/2019 14:34	चंद्र	02/09/2019 03:58	मंगल	26/09/2019 17:51	राहु	18/10/2019 14:11

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - शनि - बुध - शनि	
18/10/2019 14:11	
13/11/2019 12:50	
शनि	22/10/2019 16:46
बुध	26/10/2019 08:59
केतु	27/10/2019 21:18
शुक्र	01/11/2019 05:05
सूर्य	02/11/2019 12:12
चंद्र	04/11/2019 16:06
मंगल	06/11/2019 04:25
राहु	10/11/2019 01:49
गुरु	13/11/2019 12:50

शुक्र - शनि - केतु - केतु	
13/11/2019 12:50	
17/11/2019 11:17	
केतु	13/11/2019 18:21
शुक्र	14/11/2019 10:05
सूर्य	14/11/2019 14:49
चंद्र	14/11/2019 22:41
मंगल	15/11/2019 04:11
राहु	15/11/2019 18:22
गुरु	16/11/2019 06:57
शनि	16/11/2019 21:55
बुध	17/11/2019 11:17

शुक्र - शनि - केतु - शुक्र	
17/11/2019 11:17	
28/11/2019 17:10	
शुक्र	19/11/2019 08:16
सूर्य	19/11/2019 21:46
चंद्र	20/11/2019 20:15
मंगल	21/11/2019 12:00
राहु	23/11/2019 04:29
गुरु	24/11/2019 16:28
शनि	26/11/2019 11:12
बुध	28/11/2019 01:26
केतु	28/11/2019 17:10

शुक्र - शनि - केतु - सूर्य	
28/11/2019 17:10	
02/12/2019 02:08	
सूर्य	28/11/2019 21:13
चंद्र	29/11/2019 03:58
मंगल	29/11/2019 08:41
राहु	29/11/2019 20:50
गुरु	30/11/2019 07:38
शनि	30/11/2019 20:27
बुध	01/12/2019 07:55
केतु	01/12/2019 12:38
शुक्र	02/12/2019 02:08

शुक्र - शनि - केतु - चंद्र	
02/12/2019 02:08	
07/12/2019 17:04	
चंद्र	02/12/2019 13:23
मंगल	02/12/2019 21:15
राहु	03/12/2019 17:30
गुरु	04/12/2019 11:29
शनि	05/12/2019 08:51
बुध	06/12/2019 03:58
केतु	06/12/2019 11:50
शुक्र	07/12/2019 10:20
सूर्य	07/12/2019 17:04

शुक्र - शनि - केतु - मंगल	
07/12/2019 17:04	
11/12/2019 15:32	
मंगल	07/12/2019 22:35
राहु	08/12/2019 12:45
गुरु	09/12/2019 01:21
शनि	09/12/2019 16:18
बुध	10/12/2019 05:41
केतु	10/12/2019 11:12
शुक्र	11/12/2019 02:56
सूर्य	11/12/2019 07:40
चंद्र	11/12/2019 15:32

शुक्र - शनि - केतु - राहु	
11/12/2019 15:32	
21/12/2019 18:25	
राहु	13/12/2019 03:58
गुरु	14/12/2019 12:21
शनि	16/12/2019 02:49
बुध	17/12/2019 13:13
केतु	18/12/2019 03:23
शुक्र	19/12/2019 19:52
सूर्य	20/12/2019 08:01
चंद्र	21/12/2019 04:15
मंगल	21/12/2019 18:25

शुक्र - शनि - केतु - गुरु	
21/12/2019 18:25	
30/12/2019 18:20	
गुरु	22/12/2019 23:13
शनि	24/12/2019 09:24
बुध	25/12/2019 15:59
केतु	26/12/2019 04:35
शुक्र	27/12/2019 16:34
सूर्य	28/12/2019 03:21
चंद्र	28/12/2019 21:21
मंगल	29/12/2019 09:56
राहु	30/12/2019 18:20

शुक्र - शनि - केतु - शनि	
30/12/2019 18:20	
10/01/2020 10:43	
शनि	01/01/2020 10:55
बुध	02/01/2020 23:15
केतु	03/01/2020 14:12
शुक्र	05/01/2020 08:56
सूर्य	05/01/2020 21:45
चंद्र	06/01/2020 19:07
मंगल	07/01/2020 10:04
राहु	09/01/2020 00:32
गुरु	10/01/2020 10:43

शुक्र - शनि - केतु - बुध	
10/01/2020 10:43	
20/01/2020 00:07	
बुध	11/01/2020 19:13
केतु	12/01/2020 08:35
शुक्र	13/01/2020 22:49
सूर्य	14/01/2020 10:18
चंद्र	15/01/2020 05:25
मंगल	15/01/2020 18:47
राहु	17/01/2020 05:12
गुरु	18/01/2020 11:47
शनि	20/01/2020 00:07

शुक्र - शनि - शुक्र - शुक्र	
20/01/2020 00:07	
21/02/2020 03:12	
शुक्र	25/01/2020 08:37
सूर्य	26/01/2020 23:11
चंद्र	29/01/2020 15:26
मंगल	31/01/2020 12:25
राहु	05/02/2020 08:05
गुरु	09/02/2020 14:53
शनि	14/02/2020 16:59
बुध	19/02/2020 06:13
केतु	21/02/2020 03:12

शुक्र - शनि - शुक्र - सूर्य	
21/02/2020 03:12	
01/03/2020 18:31	
सूर्य	21/02/2020 14:45
चंद्र	22/02/2020 10:02
मंगल	22/02/2020 23:32
राहु	24/02/2020 10:14
गुरु	25/02/2020 17:04
शनि	27/02/2020 05:42
बुध	28/02/2020 14:28
केतु	29/02/2020 03:58
शुक्र	01/03/2020 18:31

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 8 वर्ष 6 मास 29 दिन

शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष	
30/08/1988		30/03/1997		30/03/2012		30/03/2028		30/03/2045	
30/03/1997		30/03/2012		30/03/2028		30/03/2045		31/03/2063	
	00/00/0000	केतु	09/03/1999	चंद्र	14/06/2014	बुध	26/09/2030	शुक्र	14/01/2048
	30/08/1988	चंद्र	02/04/2001	बुध	18/10/2016	शुक्र	17/05/2033	सूर्य	29/09/2049
चंद्र	03/09/1988	बुध	14/06/2003	शुक्र	12/04/2019	सूर्य	26/12/2034	मंगल	10/08/2051
बुध	23/09/1990	शुक्र	11/10/2005	सूर्य	18/10/2020	मंगल	29/09/2036	गुरु	16/08/2053
शुक्र	24/11/1992	सूर्य	15/03/2007	मंगल	14/06/2022	गुरु	26/08/2038	शनि	18/10/2055
सूर्य	24/03/1994	मंगल	02/10/2008	गुरु	30/03/2024	शनि	13/09/2040	केतु	14/02/2058
मंगल	04/09/1995	गुरु	08/06/2010	शनि	05/03/2026	केतु	25/11/2042	चंद्र	09/08/2060
गुरु	30/03/1997	शनि	30/03/2012	केतु	30/03/2028	चंद्र	30/03/2045	बुध	31/03/2063

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष	
31/03/2063		31/03/2074		31/03/2086		31/03/2099	
31/03/2074		31/03/2086		31/03/2099		00/00/0000	
सूर्य	15/04/2064	मंगल	27/06/2075	गुरु	14/09/2087	शनि	08/12/2100
मंगल	04/06/2065	गुरु	30/10/2076	शनि	09/04/2089	केतु	30/09/2102
गुरु	29/08/2066	शनि	12/04/2078	केतु	14/12/2090	चंद्र	31/08/2104
शनि	27/12/2067	केतु	31/10/2079	चंद्र	29/09/2092		00/00/0000
केतु	29/05/2069	चंद्र	26/06/2081	बुध	26/08/2094		00/00/0000
चंद्र	04/12/2070	बुध	31/03/2083	शुक्र	31/08/2096		00/00/0000
बुध	15/07/2072	शुक्र	08/02/2085	सूर्य	25/11/2097		00/00/0000
शुक्र	31/03/2074	सूर्य	31/03/2086	मंगल	31/03/2099		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
30/08/1988		03/09/1988		23/09/1990		24/11/1992		24/03/1994	
03/09/1988		23/09/1990		24/11/1992		24/03/1994		04/09/1995	
	00/00/0000	बुध	22/12/1988	शुक्र	24/01/1991	सूर्य	09/01/1993	मंगल	18/05/1994
	00/00/0000	शुक्र	18/04/1989	सूर्य	09/04/1991	मंगल	28/02/1993	गुरु	16/07/1994
	00/00/0000	सूर्य	28/06/1989	मंगल	30/06/1991	गुरु	24/04/1993	शनि	18/09/1994
	00/00/0000	मंगल	13/09/1989	गुरु	27/09/1991	शनि	21/06/1993	केतु	25/11/1994
	00/00/0000	गुरु	06/12/1989	शनि	01/01/1992	केतु	23/08/1993	चंद्र	06/02/1995
	00/00/0000	शनि	07/03/1990	केतु	13/04/1992	चंद्र	29/10/1993	बुध	25/04/1995
	30/08/1988	केतु	11/06/1990	चंद्र	31/07/1992	बुध	08/01/1994	शुक्र	16/07/1995
केतु	03/09/1988	चंद्र	23/09/1990	बुध	24/11/1992	शुक्र	24/03/1994	सूर्य	04/09/1995

शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र	
04/09/1995		30/03/1997		09/03/1999		02/04/2001		14/06/2003	
30/03/1997		09/03/1999		02/04/2001		14/06/2003		11/10/2005	
गुरु	07/11/1995	केतु	30/06/1997	चंद्र	21/06/1999	बुध	29/07/2001	शुक्र	24/10/2003
शनि	16/01/1996	चंद्र	06/10/1997	बुध	10/10/1999	शुक्र	01/12/2001	सूर्य	13/01/2004
केतु	30/03/1996	बुध	17/01/1998	शुक्र	04/02/2000	सूर्य	15/02/2002	मंगल	10/04/2004
चंद्र	17/06/1996	शुक्र	07/05/1998	सूर्य	16/04/2000	मंगल	09/05/2002	गुरु	14/07/2004
बुध	09/09/1996	सूर्य	14/07/1998	मंगल	03/07/2000	गुरु	07/08/2002	शनि	25/10/2004
शुक्र	07/12/1996	मंगल	25/09/1998	गुरु	26/09/2000	शनि	12/11/2002	केतु	12/02/2005
सूर्य	30/01/1997	गुरु	13/12/1998	शनि	26/12/2000	केतु	24/02/2003	चंद्र	09/06/2005
मंगल	30/03/1997	शनि	09/03/1999	केतु	02/04/2001	चंद्र	14/06/2003	बुध	11/10/2005

केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र	
11/10/2005		15/03/2007		02/10/2008		08/06/2010		30/03/2012	
15/03/2007		02/10/2008		08/06/2010		30/03/2012		14/06/2014	
सूर्य	30/11/2005	मंगल	13/05/2007	गुरु	10/12/2008	शनि	27/08/2010	चंद्र	19/07/2012
मंगल	23/01/2006	गुरु	15/07/2007	शनि	22/02/2009	केतु	20/11/2010	बुध	14/11/2012
गुरु	22/03/2006	शनि	22/09/2007	केतु	12/05/2009	चंद्र	19/02/2011	शुक्र	19/03/2013
शनि	23/05/2006	केतु	04/12/2007	चंद्र	05/08/2009	बुध	27/05/2011	सूर्य	04/06/2013
केतु	30/07/2006	चंद्र	20/02/2008	बुध	03/11/2009	शुक्र	07/09/2011	मंगल	26/08/2013
चंद्र	09/10/2006	बुध	13/05/2008	शुक्र	06/02/2010	सूर्य	09/11/2011	गुरु	25/11/2013
बुध	24/12/2006	शुक्र	09/08/2008	सूर्य	05/04/2010	मंगल	16/01/2012	शनि	02/03/2014
शुक्र	15/03/2007	सूर्य	02/10/2008	मंगल	08/06/2010	गुरु	30/03/2012	केतु	14/06/2014

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु	
14/06/2014		18/10/2016		12/04/2019		18/10/2020		14/06/2022	
18/10/2016		12/04/2019		18/10/2020		14/06/2022		30/03/2024	
बुध	18/10/2014	शुक्र	07/03/2017	सूर्य	04/06/2019	मंगल	19/12/2020	गुरु	26/08/2022
शुक्र	28/02/2015	सूर्य	01/06/2017	मंगल	31/07/2019	गुरु	25/02/2021	शनि	14/11/2022
सूर्य	20/05/2015	मंगल	03/09/2017	गुरु	01/10/2019	शनि	09/05/2021	केतु	06/02/2023
मंगल	16/08/2015	गुरु	14/12/2017	शनि	07/12/2019	केतु	26/07/2021	चंद्र	08/05/2023
गुरु	20/11/2015	शनि	02/04/2018	केतु	17/02/2020	चंद्र	17/10/2021	बुध	12/08/2023
शनि	03/03/2016	केतु	28/07/2018	चंद्र	03/05/2020	बुध	14/01/2022	शुक्र	21/11/2023
केतु	21/06/2016	चंद्र	30/11/2018	बुध	24/07/2020	शुक्र	18/04/2022	सूर्य	22/01/2024
चंद्र	18/10/2016	बुध	12/04/2019	शुक्र	18/10/2020	सूर्य	14/06/2022	मंगल	30/03/2024

चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
30/03/2024		05/03/2026		30/03/2028		26/09/2030		17/05/2033	
05/03/2026		30/03/2028		26/09/2030		17/05/2033		26/12/2034	
शनि	23/06/2024	केतु	11/06/2026	बुध	10/08/2028	शुक्र	23/02/2031	सूर्य	11/07/2033
केतु	22/09/2024	चंद्र	23/09/2026	शुक्र	30/12/2028	सूर्य	25/05/2031	मंगल	10/09/2033
चंद्र	29/12/2024	बुध	12/01/2027	सूर्य	26/03/2029	मंगल	02/09/2031	गुरु	15/11/2033
बुध	11/04/2025	शुक्र	09/05/2027	मंगल	28/06/2029	गुरु	19/12/2031	शनि	25/01/2034
शुक्र	29/07/2025	सूर्य	20/07/2027	गुरु	08/10/2029	शनि	13/04/2032	केतु	11/04/2034
सूर्य	04/10/2025	मंगल	06/10/2027	शनि	26/01/2030	केतु	15/08/2032	चंद्र	02/07/2034
मंगल	16/12/2025	गुरु	30/12/2027	केतु	23/05/2030	चंद्र	26/12/2032	बुध	26/09/2034
गुरु	05/03/2026	शनि	30/03/2028	चंद्र	26/09/2030	बुध	17/05/2033	शुक्र	26/12/2034

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
26/12/2034		29/09/2036		26/08/2038		13/09/2040		25/11/2042	
29/09/2036		26/08/2038		13/09/2040		25/11/2042		30/03/2045	
मंगल	03/03/2035	गुरु	16/12/2036	शनि	24/11/2038	केतु	26/12/2040	चंद्र	23/03/2043
गुरु	14/05/2035	शनि	10/03/2037	केतु	01/03/2039	चंद्र	15/04/2041	बुध	26/07/2043
शनि	30/07/2035	केतु	08/06/2037	चंद्र	12/06/2039	बुध	11/08/2041	शुक्र	06/12/2043
केतु	21/10/2035	चंद्र	12/09/2037	बुध	30/09/2039	शुक्र	14/12/2041	सूर्य	26/02/2044
चंद्र	18/01/2036	बुध	23/12/2037	शुक्र	24/01/2040	सूर्य	28/02/2042	मंगल	24/05/2044
बुध	21/04/2036	शुक्र	10/04/2038	सूर्य	04/04/2040	मंगल	22/05/2042	गुरु	28/08/2044
शुक्र	30/07/2036	सूर्य	15/06/2038	मंगल	21/06/2040	गुरु	20/08/2042	शनि	10/12/2044
सूर्य	29/09/2036	मंगल	26/08/2038	गुरु	13/09/2040	शनि	25/11/2042	केतु	30/03/2045

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
30/03/2045		14/01/2048		29/09/2049		10/08/2051		16/08/2053	
14/01/2048		29/09/2049		10/08/2051		16/08/2053		18/10/2055	
शुक्र	05/09/2045	सूर्य	14/03/2048	मंगल	08/12/2049	गुरु	01/11/2051	शनि	20/11/2053
सूर्य	10/12/2045	मंगल	17/05/2048	गुरु	22/02/2050	शनि	29/01/2052	केतु	02/03/2054
मंगल	26/03/2046	गुरु	26/07/2048	शनि	16/05/2050	केतु	03/05/2052	चंद्र	20/06/2054
गुरु	18/07/2046	शनि	09/10/2048	केतु	12/08/2050	चंद्र	12/08/2052	बुध	14/10/2054
शनि	18/11/2046	केतु	29/12/2048	चंद्र	13/11/2050	बुध	28/11/2052	शुक्र	14/02/2055
केतु	30/03/2047	चंद्र	25/03/2049	बुध	21/02/2051	शुक्र	23/03/2053	सूर्य	30/04/2055
चंद्र	18/08/2047	बुध	24/06/2049	शुक्र	07/06/2051	सूर्य	01/06/2053	मंगल	21/07/2055
बुध	14/01/2048	शुक्र	29/09/2049	सूर्य	10/08/2051	मंगल	16/08/2053	गुरु	18/10/2055

शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल	
18/10/2055		14/02/2058		09/08/2060		31/03/2063		15/04/2064	
14/02/2058		09/08/2060		31/03/2063		15/04/2064		04/06/2065	
केतु	05/02/2056	चंद्र	20/06/2058	बुध	28/12/2060	सूर्य	06/05/2063	मंगल	28/05/2064
चंद्र	01/06/2056	बुध	30/10/2058	शुक्र	27/05/2061	मंगल	14/06/2063	गुरु	13/07/2064
बुध	04/10/2056	शुक्र	20/03/2059	सूर्य	26/08/2061	गुरु	27/07/2063	शनि	02/09/2064
शुक्र	13/02/2057	सूर्य	14/06/2059	मंगल	04/12/2061	शनि	11/09/2063	केतु	25/10/2064
सूर्य	05/05/2057	मंगल	16/09/2059	गुरु	22/03/2062	केतु	30/10/2063	चंद्र	22/12/2064
मंगल	01/08/2057	गुरु	27/12/2059	शनि	16/07/2062	चंद्र	22/12/2063	बुध	20/02/2065
गुरु	04/11/2057	शनि	14/04/2060	केतु	18/11/2062	बुध	16/02/2064	शुक्र	26/04/2065
शनि	14/02/2058	केतु	09/08/2060	चंद्र	31/03/2063	शुक्र	15/04/2064	सूर्य	04/06/2065

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध	
04/06/2065		29/08/2066		27/12/2067		29/05/2069		04/12/2070	
29/08/2066		27/12/2067		29/05/2069		04/12/2070		15/07/2072	
गुरु	25/07/2065	शनि	26/10/2066	केतु	03/03/2068	चंद्र	14/08/2069	बुध	01/03/2071
शनि	17/09/2065	केतु	28/12/2066	चंद्र	13/05/2068	बुध	03/11/2069	शुक्र	31/05/2071
केतु	14/11/2065	चंद्र	05/03/2067	बुध	29/07/2068	शुक्र	28/01/2070	सूर्य	26/07/2071
चंद्र	16/01/2066	बुध	15/05/2067	शुक्र	17/10/2068	सूर्य	21/03/2070	मंगल	25/09/2071
बुध	23/03/2066	शुक्र	29/07/2067	सूर्य	05/12/2068	मंगल	18/05/2070	गुरु	30/11/2071
शुक्र	31/05/2066	सूर्य	13/09/2067	मंगल	28/01/2069	गुरु	19/07/2070	शनि	09/02/2072
सूर्य	13/07/2066	मंगल	02/11/2067	गुरु	27/03/2069	शनि	24/09/2070	केतु	25/04/2072
मंगल	29/08/2066	गुरु	27/12/2067	शनि	29/05/2069	केतु	04/12/2070	चंद्र	15/07/2072

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
15/07/2072		31/03/2074		27/06/2075		30/10/2076		12/04/2078	
31/03/2074		27/06/2075		30/10/2076		12/04/2078		31/10/2079	
शुक्र	20/10/2072	मंगल	16/05/2074	गुरु	21/08/2075	शनि	02/01/2077	केतु	24/06/2078
सूर्य	18/12/2072	गुरु	06/07/2074	शनि	19/10/2075	केतु	11/03/2077	चंद्र	11/09/2078
मंगल	20/02/2073	शनि	30/08/2074	केतु	22/12/2075	चंद्र	23/05/2077	बुध	03/12/2078
गुरु	01/05/2073	केतु	28/10/2074	चंद्र	28/02/2076	बुध	09/08/2077	शुक्र	01/03/2079
शनि	16/07/2073	चंद्र	29/12/2074	बुध	10/05/2076	शुक्र	30/10/2077	सूर्य	23/04/2079
केतु	04/10/2073	बुध	06/03/2075	शुक्र	25/07/2076	सूर्य	19/12/2077	मंगल	21/06/2079
चंद्र	29/12/2073	शुक्र	15/05/2075	सूर्य	09/09/2076	मंगल	12/02/2078	गुरु	23/08/2079
बुध	31/03/2074	सूर्य	27/06/2075	मंगल	30/10/2076	गुरु	12/04/2078	शनि	31/10/2079

मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु	
31/10/2079		26/06/2081		31/03/2083		08/02/2085		31/03/2086	
26/06/2081		31/03/2083		08/02/2085		31/03/2086		14/09/2087	
चंद्र	22/01/2080	बुध	29/09/2081	शुक्र	14/07/2083	सूर्य	19/03/2085	गुरु	29/05/2086
बुध	20/04/2080	शुक्र	06/01/2082	सूर्य	17/09/2083	मंगल	01/05/2085	शनि	01/08/2086
शुक्र	23/07/2080	सूर्य	08/03/2082	मंगल	26/11/2083	गुरु	17/06/2085	केतु	09/10/2086
सूर्य	18/09/2080	मंगल	14/05/2082	गुरु	10/02/2084	शनि	06/08/2085	चंद्र	22/12/2086
मंगल	20/11/2080	गुरु	25/07/2082	शनि	02/05/2084	केतु	29/09/2085	बुध	10/03/2087
गुरु	26/01/2081	शनि	10/10/2082	केतु	29/07/2084	चंद्र	25/11/2085	शुक्र	31/05/2087
शनि	09/04/2081	केतु	01/01/2083	चंद्र	31/10/2084	बुध	25/01/2086	सूर्य	21/07/2087
केतु	26/06/2081	चंद्र	31/03/2083	बुध	08/02/2085	शुक्र	31/03/2086	मंगल	14/09/2087

गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र	
14/09/2087		09/04/2089		14/12/2090		29/09/2092		26/08/2094	
09/04/2089		14/12/2090		29/09/2092		26/08/2094		31/08/2096	
शनि	22/11/2087	केतु	27/06/2089	चंद्र	14/03/2091	बुध	09/01/2093	शुक्र	18/12/2094
केतु	04/02/2088	चंद्र	20/09/2089	बुध	18/06/2091	शुक्र	27/04/2093	सूर्य	26/02/2095
चंद्र	23/04/2088	बुध	19/12/2089	शुक्र	28/09/2091	सूर्य	02/07/2093	मंगल	13/05/2095
बुध	16/07/2088	शुक्र	24/03/2090	सूर्य	29/11/2091	मंगल	12/09/2093	गुरु	04/08/2095
शुक्र	13/10/2088	सूर्य	21/05/2090	मंगल	05/02/2092	गुरु	29/11/2093	शनि	31/10/2095
सूर्य	06/12/2088	मंगल	24/07/2090	गुरु	18/04/2092	शनि	21/02/2094	केतु	04/02/2096
मंगल	03/02/2089	गुरु	01/10/2090	शनि	06/07/2092	केतु	22/05/2094	चंद्र	15/05/2096
गुरु	09/04/2089	शनि	14/12/2090	केतु	29/09/2092	चंद्र	26/08/2094	बुध	31/08/2096

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 6 वर्ष 11 मास 11 दिन

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
30/08/1988		11/08/1995		11/04/2000		11/08/2013		11/08/2017	
11/08/1995		11/04/2000		11/08/2013		11/08/2017		11/04/2024	
	00/00/0000	केतु	19/11/1995	शुक्र	01/07/2002	सूर्य	23/10/2013	चंद्र	02/03/2018
	00/00/0000	शुक्र	29/08/1996	सूर्य	02/03/2003	चंद्र	22/02/2014	मंगल	22/07/2018
	30/08/1988	सूर्य	22/11/1996	चंद्र	11/04/2004	मंगल	18/05/2014	राहु	22/07/2019
सूर्य	31/12/1988	चंद्र	13/04/1997	मंगल	20/01/2005	राहु	23/12/2014	गुरु	11/06/2020
चंद्र	11/12/1989	मंगल	21/07/1997	राहु	20/01/2007	गुरु	06/07/2015	शनि	01/07/2021
मंगल	09/08/1990	राहु	03/04/1998	गुरु	31/10/2008	शनि	22/02/2016	बुध	11/06/2022
राहु	21/04/1992	गुरु	16/11/1998	शनि	11/12/2010	बुध	16/09/2016	केतु	31/10/2022
गुरु	25/10/1993	शनि	13/08/1999	बुध	31/10/2012	केतु	10/12/2016	शुक्र	11/12/2023
शनि	11/08/1995	बुध	11/04/2000	केतु	11/08/2013	शुक्र	11/08/2017	सूर्य	11/04/2024

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
11/04/2024		10/12/2028		10/12/2040		11/08/2051		11/04/2064	
10/12/2028		10/12/2040		11/08/2051		11/04/2064		00/00/0000	
मंगल	19/07/2024	राहु	29/09/2030	गुरु	14/05/2042	शनि	13/08/2053	बुध	18/11/2065
राहु	01/04/2025	गुरु	05/05/2032	शनि	21/01/2044	बुध	30/05/2055	केतु	18/07/2066
गुरु	14/11/2025	शनि	30/03/2034	बुध	26/07/2045	केतु	24/02/2056	शुक्र	07/06/2068
शनि	11/08/2026	बुध	11/12/2035	केतु	10/03/2046	शुक्र	05/04/2058	सूर्य	30/08/2068
बुध	09/04/2027	केतु	23/08/2036	शुक्र	19/12/2047	सूर्य	22/11/2058		00/00/0000
केतु	18/07/2027	शुक्र	23/08/2038	सूर्य	01/07/2048	चंद्र	13/12/2059		00/00/0000
शुक्र	27/04/2028	सूर्य	30/03/2039	चंद्र	22/05/2049	मंगल	08/09/2060		00/00/0000
सूर्य	21/07/2028	चंद्र	30/03/2040	मंगल	04/01/2050	राहु	03/08/2062		00/00/0000
चंद्र	10/12/2028	मंगल	10/12/2040	राहु	11/08/2051	गुरु	11/04/2064		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
30/08/1988		31/12/1988		11/12/1989		09/08/1990		21/04/1992	
31/12/1988		11/12/1989		09/08/1990		21/04/1992		25/10/1993	
	00/00/0000	चंद्र	28/01/1989	मंगल	25/12/1989	राहु	10/11/1990	गुरु	03/07/1992
	00/00/0000	मंगल	17/02/1989	राहु	30/01/1990	गुरु	01/02/1991	शनि	29/09/1992
	00/00/0000	राहु	10/04/1989	गुरु	03/03/1990	शनि	10/05/1991	बुध	16/12/1992
	30/08/1988	गुरु	26/05/1989	शनि	10/04/1990	बुध	06/08/1991	केतु	17/01/1993
गुरु	13/09/1988	शनि	20/07/1989	बुध	14/05/1990	केतु	11/09/1991	शुक्र	19/04/1993
शनि	16/10/1988	बुध	07/09/1989	केतु	29/05/1990	शुक्र	24/12/1991	सूर्य	17/05/1993
बुध	14/11/1988	केतु	27/09/1989	शुक्र	08/07/1990	सूर्य	24/01/1992	चंद्र	02/07/1993
केतु	26/11/1988	शुक्र	23/11/1989	सूर्य	20/07/1990	चंद्र	16/03/1992	मंगल	03/08/1993
शुक्र	31/12/1988	सूर्य	11/12/1989	चंद्र	09/08/1990	मंगल	21/04/1992	राहु	25/10/1993

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
25/10/1993		11/08/1995		19/11/1995		29/08/1996		22/11/1996	
11/08/1995		19/11/1995		29/08/1996		22/11/1996		13/04/1997	
शनि	06/02/1994	केतु	17/08/1995	शुक्र	05/01/1996	सूर्य	02/09/1996	चंद्र	04/12/1996
बुध	09/05/1994	शुक्र	03/09/1995	सूर्य	19/01/1996	चंद्र	09/09/1996	मंगल	12/12/1996
केतु	17/06/1994	सूर्य	08/09/1995	चंद्र	12/02/1996	मंगल	14/09/1996	राहु	02/01/1997
शुक्र	04/10/1994	चंद्र	16/09/1995	मंगल	28/02/1996	राहु	27/09/1996	गुरु	21/01/1997
सूर्य	06/11/1994	मंगल	22/09/1995	राहु	11/04/1996	गुरु	08/10/1996	शनि	13/02/1997
चंद्र	30/12/1994	राहु	07/10/1995	गुरु	19/05/1996	शनि	22/10/1996	बुध	05/03/1997
मंगल	07/02/1995	गुरु	20/10/1995	शनि	03/07/1996	बुध	03/11/1996	केतु	13/03/1997
राहु	16/05/1995	शनि	05/11/1995	बुध	12/08/1996	केतु	08/11/1996	शुक्र	06/04/1997
गुरु	11/08/1995	बुध	19/11/1995	केतु	29/08/1996	शुक्र	22/11/1996	सूर्य	13/04/1997

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
13/04/1997		21/07/1997		03/04/1998		16/11/1998		13/08/1999	
21/07/1997		03/04/1998		16/11/1998		13/08/1999		11/04/2000	
मंगल	19/04/1997	राहु	29/08/1997	गुरु	03/05/1998	शनि	29/12/1998	बुध	16/09/1999
राहु	04/05/1997	गुरु	02/10/1997	शनि	08/06/1998	बुध	05/02/1999	केतु	01/10/1999
गुरु	17/05/1997	शनि	11/11/1997	बुध	11/07/1998	केतु	21/02/1999	शुक्र	10/11/1999
शनि	02/06/1997	बुध	18/12/1997	केतु	24/07/1998	शुक्र	07/04/1999	सूर्य	22/11/1999
बुध	16/06/1997	केतु	02/01/1998	शुक्र	31/08/1998	सूर्य	21/04/1999	चंद्र	12/12/1999
केतु	22/06/1997	शुक्र	13/02/1998	सूर्य	11/09/1998	चंद्र	13/05/1999	मंगल	26/12/1999
शुक्र	08/07/1997	सूर्य	26/02/1998	चंद्र	30/09/1998	मंगल	29/05/1999	राहु	31/01/2000
सूर्य	13/07/1997	चंद्र	19/03/1998	मंगल	13/10/1998	राहु	08/07/1999	गुरु	04/03/2000
चंद्र	21/07/1997	मंगल	03/04/1998	राहु	16/11/1998	गुरु	13/08/1999	शनि	11/04/2000

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
11/04/2000		01/07/2002		02/03/2003		11/04/2004		20/01/2005	
01/07/2002		02/03/2003		11/04/2004		20/01/2005		20/01/2007	
शुक्र	24/08/2000	सूर्य	14/07/2002	चंद्र	05/04/2003	मंगल	27/04/2004	राहु	09/05/2005
सूर्य	04/10/2000	चंद्र	03/08/2002	मंगल	28/04/2003	राहु	09/06/2004	गुरु	15/08/2005
चंद्र	10/12/2000	मंगल	17/08/2002	राहु	28/06/2003	गुरु	17/07/2004	शनि	08/12/2005
मंगल	27/01/2001	राहु	23/09/2002	गुरु	21/08/2003	शनि	31/08/2004	बुध	22/03/2006
राहु	28/05/2001	गुरु	25/10/2002	शनि	25/10/2003	बुध	10/10/2004	केतु	04/05/2006
गुरु	14/09/2001	शनि	03/12/2002	बुध	21/12/2003	केतु	27/10/2004	शुक्र	02/09/2006
शनि	20/01/2002	बुध	06/01/2003	केतु	14/01/2004	शुक्र	13/12/2004	सूर्य	09/10/2006
बुध	15/05/2002	केतु	20/01/2003	शुक्र	21/03/2004	सूर्य	27/12/2004	चंद्र	09/12/2006
केतु	01/07/2002	शुक्र	02/03/2003	सूर्य	11/04/2004	चंद्र	20/01/2005	मंगल	20/01/2007

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
20/01/2007		31/10/2008		11/12/2010		31/10/2012		11/08/2013	
31/10/2008		11/12/2010		31/10/2012		11/08/2013		23/10/2013	
गुरु	17/04/2007	शनि	02/03/2009	बुध	18/03/2011	केतु	16/11/2012	सूर्य	14/08/2013
शनि	29/07/2007	बुध	19/06/2009	केतु	28/04/2011	शुक्र	03/01/2013	चंद्र	20/08/2013
बुध	29/10/2007	केतु	03/08/2009	शुक्र	21/08/2011	सूर्य	17/01/2013	मंगल	25/08/2013
केतु	06/12/2007	शुक्र	09/12/2009	सूर्य	24/09/2011	चंद्र	09/02/2013	राहु	05/09/2013
शुक्र	23/03/2008	सूर्य	17/01/2010	चंद्र	21/11/2011	मंगल	26/02/2013	गुरु	14/09/2013
सूर्य	24/04/2008	चंद्र	22/03/2010	मंगल	31/12/2011	राहु	10/04/2013	शनि	26/09/2013
चंद्र	17/06/2008	मंगल	06/05/2010	राहु	12/04/2012	गुरु	18/05/2013	बुध	06/10/2013
मंगल	25/07/2008	राहु	30/08/2010	गुरु	13/07/2012	शनि	02/07/2013	केतु	11/10/2013
राहु	31/10/2008	गुरु	11/12/2010	शनि	31/10/2012	बुध	11/08/2013	शुक्र	23/10/2013

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
23/10/2013		22/02/2014		18/05/2014		23/12/2014		06/07/2015	
22/02/2014		18/05/2014		23/12/2014		06/07/2015		22/02/2016	
चंद्र	02/11/2013	मंगल	27/02/2014	राहु	20/06/2014	गुरु	18/01/2015	शनि	11/08/2015
मंगल	09/11/2013	राहु	11/03/2014	गुरु	19/07/2014	शनि	18/02/2015	बुध	13/09/2015
राहु	27/11/2013	गुरु	23/03/2014	शनि	23/08/2014	बुध	17/03/2015	केतु	27/09/2015
गुरु	14/12/2013	शनि	05/04/2014	बुध	23/09/2014	केतु	29/03/2015	शुक्र	04/11/2015
शनि	02/01/2014	बुध	17/04/2014	केतु	05/10/2014	शुक्र	30/04/2015	सूर्य	16/11/2015
बुध	19/01/2014	केतु	22/04/2014	शुक्र	11/11/2014	सूर्य	10/05/2015	चंद्र	05/12/2015
केतु	26/01/2014	शुक्र	06/05/2014	सूर्य	22/11/2014	चंद्र	26/05/2015	मंगल	19/12/2015
शुक्र	15/02/2014	सूर्य	11/05/2014	चंद्र	10/12/2014	मंगल	07/06/2015	राहु	22/01/2016
सूर्य	22/02/2014	चंद्र	18/05/2014	मंगल	23/12/2014	राहु	06/07/2015	गुरु	22/02/2016

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
22/02/2016		16/09/2016		10/12/2016		11/08/2017		02/03/2018	
16/09/2016		10/12/2016		11/08/2017		02/03/2018		22/07/2018	
बुध	22/03/2016	केतु	21/09/2016	शुक्र	20/01/2017	चंद्र	28/08/2017	मंगल	10/03/2018
केतु	03/04/2016	शुक्र	05/10/2016	सूर्य	01/02/2017	मंगल	09/09/2017	राहु	31/03/2018
शुक्र	08/05/2016	सूर्य	09/10/2016	चंद्र	21/02/2017	राहु	09/10/2017	गुरु	19/04/2018
सूर्य	18/05/2016	चंद्र	17/10/2016	मंगल	08/03/2017	गुरु	05/11/2017	शनि	12/05/2018
चंद्र	05/06/2016	मंगल	22/10/2016	राहु	13/04/2017	शनि	07/12/2017	बुध	01/06/2018
मंगल	17/06/2016	राहु	03/11/2016	गुरु	15/05/2017	बुध	05/01/2018	केतु	09/06/2018
राहु	18/07/2016	गुरु	15/11/2016	शनि	23/06/2017	केतु	17/01/2018	शुक्र	03/07/2018
गुरु	14/08/2016	शनि	28/11/2016	बुध	28/07/2017	शुक्र	20/02/2018	सूर्य	10/07/2018
शनि	16/09/2016	बुध	10/12/2016	केतु	11/08/2017	सूर्य	02/03/2018	चंद्र	22/07/2018

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
22/07/2018		22/07/2019		11/06/2020		01/07/2021		11/06/2022	
22/07/2019		11/06/2020		01/07/2021		11/06/2022		31/10/2022	
राहु	14/09/2018	गुरु	03/09/2019	शनि	11/08/2020	बुध	19/08/2021	केतु	19/06/2022
गुरु	02/11/2018	शनि	25/10/2019	बुध	04/10/2020	केतु	08/09/2021	शुक्र	13/07/2022
शनि	30/12/2018	बुध	10/12/2019	केतु	27/10/2020	शुक्र	05/11/2021	सूर्य	20/07/2022
बुध	20/02/2019	केतु	29/12/2019	शुक्र	30/12/2020	सूर्य	22/11/2021	चंद्र	01/08/2022
केतु	13/03/2019	शुक्र	21/02/2020	सूर्य	18/01/2021	चंद्र	21/12/2021	मंगल	09/08/2022
शुक्र	13/05/2019	सूर्य	08/03/2020	चंद्र	19/02/2021	मंगल	10/01/2022	राहु	31/08/2022
सूर्य	31/05/2019	चंद्र	04/04/2020	मंगल	14/03/2021	राहु	03/03/2022	गुरु	19/09/2022
चंद्र	01/07/2019	मंगल	23/04/2020	राहु	11/05/2021	गुरु	18/04/2022	शनि	11/10/2022
मंगल	22/07/2019	राहु	11/06/2020	गुरु	01/07/2021	शनि	11/06/2022	बुध	31/10/2022

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
31/10/2022		11/12/2023		11/04/2024		19/07/2024		01/04/2025	
11/12/2023		11/04/2024		19/07/2024		01/04/2025		14/11/2025	
शुक्र	07/01/2023	सूर्य	17/12/2023	मंगल	17/04/2024	राहु	27/08/2024	गुरु	01/05/2025
सूर्य	27/01/2023	चंद्र	27/12/2023	राहु	01/05/2024	गुरु	30/09/2024	शनि	06/06/2025
चंद्र	02/03/2023	मंगल	03/01/2024	गुरु	15/05/2024	शनि	09/11/2024	बुध	08/07/2025
मंगल	26/03/2023	राहु	22/01/2024	शनि	30/05/2024	बुध	15/12/2024	केतु	22/07/2025
राहु	25/05/2023	गुरु	07/02/2024	बुध	14/06/2024	केतु	30/12/2024	शुक्र	28/08/2025
गुरु	19/07/2023	शनि	26/02/2024	केतु	19/06/2024	शुक्र	11/02/2025	सूर्य	09/09/2025
शनि	21/09/2023	बुध	14/03/2024	शुक्र	06/07/2024	सूर्य	24/02/2025	चंद्र	28/09/2025
बुध	17/11/2023	केतु	21/03/2024	सूर्य	11/07/2024	चंद्र	17/03/2025	मंगल	11/10/2025
केतु	11/12/2023	शुक्र	11/04/2024	चंद्र	19/07/2024	मंगल	01/04/2025	राहु	14/11/2025

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
14/11/2025		11/08/2026		09/04/2027		18/07/2027		27/04/2028	
11/08/2026		09/04/2027		18/07/2027		27/04/2028		21/07/2028	
शनि	27/12/2025	बुध	14/09/2026	केतु	15/04/2027	शुक्र	03/09/2027	सूर्य	01/05/2028
बुध	03/02/2026	केतु	28/09/2026	शुक्र	02/05/2027	सूर्य	17/09/2027	चंद्र	08/05/2028
केतु	19/02/2026	शुक्र	08/11/2026	सूर्य	07/05/2027	चंद्र	11/10/2027	मंगल	13/05/2028
शुक्र	05/04/2026	सूर्य	20/11/2026	चंद्र	15/05/2027	मंगल	28/10/2027	राहु	26/05/2028
सूर्य	18/04/2026	चंद्र	10/12/2026	मंगल	21/05/2027	राहु	09/12/2027	गुरु	06/06/2028
चंद्र	11/05/2026	मंगल	24/12/2026	राहु	05/06/2027	गुरु	16/01/2028	शनि	20/06/2028
मंगल	27/05/2026	राहु	29/01/2027	गुरु	18/06/2027	शनि	01/03/2028	बुध	02/07/2028
राहु	06/07/2026	गुरु	02/03/2027	शनि	04/07/2027	बुध	10/04/2028	केतु	07/07/2028
गुरु	11/08/2026	शनि	09/04/2027	बुध	18/07/2027	केतु	27/04/2028	शुक्र	21/07/2028

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
21/07/2028		10/12/2028		29/09/2030		05/05/2032		30/03/2034	
10/12/2028		29/09/2030		05/05/2032		30/03/2034		11/12/2035	
चंद्र	02/08/2028	राहु	19/03/2029	गुरु	16/12/2030	शनि	23/08/2032	बुध	26/06/2034
मंगल	10/08/2028	गुरु	15/06/2029	शनि	18/03/2031	बुध	29/11/2032	केतु	01/08/2034
राहु	01/09/2028	शनि	27/09/2029	बुध	09/06/2031	केतु	09/01/2033	शुक्र	13/11/2034
गुरु	20/09/2028	बुध	29/12/2029	केतु	13/07/2031	शुक्र	04/05/2033	सूर्य	14/12/2034
शनि	12/10/2028	केतु	05/02/2030	शुक्र	18/10/2031	सूर्य	08/06/2033	चंद्र	04/02/2035
बुध	01/11/2028	शुक्र	26/05/2030	सूर्य	17/11/2031	चंद्र	05/08/2033	मंगल	12/03/2035
केतु	09/11/2028	सूर्य	28/06/2030	चंद्र	04/01/2032	मंगल	14/09/2033	राहु	13/06/2035
शुक्र	03/12/2028	चंद्र	21/08/2030	मंगल	07/02/2032	राहु	28/12/2033	गुरु	04/09/2035
सूर्य	10/12/2028	मंगल	29/09/2030	राहु	05/05/2032	गुरु	30/03/2034	शनि	11/12/2035

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
11/12/2035		23/08/2036		23/08/2038		30/03/2039		30/03/2040	
23/08/2036		23/08/2038		30/03/2039		30/03/2040		10/12/2040	
केतु	26/12/2035	शुक्र	22/12/2036	सूर्य	03/09/2038	चंद्र	30/04/2039	मंगल	13/04/2040
शुक्र	07/02/2036	सूर्य	28/01/2037	चंद्र	21/09/2038	मंगल	21/05/2039	राहु	22/05/2040
सूर्य	19/02/2036	चंद्र	30/03/2037	मंगल	04/10/2038	राहु	15/07/2039	गुरु	25/06/2040
चंद्र	12/03/2036	मंगल	11/05/2037	राहु	06/11/2038	गुरु	02/09/2039	शनि	04/08/2040
मंगल	27/03/2036	राहु	29/08/2037	गुरु	05/12/2038	शनि	29/10/2039	बुध	10/09/2040
राहु	04/05/2036	गुरु	04/12/2037	शनि	09/01/2039	बुध	20/12/2039	केतु	25/09/2040
गुरु	07/06/2036	शनि	30/03/2038	बुध	09/02/2039	केतु	10/01/2040	शुक्र	06/11/2040
शनि	17/07/2036	बुध	12/07/2038	केतु	22/02/2039	शुक्र	11/03/2040	सूर्य	19/11/2040
बुध	23/08/2036	केतु	23/08/2038	शुक्र	30/03/2039	सूर्य	30/03/2040	चंद्र	10/12/2040

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
10/12/2040		14/05/2042		21/01/2044		26/07/2045		10/03/2046	
14/05/2042		21/01/2044		26/07/2045		10/03/2046		19/12/2047	
गुरु	18/02/2041	शनि	19/08/2042	बुध	08/04/2044	केतु	08/08/2045	शुक्र	26/06/2046
शनि	11/05/2041	बुध	15/11/2042	केतु	10/05/2044	शुक्र	15/09/2045	सूर्य	28/07/2046
बुध	23/07/2041	केतु	21/12/2042	शुक्र	10/08/2044	सूर्य	26/09/2045	चंद्र	21/09/2046
केतु	23/08/2041	शुक्र	03/04/2043	सूर्य	07/09/2044	चंद्र	15/10/2045	मंगल	28/10/2046
शुक्र	17/11/2041	सूर्य	03/05/2043	चंद्र	23/10/2044	मंगल	28/10/2045	राहु	03/02/2047
सूर्य	13/12/2041	चंद्र	24/06/2043	मंगल	24/11/2044	राहु	01/12/2045	गुरु	30/04/2047
चंद्र	25/01/2042	मंगल	30/07/2043	राहु	15/02/2045	गुरु	01/01/2046	शनि	11/08/2047
मंगल	25/02/2042	राहु	30/10/2043	गुरु	29/04/2045	शनि	06/02/2046	बुध	11/11/2047
राहु	14/05/2042	गुरु	21/01/2044	शनि	26/07/2045	बुध	10/03/2046	केतु	19/12/2047

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
19/12/2047		01/07/2048		22/05/2049		04/01/2050		11/08/2051	
01/07/2048		22/05/2049		04/01/2050		11/08/2051		13/08/2053	
सूर्य	29/12/2047	चंद्र	28/07/2048	मंगल	04/06/2049	राहु	02/04/2050	शनि	05/12/2051
चंद्र	14/01/2048	मंगल	16/08/2048	राहु	08/07/2049	गुरु	18/06/2050	बुध	18/03/2052
मंगल	25/01/2048	राहु	04/10/2048	गुरु	07/08/2049	शनि	19/09/2050	केतु	30/04/2052
राहु	24/02/2048	गुरु	16/11/2048	शनि	12/09/2049	बुध	11/12/2050	शुक्र	30/08/2052
गुरु	21/03/2048	शनि	06/01/2049	बुध	14/10/2049	केतु	14/01/2051	सूर्य	05/10/2052
शनि	20/04/2048	बुध	21/02/2049	केतु	28/10/2049	शुक्र	21/04/2051	चंद्र	06/12/2052
बुध	18/05/2048	केतु	12/03/2049	शुक्र	05/12/2049	सूर्य	20/05/2051	मंगल	17/01/2053
केतु	29/05/2048	शुक्र	05/05/2049	सूर्य	16/12/2049	चंद्र	08/07/2051	राहु	07/05/2053
शुक्र	01/07/2048	सूर्य	22/05/2049	चंद्र	04/01/2050	मंगल	11/08/2051	गुरु	13/08/2053

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
13/08/2053		30/05/2055		24/02/2056		05/04/2058		22/11/2058	
30/05/2055		24/02/2056		05/04/2058		22/11/2058		13/12/2059	
बुध	14/11/2053	केतु	15/06/2055	शुक्र	02/07/2056	सूर्य	17/04/2058	चंद्र	25/12/2058
केतु	22/12/2053	शुक्र	30/07/2055	सूर्य	09/08/2056	चंद्र	06/05/2058	मंगल	16/01/2059
शुक्र	10/04/2054	सूर्य	12/08/2055	चंद्र	12/10/2056	मंगल	20/05/2058	राहु	15/03/2059
सूर्य	13/05/2054	चंद्र	04/09/2055	मंगल	26/11/2056	राहु	23/06/2058	गुरु	05/05/2059
चंद्र	06/07/2054	मंगल	20/09/2055	राहु	22/03/2057	गुरु	24/07/2058	शनि	05/07/2059
मंगल	14/08/2054	राहु	30/10/2055	गुरु	03/07/2057	शनि	30/08/2058	बुध	29/08/2059
राहु	20/11/2054	गुरु	05/12/2055	शनि	02/11/2057	बुध	01/10/2058	केतु	20/09/2059
गुरु	15/02/2055	शनि	17/01/2056	बुध	19/02/2058	केतु	15/10/2058	शुक्र	24/11/2059
शनि	30/05/2055	बुध	24/02/2056	केतु	05/04/2058	शुक्र	22/11/2058	सूर्य	13/12/2059

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 13 वर्ष 8 मास 18 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
30/08/1988		19/05/2002		19/05/2008		20/05/2023		20/05/2031	
19/05/2002		19/05/2008		20/05/2023		20/05/2031		19/05/2048	
	00/00/0000	सूर्य	18/09/2002	चंद्र	19/06/2010	मंगल	22/12/2023	बुध	21/01/2034
	30/08/1988	चंद्र	20/07/2003	मंगल	30/07/2011	बुध	26/03/2025	शनि	19/08/2035
चंद्र	19/07/1989	मंगल	29/12/2003	बुध	08/12/2013	शनि	22/12/2025	गुरु	15/08/2038
मंगल	07/02/1991	बुध	08/12/2004	शनि	29/04/2015	गुरु	20/05/2027	राहु	05/07/2040
बुध	30/05/1994	शनि	29/06/2005	गुरु	18/12/2017	राहु	08/04/2028	शुक्र	26/10/2043
शनि	09/05/1996	गुरु	19/07/2006	राहु	19/08/2019	शुक्र	29/10/2029	सूर्य	05/10/2044
गुरु	18/01/2000	राहु	20/03/2007	शुक्र	19/07/2022	सूर्य	09/04/2030	चंद्र	14/02/2047
राहु	19/05/2002	शुक्र	19/05/2008	सूर्य	20/05/2023	चंद्र	20/05/2031	मंगल	19/05/2048

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
19/05/2048		19/05/2058		19/05/2077		19/05/2089	
19/05/2058		19/05/2077		19/05/2089		00/00/0000	
शनि	22/04/2049	गुरु	21/09/2061	राहु	18/09/2078	शुक्र	19/06/2093
गुरु	25/01/2051	राहु	01/11/2063	शुक्र	17/01/2081	सूर्य	19/08/2094
राहु	06/03/2052	शुक्र	13/07/2067	सूर्य	18/09/2081	चंद्र	30/08/2096
शुक्र	14/02/2054	सूर्य	01/08/2068	चंद्र	20/05/2083		00/00/0000
सूर्य	05/09/2054	चंद्र	23/03/2071	मंगल	08/04/2084		00/00/0000
चंद्र	25/01/2056	मंगल	18/08/2072	बुध	27/02/2086		00/00/0000
मंगल	21/10/2056	बुध	16/08/2075	शनि	09/04/2087		00/00/0000
बुध	19/05/2058	शनि	19/05/2077	गुरु	19/05/2089		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु	
30/08/1988		19/07/1989		07/02/1991		30/05/1994		09/05/1996	
19/07/1989		07/02/1991		30/05/1994		09/05/1996		18/01/2000	
	00/00/0000	मंगल	30/08/1989	बुध	16/08/1991	शनि	03/08/1994	गुरु	01/01/1997
	00/00/0000	बुध	28/11/1989	शनि	06/12/1991	गुरु	06/12/1994	राहु	31/05/1997
	00/00/0000	शनि	19/01/1990	गुरु	05/07/1992	राहु	23/02/1995	शुक्र	17/02/1998
	00/00/0000	गुरु	29/04/1990	राहु	17/11/1992	शुक्र	11/07/1995	सूर्य	03/05/1998
	30/08/1988	राहु	01/07/1990	शुक्र	09/07/1993	सूर्य	20/08/1995	चंद्र	07/11/1998
राहु	26/10/1988	शुक्र	20/10/1990	सूर्य	14/09/1993	चंद्र	26/11/1995	मंगल	15/02/1999
शुक्र	21/05/1989	सूर्य	20/11/1990	चंद्र	01/03/1994	मंगल	18/01/1996	बुध	15/09/1999
सूर्य	19/07/1989	चंद्र	07/02/1991	मंगल	30/05/1994	बुध	09/05/1996	शनि	18/01/2000

शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध	
18/01/2000		19/05/2002		18/09/2002		20/07/2003		29/12/2003	
19/05/2002		18/09/2002		20/07/2003		29/12/2003		08/12/2004	
राहु	22/04/2000	सूर्य	26/05/2002	चंद्र	30/10/2002	मंगल	01/08/2003	बुध	21/02/2004
शुक्र	05/10/2000	चंद्र	12/06/2002	मंगल	22/11/2002	बुध	26/08/2003	शनि	24/03/2004
सूर्य	21/11/2000	मंगल	21/06/2002	बुध	09/01/2003	शनि	10/09/2003	गुरु	24/05/2004
चंद्र	19/03/2001	बुध	10/07/2002	शनि	06/02/2003	गुरु	09/10/2003	राहु	01/07/2004
मंगल	21/05/2001	शनि	22/07/2002	गुरु	01/04/2003	राहु	27/10/2003	शुक्र	06/09/2004
बुध	03/10/2001	गुरु	12/08/2002	राहु	04/05/2003	शुक्र	27/11/2003	सूर्य	25/09/2004
शनि	20/12/2001	राहु	26/08/2002	शुक्र	03/07/2003	सूर्य	06/12/2003	चंद्र	12/11/2004
गुरु	19/05/2002	शुक्र	18/09/2002	सूर्य	20/07/2003	चंद्र	29/12/2003	मंगल	08/12/2004

सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
08/12/2004		29/06/2005		19/07/2006		20/03/2007		19/05/2008	
29/06/2005		19/07/2006		20/03/2007		19/05/2008		19/06/2010	
शनि	27/12/2004	गुरु	05/09/2005	राहु	15/08/2006	शुक्र	11/06/2007	चंद्र	02/09/2008
गुरु	31/01/2005	राहु	17/10/2005	शुक्र	02/10/2006	सूर्य	04/07/2007	मंगल	28/10/2008
राहु	23/02/2005	शुक्र	31/12/2005	सूर्य	15/10/2006	चंद्र	02/09/2007	बुध	25/02/2009
शुक्र	03/04/2005	सूर्य	22/01/2006	चंद्र	18/11/2006	मंगल	03/10/2007	शनि	06/05/2009
सूर्य	15/04/2005	चंद्र	16/03/2006	मंगल	06/12/2006	बुध	09/12/2007	गुरु	17/09/2009
चंद्र	13/05/2005	मंगल	14/04/2006	बुध	13/01/2007	शनि	18/01/2008	राहु	11/12/2009
मंगल	28/05/2005	बुध	14/06/2006	शनि	05/02/2007	गुरु	02/04/2008	शुक्र	08/05/2010
बुध	29/06/2005	शनि	19/07/2006	गुरु	20/03/2007	राहु	19/05/2008	सूर्य	19/06/2010

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु	
19/06/2010		30/07/2011		08/12/2013		29/04/2015		18/12/2017	
30/07/2011		08/12/2013		29/04/2015		18/12/2017		19/08/2019	
मंगल	19/07/2010	बुध	12/12/2011	शनि	24/01/2014	गुरु	16/10/2015	राहु	24/02/2018
बुध	21/09/2010	शनि	01/03/2012	गुरु	23/04/2014	राहु	31/01/2016	शुक्र	22/06/2018
शनि	28/10/2010	गुरु	31/07/2012	राहु	19/06/2014	शुक्र	05/08/2016	सूर्य	26/07/2018
गुरु	08/01/2011	राहु	04/11/2012	शुक्र	25/09/2014	सूर्य	28/09/2016	चंद्र	19/10/2018
राहु	22/02/2011	शुक्र	21/04/2013	सूर्य	23/10/2014	चंद्र	09/02/2017	मंगल	03/12/2018
शुक्र	12/05/2011	सूर्य	07/06/2013	चंद्र	02/01/2015	मंगल	21/04/2017	बुध	09/03/2019
सूर्य	03/06/2011	चंद्र	05/10/2013	मंगल	09/02/2015	बुध	20/09/2017	शनि	04/05/2019
चंद्र	30/07/2011	मंगल	08/12/2013	बुध	29/04/2015	शनि	18/12/2017	गुरु	19/08/2019

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
19/08/2019		19/07/2022		20/05/2023		22/12/2023		26/03/2025	
19/07/2022		20/05/2023		22/12/2023		26/03/2025		22/12/2025	
शुक्र	13/03/2020	सूर्य	05/08/2022	मंगल	05/06/2023	बुध	04/03/2024	शनि	20/04/2025
सूर्य	11/05/2020	चंद्र	16/09/2022	बुध	09/07/2023	शनि	15/04/2024	गुरु	07/06/2025
चंद्र	06/10/2020	मंगल	09/10/2022	शनि	29/07/2023	गुरु	05/07/2024	राहु	07/07/2025
मंगल	24/12/2020	बुध	26/11/2022	गुरु	05/09/2023	राहु	25/08/2024	शुक्र	28/08/2025
बुध	10/06/2021	शनि	24/12/2022	राहु	29/09/2023	शुक्र	23/11/2024	सूर्य	12/09/2025
शनि	17/09/2021	गुरु	16/02/2023	शुक्र	10/11/2023	सूर्य	18/12/2024	चंद्र	20/10/2025
गुरु	23/03/2022	राहु	21/03/2023	सूर्य	22/11/2023	चंद्र	20/02/2025	मंगल	09/11/2025
राहु	19/07/2022	शुक्र	20/05/2023	चंद्र	22/12/2023	मंगल	26/03/2025	बुध	22/12/2025

मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
22/12/2025		20/05/2027		08/04/2028		29/10/2029		09/04/2030	
20/05/2027		08/04/2028		29/10/2029		09/04/2030		20/05/2031	
गुरु	22/03/2026	राहु	25/06/2027	शुक्र	28/07/2028	सूर्य	07/11/2029	चंद्र	04/06/2030
राहु	18/05/2026	शुक्र	27/08/2027	सूर्य	28/08/2028	चंद्र	29/11/2029	मंगल	04/07/2030
शुक्र	26/08/2026	सूर्य	14/09/2027	चंद्र	15/11/2028	मंगल	11/12/2029	बुध	06/09/2030
सूर्य	24/09/2026	चंद्र	29/10/2027	मंगल	27/12/2028	बुध	06/01/2030	शनि	14/10/2030
चंद्र	04/12/2026	मंगल	22/11/2027	बुध	27/03/2029	शनि	21/01/2030	गुरु	24/12/2030
मंगल	11/01/2027	बुध	12/01/2028	शनि	18/05/2029	गुरु	18/02/2030	राहु	07/02/2031
बुध	02/04/2027	शनि	11/02/2028	गुरु	26/08/2029	राहु	08/03/2030	शुक्र	27/04/2031
शनि	20/05/2027	गुरु	08/04/2028	राहु	29/10/2029	शुक्र	09/04/2030	सूर्य	20/05/2031

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध	
20/05/2031	
21/01/2034	
बुध	21/10/2031
शनि	19/01/2032
गुरु	09/07/2032
राहु	26/10/2032
शुक्र	04/05/2033
सूर्य	27/06/2033
चंद्र	10/11/2033
मंगल	21/01/2034

बुध - शनि	
21/01/2034	
19/08/2035	
शनि	15/03/2034
गुरु	24/06/2034
राहु	27/08/2034
शुक्र	17/12/2034
सूर्य	18/01/2035
चंद्र	08/04/2035
मंगल	20/05/2035
बुध	19/08/2035

बुध - गुरु	
19/08/2035	
15/08/2038	
गुरु	27/02/2036
राहु	28/06/2036
शुक्र	26/01/2037
सूर्य	28/03/2037
चंद्र	26/08/2037
मंगल	15/11/2037
बुध	06/05/2038
शनि	15/08/2038

बुध - राहु	
15/08/2038	
05/07/2040	
राहु	31/10/2038
शुक्र	14/03/2039
सूर्य	21/04/2039
चंद्र	26/07/2039
मंगल	15/09/2039
बुध	02/01/2040
शनि	06/03/2040
गुरु	05/07/2040

बुध - शुक्र	
05/07/2040	
26/10/2043	
शुक्र	25/02/2041
सूर्य	03/05/2041
चंद्र	18/10/2041
मंगल	15/01/2042
बुध	24/07/2042
शनि	13/11/2042
गुरु	13/06/2043
राहु	26/10/2043

बुध - सूर्य	
26/10/2043	
05/10/2044	
सूर्य	14/11/2043
चंद्र	01/01/2044
मंगल	26/01/2044
बुध	21/03/2044
शनि	21/04/2044
गुरु	21/06/2044
राहु	30/07/2044
शुक्र	05/10/2044

बुध - चंद्र	
05/10/2044	
14/02/2047	
चंद्र	01/02/2045
मंगल	06/04/2045
बुध	20/08/2045
शनि	08/11/2045
गुरु	09/04/2046
राहु	13/07/2046
शुक्र	28/12/2046
सूर्य	14/02/2047

बुध - मंगल	
14/02/2047	
19/05/2048	
मंगल	20/03/2047
बुध	31/05/2047
शनि	13/07/2047
गुरु	02/10/2047
राहु	22/11/2047
शुक्र	19/02/2048
सूर्य	16/03/2048
चंद्र	19/05/2048

शनि - शनि	
19/05/2048	
22/04/2049	
शनि	19/06/2048
गुरु	18/08/2048
राहु	24/09/2048
शुक्र	29/11/2048
सूर्य	18/12/2048
चंद्र	03/02/2049
मंगल	28/02/2049
बुध	22/04/2049

शनि - गुरु	
22/04/2049	
25/01/2051	
गुरु	13/08/2049
राहु	24/10/2049
शुक्र	26/02/2050
सूर्य	02/04/2050
चंद्र	30/06/2050
मंगल	17/08/2050
बुध	26/11/2050
शनि	25/01/2051

शनि - राहु	
25/01/2051	
06/03/2052	
राहु	11/03/2051
शुक्र	29/05/2051
सूर्य	20/06/2051
चंद्र	16/08/2051
मंगल	15/09/2051
बुध	18/11/2051
शनि	25/12/2051
गुरु	06/03/2052

शनि - शुक्र	
06/03/2052	
14/02/2054	
शुक्र	22/07/2052
सूर्य	30/08/2052
चंद्र	07/12/2052
मंगल	28/01/2053
बुध	20/05/2053
शनि	25/07/2053
गुरु	27/11/2053
राहु	14/02/2054

शनि - सूर्य	
14/02/2054	
05/09/2054	
सूर्य	25/02/2054
चंद्र	25/03/2054
मंगल	09/04/2054
बुध	11/05/2054
शनि	30/05/2054
गुरु	05/07/2054
राहु	27/07/2054
शुक्र	05/09/2054

शनि - चंद्र	
05/09/2054	
25/01/2056	
चंद्र	14/11/2054
मंगल	22/12/2054
बुध	12/03/2055
शनि	28/04/2055
गुरु	26/07/2055
राहु	20/09/2055
शुक्र	28/12/2055
सूर्य	25/01/2056

शनि - मंगल	
25/01/2056	
21/10/2056	
मंगल	14/02/2056
बुध	28/03/2056
शनि	22/04/2056
गुरु	08/06/2056
राहु	08/07/2056
शुक्र	30/08/2056
सूर्य	14/09/2056
चंद्र	21/10/2056

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
21/10/2056		19/05/2058		21/09/2061		01/11/2063		13/07/2067	
19/05/2058		21/09/2061		01/11/2063		13/07/2067		01/08/2068	
बुध	20/01/2057	गुरु	20/12/2058	राहु	16/12/2061	शुक्र	21/07/2064	सूर्य	03/08/2067
शनि	14/03/2057	राहु	05/05/2059	शुक्र	15/05/2062	सूर्य	04/10/2064	चंद्र	26/09/2067
गुरु	23/06/2057	शुक्र	28/12/2059	सूर्य	27/06/2062	चंद्र	09/04/2065	मंगल	24/10/2067
राहु	26/08/2057	सूर्य	05/03/2060	चंद्र	12/10/2062	मंगल	18/07/2065	बुध	24/12/2067
शुक्र	16/12/2057	चंद्र	22/08/2060	मंगल	08/12/2062	बुध	16/02/2066	शनि	29/01/2068
सूर्य	17/01/2058	मंगल	20/11/2060	बुध	08/04/2063	शनि	20/06/2066	गुरु	06/04/2068
चंद्र	07/04/2058	बुध	31/05/2061	शनि	19/06/2063	गुरु	13/02/2067	राहु	18/05/2068
मंगल	19/05/2058	शनि	21/09/2061	गुरु	01/11/2063	राहु	13/07/2067	शुक्र	01/08/2068

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु	
01/08/2068		23/03/2071		18/08/2072		16/08/2075		19/05/2077	
23/03/2071		18/08/2072		16/08/2075		19/05/2077		18/09/2078	
चंद्र	13/12/2068	मंगल	30/04/2071	बुध	06/02/2073	शनि	14/10/2075	राहु	12/07/2077
मंगल	23/02/2069	बुध	20/07/2071	शनि	18/05/2073	गुरु	04/02/2076	शुक्र	15/10/2077
बुध	24/07/2069	शनि	06/09/2071	गुरु	27/11/2073	राहु	16/04/2076	सूर्य	11/11/2077
शनि	22/10/2069	गुरु	05/12/2071	राहु	28/03/2074	शुक्र	18/08/2076	चंद्र	18/01/2078
गुरु	09/04/2070	राहु	31/01/2072	शुक्र	26/10/2074	सूर्य	23/09/2076	मंगल	23/02/2078
राहु	25/07/2070	शुक्र	10/05/2072	सूर्य	26/12/2074	चंद्र	21/12/2076	बुध	10/05/2078
शुक्र	29/01/2071	सूर्य	08/06/2072	चंद्र	27/05/2075	मंगल	07/02/2077	शनि	24/06/2078
सूर्य	23/03/2071	चंद्र	18/08/2072	मंगल	16/08/2075	बुध	19/05/2077	गुरु	18/09/2078

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध	
18/09/2078		17/01/2081		18/09/2081		20/05/2083		08/04/2084	
17/01/2081		18/09/2081		20/05/2083		08/04/2084		27/02/2086	
शुक्र	03/03/2079	सूर्य	31/01/2081	चंद्र	11/12/2081	मंगल	13/06/2083	बुध	26/07/2084
सूर्य	19/04/2079	चंद्र	06/03/2081	मंगल	26/01/2082	बुध	03/08/2083	शनि	28/09/2084
चंद्र	16/08/2079	मंगल	24/03/2081	बुध	01/05/2082	शनि	02/09/2083	गुरु	27/01/2085
मंगल	18/10/2079	बुध	01/05/2081	शनि	27/06/2082	गुरु	29/10/2083	राहु	14/04/2085
बुध	29/02/2080	शनि	24/05/2081	गुरु	12/10/2082	राहु	04/12/2083	शुक्र	26/08/2085
शनि	18/05/2080	गुरु	06/07/2081	राहु	18/12/2082	शुक्र	05/02/2084	सूर्य	03/10/2085
गुरु	15/10/2080	राहु	02/08/2081	शुक्र	16/04/2083	सूर्य	23/02/2084	चंद्र	07/01/2086
राहु	17/01/2081	शुक्र	18/09/2081	सूर्य	20/05/2083	चंद्र	08/04/2084	मंगल	27/02/2086

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 3 वर्ष 8 मास 4 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
30/08/1988		04/05/1992		05/05/1999		05/05/2007		04/05/2008	
04/05/1992		05/05/1999		05/05/2007		04/05/2008		05/05/2010	
	00/00/0000	सिद्ध	13/09/1993	संक	12/02/2001	मंग	15/05/2007	पिंग	14/06/2008
	30/08/1988	संक	05/04/1995	मंग	04/05/2001	पिंग	04/06/2007	धांय	14/08/2008
संक	03/11/1989	मंग	15/06/1995	पिंग	14/10/2001	धांय	05/07/2007	भ्राम	03/11/2008
मंग	03/01/1990	पिंग	04/11/1995	धांय	14/06/2002	भ्राम	14/08/2007	भद्रि	12/02/2009
पिंग	05/05/1990	धांय	04/06/1996	भ्राम	05/05/2003	भद्रि	04/10/2007	उल्क	14/06/2009
धांय	03/11/1990	भ्राम	15/03/1997	भद्रि	14/06/2004	उल्क	04/12/2007	सिद्ध	03/11/2009
भ्राम	05/07/1991	भद्रि	05/03/1998	उल्क	14/10/2005	सिद्ध	13/02/2008	संक	14/04/2010
भद्रि	04/05/1992	उल्क	05/05/1999	सिद्ध	05/05/2007	संक	04/05/2008	मंग	05/05/2010

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
05/05/2010		04/05/2013		04/05/2017		05/05/2022		04/05/2028	
04/05/2013		04/05/2017		05/05/2022		04/05/2028		05/05/2035	
धांय	04/08/2010	भ्राम	14/10/2013	भद्रि	13/01/2018	उल्क	05/05/2023	सिद्ध	13/09/2029
भ्राम	04/12/2010	भद्रि	05/05/2014	उल्क	13/11/2018	सिद्ध	04/07/2024	संक	05/04/2031
भद्रि	05/05/2011	उल्क	03/01/2015	सिद्ध	04/11/2019	संक	03/11/2025	मंग	15/06/2031
उल्क	04/11/2011	सिद्ध	14/10/2015	संक	13/12/2020	मंग	03/01/2026	पिंग	04/11/2031
सिद्ध	04/06/2012	संक	03/09/2016	मंग	02/02/2021	पिंग	05/05/2026	धांय	04/06/2032
संक	02/02/2013	मंग	14/10/2016	पिंग	15/05/2021	धांय	03/11/2026	भ्राम	15/03/2033
मंग	05/03/2013	पिंग	03/01/2017	धांय	14/10/2021	भ्राम	05/07/2027	भद्रि	05/03/2034
पिंग	04/05/2013	धांय	04/05/2017	भ्राम	05/05/2022	भद्रि	04/05/2028	उल्क	05/05/2035

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
05/05/2035		05/05/2043		04/05/2044		05/05/2046		04/05/2049	
05/05/2043		04/05/2044		05/05/2046		04/05/2049		04/05/2053	
संक	12/02/2037	मंग	15/05/2043	पिंग	14/06/2044	धांय	04/08/2046	भ्राम	14/10/2049
मंग	04/05/2037	पिंग	04/06/2043	धांय	14/08/2044	भ्राम	04/12/2046	भद्रि	05/05/2050
पिंग	14/10/2037	धांय	05/07/2043	भ्राम	03/11/2044	भद्रि	05/05/2047	उल्क	03/01/2051
धांय	14/06/2038	भ्राम	14/08/2043	भद्रि	12/02/2045	उल्क	04/11/2047	सिद्ध	14/10/2051
भ्राम	05/05/2039	भद्रि	04/10/2043	उल्क	14/06/2045	सिद्ध	04/06/2048	संक	03/09/2052
भद्रि	14/06/2040	उल्क	04/12/2043	सिद्ध	03/11/2045	संक	02/02/2049	मंग	14/10/2052
उल्क	14/10/2041	सिद्ध	13/02/2044	संक	14/04/2046	मंग	05/03/2049	पिंग	03/01/2053
सिद्ध	05/05/2043	संक	04/05/2044	मंग	05/05/2046	पिंग	04/05/2049	धांय	04/05/2053

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
04/05/2053		05/05/2058		04/05/2064		05/05/2071		05/05/2079	
05/05/2058		04/05/2064		05/05/2071		05/05/2079		04/05/2080	
भद्रि	13/01/2054	उल्क	05/05/2059	सिद्ध	13/09/2065	संक	12/02/2073	मंग	15/05/2079
उल्क	13/11/2054	सिद्ध	04/07/2060	संक	05/04/2067	मंग	04/05/2073	पिंग	04/06/2079
सिद्ध	04/11/2055	संक	03/11/2061	मंग	15/06/2067	पिंग	14/10/2073	धांय	05/07/2079
संक	13/12/2056	मंग	03/01/2062	पिंग	04/11/2067	धांय	14/06/2074	भ्राम	14/08/2079
मंग	02/02/2057	पिंग	05/05/2062	धांय	04/06/2068	भ्राम	05/05/2075	भद्रि	04/10/2079
पिंग	15/05/2057	धांय	03/11/2062	भ्राम	15/03/2069	भद्रि	14/06/2076	उल्क	04/12/2079
धांय	14/10/2057	भ्राम	05/07/2063	भद्रि	05/03/2070	उल्क	14/10/2077	सिद्ध	13/02/2080
भ्राम	05/05/2058	भद्रि	04/05/2064	उल्क	05/05/2071	सिद्ध	05/05/2079	संक	04/05/2080

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
04/05/2080		05/05/2082		04/05/2085		04/05/2089		05/05/2094	
05/05/2082		04/05/2085		04/05/2089		05/05/2094		00/00/0000	
पिंग	14/06/2080	धांय	04/08/2082	भ्राम	14/10/2085	भद्रि	13/01/2090	उल्क	05/05/2095
धांय	14/08/2080	भ्राम	04/12/2082	भद्रि	05/05/2086	उल्क	13/11/2090	सिद्ध	04/07/2096
भ्राम	03/11/2080	भद्रि	05/05/2083	उल्क	03/01/2087	सिद्ध	04/11/2091	संक	30/08/2096
भद्रि	12/02/2081	उल्क	04/11/2083	सिद्ध	14/10/2087	संक	13/12/2092		00/00/0000
उल्क	14/06/2081	सिद्ध	04/06/2084	संक	03/09/2088	मंग	02/02/2093		00/00/0000
सिद्ध	03/11/2081	संक	02/02/2085	मंग	14/10/2088	पिंग	15/05/2093		00/00/0000
संक	14/04/2082	मंग	05/03/2085	पिंग	03/01/2089	धांय	14/10/2093		00/00/0000
मंग	05/05/2082	पिंग	04/05/2085	धांय	04/05/2089	भ्राम	05/05/2094		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग		भद्रि - पिंग		भद्रि - धांय	
13/11/2018		04/11/2019		13/12/2020		02/02/2021		15/05/2021	
04/11/2019		13/12/2020		02/02/2021		15/05/2021		14/10/2021	
सिद्ध	22/01/2019	संक	02/02/2020	मंग	15/12/2020	पिंग	08/02/2021	धांय	27/05/2021
संक	10/04/2019	मंग	13/02/2020	पिंग	18/12/2020	धांय	16/02/2021	भ्राम	13/06/2021
मंग	20/04/2019	पिंग	07/03/2020	धांय	22/12/2020	भ्राम	28/02/2021	भद्रि	04/07/2021
पिंग	10/05/2019	धांय	09/04/2020	भ्राम	28/12/2020	भद्रि	14/03/2021	उल्क	30/07/2021
धांय	09/06/2019	भ्राम	25/05/2020	भद्रि	04/01/2021	उल्क	31/03/2021	सिद्ध	28/08/2021
भ्राम	18/07/2019	भद्रि	20/07/2020	उल्क	12/01/2021	सिद्ध	19/04/2021	संक	01/10/2021
भद्रि	05/09/2019	उल्क	26/09/2020	सिद्ध	22/01/2021	संक	12/05/2021	मंग	05/10/2021
उल्क	04/11/2019	सिद्ध	13/12/2020	संक	02/02/2021	मंग	15/05/2021	पिंग	14/10/2021

भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक		उल्क - मंग	
14/10/2021		05/05/2022		05/05/2023		04/07/2024		03/11/2025	
05/05/2022		05/05/2023		04/07/2024		03/11/2025		03/01/2026	
भ्राम	05/11/2021	उल्क	05/07/2022	सिद्ध	27/07/2023	संक	20/10/2024	मंग	05/11/2025
भद्रि	04/12/2021	सिद्ध	14/09/2022	संक	30/10/2023	मंग	03/11/2024	पिंग	08/11/2025
उल्क	06/01/2022	संक	04/12/2022	मंग	10/11/2023	पिंग	30/11/2024	धांय	13/11/2025
सिद्ध	15/02/2022	मंग	14/12/2022	पिंग	04/12/2023	धांय	09/01/2025	भ्राम	20/11/2025
संक	01/04/2022	पिंग	03/01/2023	धांय	09/01/2024	भ्राम	05/03/2025	भद्रि	28/11/2025
मंग	07/04/2022	धांय	03/02/2023	भ्राम	25/02/2024	भद्रि	11/05/2025	उल्क	09/12/2025
पिंग	18/04/2022	भ्राम	15/03/2023	भद्रि	24/04/2024	उल्क	31/07/2025	सिद्ध	20/12/2025
धांय	05/05/2022	भद्रि	05/05/2023	उल्क	04/07/2024	सिद्ध	03/11/2025	संक	03/01/2026

उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध	
03/01/2026		05/05/2026		03/11/2026		05/07/2027		04/05/2028	
05/05/2026		03/11/2026		05/07/2027		04/05/2028		13/09/2029	
पिंग	10/01/2026	धांय	20/05/2026	भ्राम	30/11/2026	भद्रि	16/08/2027	सिद्ध	09/08/2028
धांय	20/01/2026	भ्राम	09/06/2026	भद्रि	03/01/2027	उल्क	06/10/2027	संक	27/11/2028
भ्राम	02/02/2026	भद्रि	05/07/2026	उल्क	13/02/2027	सिद्ध	04/12/2027	मंग	11/12/2028
भद्रि	19/02/2026	उल्क	04/08/2026	सिद्ध	01/04/2027	संक	10/02/2028	पिंग	08/01/2029
उल्क	12/03/2026	सिद्ध	09/09/2026	संक	25/05/2027	मंग	18/02/2028	धांय	18/02/2029
सिद्ध	04/04/2026	संक	19/10/2026	मंग	01/06/2027	पिंग	06/03/2028	भ्राम	14/04/2029
संक	01/05/2026	मंग	24/10/2026	पिंग	15/06/2027	धांय	31/03/2028	भद्रि	23/06/2029
मंग	05/05/2026	पिंग	03/11/2026	धांय	05/07/2027	भ्राम	04/05/2028	उल्क	13/09/2029

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम	
13/09/2029		05/04/2031		15/06/2031		04/11/2031		04/06/2032	
05/04/2031		15/06/2031		04/11/2031		04/06/2032		15/03/2033	
संक	18/01/2030	मंग	06/04/2031	पिंग	22/06/2031	धांय	21/11/2031	भ्राम	05/07/2032
मंग	02/02/2030	पिंग	10/04/2031	धांय	04/07/2031	भ्राम	15/12/2031	भद्रि	14/08/2032
पिंग	06/03/2030	धांय	16/04/2031	भ्राम	20/07/2031	भद्रि	14/01/2032	उल्क	30/09/2032
धांय	22/04/2030	भ्राम	24/04/2031	भद्रि	09/08/2031	उल्क	18/02/2032	सिद्ध	24/11/2032
भ्राम	24/06/2030	भद्रि	04/05/2031	उल्क	01/09/2031	सिद्ध	31/03/2032	संक	26/01/2033
भद्रि	11/09/2030	उल्क	16/05/2031	सिद्ध	29/09/2031	संक	17/05/2032	मंग	03/02/2033
उल्क	15/12/2030	सिद्ध	30/05/2031	संक	31/10/2031	मंग	23/05/2032	पिंग	19/02/2033
सिद्ध	05/04/2031	संक	15/06/2031	मंग	04/11/2031	पिंग	04/06/2032	धांय	15/03/2033

सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग		संक - पिंग	
15/03/2033		05/03/2034		05/05/2035		12/02/2037		04/05/2037	
05/03/2034		05/05/2035		12/02/2037		04/05/2037		14/10/2037	
भद्रि	03/05/2033	उल्क	15/05/2034	संक	26/09/2035	मंग	15/02/2037	पिंग	13/05/2037
उल्क	01/07/2033	सिद्ध	06/08/2034	मंग	14/10/2035	पिंग	19/02/2037	धांय	27/05/2037
सिद्ध	08/09/2033	संक	08/11/2034	पिंग	19/11/2035	धांय	26/02/2037	भ्राम	14/06/2037
संक	26/11/2033	मंग	20/11/2034	धांय	12/01/2036	भ्राम	07/03/2037	भद्रि	07/07/2037
मंग	06/12/2033	पिंग	14/12/2034	भ्राम	25/03/2036	भद्रि	18/03/2037	उल्क	03/08/2037
पिंग	26/12/2033	धांय	18/01/2035	भद्रि	23/06/2036	उल्क	01/04/2037	सिद्ध	03/09/2037
धांय	24/01/2034	भ्राम	07/03/2035	उल्क	09/10/2036	सिद्ध	16/04/2037	संक	09/10/2037
भ्राम	05/03/2034	भद्रि	05/05/2035	सिद्ध	12/02/2037	संक	04/05/2037	मंग	14/10/2037

संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध	
14/10/2037		14/06/2038		05/05/2039		14/06/2040		14/10/2041	
14/06/2038		05/05/2039		14/06/2040		14/10/2041		05/05/2043	
धांय	03/11/2037	भ्राम	20/07/2038	भद्रि	30/06/2039	उल्क	03/09/2040	सिद्ध	01/02/2042
भ्राम	30/11/2037	भद्रि	03/09/2038	उल्क	06/09/2039	सिद्ध	07/12/2040	संक	08/06/2042
भद्रि	03/01/2038	उल्क	28/10/2038	सिद्ध	24/11/2039	संक	25/03/2041	मंग	23/06/2042
उल्क	13/02/2038	सिद्ध	30/12/2038	संक	22/02/2040	मंग	07/04/2041	पिंग	25/07/2042
सिद्ध	01/04/2038	संक	12/03/2039	मंग	04/03/2040	पिंग	04/05/2041	धांय	10/09/2042
संक	25/05/2038	मंग	21/03/2039	पिंग	27/03/2040	धांय	14/06/2041	भ्राम	12/11/2042
मंग	01/06/2038	पिंग	08/04/2039	धांय	30/04/2040	भ्राम	07/08/2041	भद्रि	30/01/2043
पिंग	14/06/2038	धांय	05/05/2039	भ्राम	14/06/2040	भद्रि	14/10/2041	उल्क	05/05/2043

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 3 वर्ष 4 मास 26 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : रेवती - 2 सव्य
देह : मकर जीव : मिथुन

कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		मकर 4 वर्ष	
30/08/1988		**26/01/1992**		**25/01/2013**		**25/01/2018**		**26/01/2027**	
26/01/1992		**25/01/2013**		**25/01/2018**		**26/01/2027**		**26/01/2031**	
	00/00/0000	कर्क	04/04/1997	सिंह	12/05/2013	मिथु	08/01/2019	मक	04/04/2027
	00/00/0000	सिंह	29/06/1998	मिथु	22/11/2013	मक	12/06/2019	कुंभ	12/06/2027
	00/00/0000	मिथु	18/09/2000	मक	16/02/2014	कुंभ	14/11/2019	मीन	01/12/2027
	00/00/0000	मक	14/09/2001	कुंभ	13/05/2014	मीन	04/12/2020	वृश्चि	30/03/2028
	00/00/0000	कुंभ	10/09/2002	मीन	14/12/2014	वृश्चि	01/09/2021	तुला	30/12/2028
	30/08/1988	मीन	28/02/2005	वृश्चि	13/05/2015	तुला	13/05/2023	कन्या	03/06/2029
मीन	19/08/1989	वृश्चि	22/11/2006	तुला	21/04/2016	कन्या	25/04/2024	कर्क	30/05/2030
वृश्चि	17/05/1990	तुला	05/11/2010	कन्या	31/10/2016	कर्क	16/07/2026	सिंह	24/08/2030
तुला	26/01/1992	कन्या	25/01/2013	कर्क	25/01/2018	सिंह	26/01/2027	मिथु	26/01/2031

कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष	
26/01/2031		**26/01/2035**		**25/01/2045**		**26/01/2052**		**26/01/2068**	
26/01/2035		**25/01/2045**		**26/01/2052**		**26/01/2068**		**00/00/0000**	
कुंभ	04/04/2031	मीन	30/03/2036	वृश्चि	24/08/2045	तुला	30/01/2055	कन्या	08/01/2069
मीन	23/09/2031	वृश्चि	25/01/2037	तुला	18/12/2046	कन्या	10/10/2056	कर्क	31/03/2071
वृश्चि	21/01/2032	तुला	14/12/2038	कन्या	15/09/2047	कर्क	22/09/2060	सिंह	10/10/2071
तुला	22/10/2032	कन्या	04/01/2040	कर्क	07/06/2049	सिंह	01/09/2061	मिथु	22/09/2072
कन्या	26/03/2033	कर्क	25/06/2042	सिंह	05/11/2049	मिथु	13/05/2063	मक	24/02/2073
कर्क	22/03/2034	सिंह	26/01/2043	मिथु	02/08/2050	मक	12/02/2064	कुंभ	29/07/2073
सिंह	16/06/2034	मिथु	16/02/2044	मक	01/12/2050	कुंभ	13/11/2064	मीन	30/08/2073
मिथु	18/11/2034	मक	06/08/2044	कुंभ	31/03/2051	मीन	02/10/2066		00/00/0000
मक	26/01/2035	कुंभ	25/01/2045	मीन	26/01/2052	वृश्चि	26/01/2068		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - मक		मिथु - कुंभ		मिथु - मीन		मिथु - वृश्चि		मिथु - तुला	
08/01/2019		12/06/2019		14/11/2019		04/12/2020		01/09/2021	
12/06/2019		14/11/2019		04/12/2020		01/09/2021		13/05/2023	
मक	16/01/2019	कुंभ	19/06/2019	मीन	29/12/2019	वृश्चि	27/12/2020	तुला	27/12/2021
कुंभ	23/01/2019	मीन	08/07/2019	वृश्चि	30/01/2020	तुला	16/02/2021	कन्या	02/03/2022
मीन	10/02/2019	वृश्चि	20/07/2019	तुला	12/04/2020	कन्या	16/03/2021	कर्क	02/08/2022
वृश्चि	23/02/2019	तुला	18/08/2019	कन्या	23/05/2020	कर्क	22/05/2021	सिंह	07/09/2022
तुला	24/03/2019	कन्या	04/09/2019	कर्क	26/08/2020	सिंह	07/06/2021	मिथु	12/11/2022
कन्या	09/04/2019	कर्क	12/10/2019	सिंह	18/09/2020	मिथु	06/07/2021	मक	11/12/2022
कर्क	18/05/2019	सिंह	21/10/2019	मिथु	29/10/2020	मक	19/07/2021	कुंभ	09/01/2023
सिंह	27/05/2019	मिथु	06/11/2019	मक	16/11/2020	कुंभ	31/07/2021	मीन	23/03/2023
मिथु	12/06/2019	मक	14/11/2019	कुंभ	04/12/2020	मीन	01/09/2021	वृश्चि	13/05/2023

मिथु - कन्या		मिथु - कर्क		मिथु - सिंह		मक - मक		मक - कुंभ	
13/05/2023		25/04/2024		16/07/2026		26/01/2027		04/04/2027	
25/04/2024		16/07/2026		26/01/2027		04/04/2027		12/06/2027	
कन्या	19/06/2023	कर्क	12/11/2024	सिंह	28/07/2026	मक	29/01/2027	कुंभ	08/04/2027
कर्क	13/09/2023	सिंह	29/12/2024	मिथु	17/08/2026	कुंभ	01/02/2027	मीन	16/04/2027
सिंह	03/10/2023	मिथु	25/03/2025	मक	26/08/2026	मीन	09/02/2027	वृश्चि	21/04/2027
मिथु	09/11/2023	मक	03/05/2025	कुंभ	04/09/2026	वृश्चि	15/02/2027	तुला	04/05/2027
मक	26/11/2023	कुंभ	10/06/2025	मीन	27/09/2026	तुला	28/02/2027	कन्या	11/05/2027
कुंभ	12/12/2023	मीन	13/09/2025	वृश्चि	13/10/2026	कन्या	07/03/2027	कर्क	28/05/2027
मीन	22/01/2024	वृश्चि	19/11/2025	तुला	18/11/2026	कर्क	24/03/2027	सिंह	02/06/2027
वृश्चि	19/02/2024	तुला	21/04/2026	कन्या	09/12/2026	सिंह	28/03/2027	मिथु	09/06/2027
तुला	25/04/2024	कन्या	16/07/2026	कर्क	26/01/2027	मिथु	04/04/2027	मक	12/06/2027

मक - मीन		मक - वृश्चि		मक - तुला		मक - कन्या		मक - कर्क	
12/06/2027		01/12/2027		30/03/2028		30/12/2028		03/06/2029	
01/12/2027		30/03/2028		30/12/2028		03/06/2029		30/05/2030	
मीन	02/07/2027	वृश्चि	11/12/2027	तुला	21/05/2028	कन्या	16/01/2029	कर्क	31/08/2029
वृश्चि	16/07/2027	तुला	02/01/2028	कन्या	19/06/2028	कर्क	23/02/2029	सिंह	21/09/2029
तुला	18/08/2027	कन्या	15/01/2028	कर्क	26/08/2028	सिंह	04/03/2029	मिथु	30/10/2029
कन्या	05/09/2027	कर्क	14/02/2028	सिंह	11/09/2028	मिथु	20/03/2029	मक	16/11/2029
कर्क	17/10/2027	सिंह	21/02/2028	मिथु	10/10/2028	मक	28/03/2029	कुंभ	03/12/2029
सिंह	28/10/2027	मिथु	05/03/2028	मक	23/10/2028	कुंभ	04/04/2029	मीन	14/01/2030
मिथु	15/11/2027	मक	10/03/2028	कुंभ	05/11/2028	मीन	22/04/2029	वृश्चि	13/02/2030
मक	23/11/2027	कुंभ	16/03/2028	मीन	08/12/2028	वृश्चि	05/05/2029	तुला	22/04/2030
कुंभ	01/12/2027	मीन	30/03/2028	वृश्चि	30/12/2028	तुला	03/06/2029	कन्या	30/05/2030

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मक - सिंह		मक - मिथु		कुंभ - कुंभ		कुंभ - मीन		कुंभ - वृश्चि	
30/05/2030		24/08/2030		26/01/2031		04/04/2031		23/09/2031	
24/08/2030		26/01/2031		04/04/2031		23/09/2031		21/01/2032	
सिंह	04/06/2030	मिथु	09/09/2030	कुंभ	29/01/2031	मीन	25/04/2031	वृश्चि	03/10/2031
मिथु	13/06/2030	मक	16/09/2030	मीन	06/02/2031	वृश्चि	09/05/2031	तुला	26/10/2031
मक	17/06/2030	कुंभ	24/09/2030	वृश्चि	12/02/2031	तुला	10/06/2031	कन्या	07/11/2031
कुंभ	21/06/2030	मीन	12/10/2030	तुला	24/02/2031	कन्या	28/06/2031	कर्क	07/12/2031
मीन	01/07/2030	वृश्चि	25/10/2030	कन्या	04/03/2031	कर्क	10/08/2031	सिंह	14/12/2031
वृश्चि	08/07/2030	तुला	23/11/2030	कर्क	21/03/2031	सिंह	20/08/2031	मिथु	27/12/2031
तुला	25/07/2030	कन्या	09/12/2030	सिंह	25/03/2031	मिथु	07/09/2031	मक	02/01/2032
कन्या	03/08/2030	कर्क	16/01/2031	मिथु	01/04/2031	मक	15/09/2031	कुंभ	07/01/2032
कर्क	24/08/2030	सिंह	26/01/2031	मक	04/04/2031	कुंभ	23/09/2031	मीन	21/01/2032

कुंभ - तुला		कुंभ - कन्या		कुंभ - कर्क		कुंभ - सिंह		कुंभ - मिथु	
21/01/2032		22/10/2032		26/03/2033		22/03/2034		16/06/2034	
22/10/2032		26/03/2033		22/03/2034		16/06/2034		18/11/2034	
तुला	13/03/2032	कन्या	08/11/2032	कर्क	23/06/2033	सिंह	27/03/2034	मिथु	02/07/2034
कन्या	11/04/2032	कर्क	16/12/2032	सिंह	15/07/2033	मिथु	05/04/2034	मक	10/07/2034
कर्क	18/06/2032	सिंह	25/12/2032	मिथु	22/08/2033	मक	09/04/2034	कुंभ	17/07/2034
सिंह	04/07/2032	मिथु	11/01/2033	मक	08/09/2033	कुंभ	13/04/2034	मीन	04/08/2034
मिथु	03/08/2032	मक	18/01/2033	कुंभ	25/09/2033	मीन	23/04/2034	वृश्चि	17/08/2034
मक	16/08/2032	कुंभ	25/01/2033	मीन	06/11/2033	वृश्चि	01/05/2034	तुला	15/09/2034
कुंभ	28/08/2032	मीन	12/02/2033	वृश्चि	06/12/2033	तुला	17/05/2034	कन्या	01/10/2034
मीन	30/09/2032	वृश्चि	25/02/2033	तुला	12/02/2034	कन्या	26/05/2034	कर्क	09/11/2034
वृश्चि	22/10/2032	तुला	26/03/2033	कन्या	22/03/2034	कर्क	16/06/2034	सिंह	18/11/2034

कुंभ - मक		मीन - मीन		मीन - वृश्चि		मीन - तुला		मीन - कन्या	
18/11/2034		26/01/2035		30/03/2036		25/01/2037		14/12/2038	
26/01/2035		30/03/2036		25/01/2037		14/12/2038		04/01/2040	
मक	21/11/2034	मीन	17/03/2035	वृश्चि	24/04/2036	तुला	03/06/2037	कन्या	24/01/2039
कुंभ	24/11/2034	वृश्चि	21/04/2035	तुला	20/06/2036	कन्या	15/08/2037	कर्क	29/04/2039
मीन	02/12/2034	तुला	11/07/2035	कन्या	21/07/2036	कर्क	01/02/2038	सिंह	22/05/2039
वृश्चि	08/12/2034	कन्या	26/08/2035	कर्क	04/10/2036	सिंह	14/03/2038	मिथु	02/07/2039
तुला	21/12/2034	कर्क	10/12/2035	सिंह	21/10/2036	मिथु	25/05/2038	मक	20/07/2039
कन्या	28/12/2034	सिंह	04/01/2036	मिथु	22/11/2036	मक	27/06/2038	कुंभ	07/08/2039
कर्क	14/01/2035	मिथु	19/02/2036	मक	06/12/2036	कुंभ	29/07/2038	मीन	22/09/2039
सिंह	18/01/2035	मक	10/03/2036	कुंभ	21/12/2036	मीन	18/10/2038	वृश्चि	23/10/2039
मिथु	26/01/2035	कुंभ	30/03/2036	मीन	25/01/2037	वृश्चि	14/12/2038	तुला	04/01/2040

चर दशा

भोग्य दशा काल : तुला 8 वर्ष 0 मास 0 दिन

तुला 8 वर्ष	
30/08/1988	
30/08/1996	
वृश्चि	30/04/1989
धनु	30/12/1989
मक	30/08/1990
कुंभ	01/05/1991
मीन	30/12/1991
मेष	30/08/1992
वृष	30/04/1993
मिथु	30/12/1993
कर्क	30/08/1994
सिंह	01/05/1995
कन्या	30/12/1995
तुला	30/08/1996

वृश्चिक 9 वर्ष	
30/08/1996	
30/08/2005	
तुला	31/05/1997
कन्या	01/03/1998
सिंह	30/11/1998
कर्क	31/08/1999
मिथु	31/05/2000
वृष	01/03/2001
मेष	29/11/2001
मीन	30/08/2002
कुंभ	31/05/2003
मक	29/02/2004
धनु	29/11/2004
वृश्चि	30/08/2005

धनु 5 वर्ष	
30/08/2005	
30/08/2010	
वृश्चि	29/01/2006
तुला	01/07/2006
कन्या	30/11/2006
सिंह	01/05/2007
कर्क	30/09/2007
मिथु	29/02/2008
वृष	30/07/2008
मेष	30/12/2008
मीन	31/05/2009
कुंभ	30/10/2009
मक	31/03/2010
धनु	30/08/2010

मकर 1 वर्ष	
30/08/2010	
31/08/2011	
धनु	30/09/2010
वृश्चि	30/10/2010
तुला	30/11/2010
कन्या	30/12/2010
सिंह	30/01/2011
कर्क	01/03/2011
मिथु	31/03/2011
वृष	01/05/2011
मेष	31/05/2011
मीन	01/07/2011
कुंभ	31/07/2011
मक	31/08/2011

कुम्भ 2 वर्ष	
31/08/2011	
30/08/2013	
मीन	31/10/2011
मेष	30/12/2011
वृष	29/02/2012
मिथु	30/04/2012
कर्क	30/06/2012
सिंह	30/08/2012
कन्या	30/10/2012
तुला	30/12/2012
वृश्चि	01/03/2013
धनु	30/04/2013
मक	30/06/2013
कुंभ	30/08/2013

मीन 10 वर्ष	
30/08/2013	
31/08/2023	
मेष	01/07/2014
वृष	01/05/2015
मिथु	29/02/2016
कर्क	30/12/2016
सिंह	30/10/2017
कन्या	30/08/2018
तुला	01/07/2019
वृश्चि	30/04/2020
धनु	01/03/2021
मक	30/12/2021
कुंभ	30/10/2022
मीन	31/08/2023

मेष 11 वर्ष	
31/08/2023	
30/08/2034	
वृष	30/07/2024
मिथु	30/06/2025
कर्क	31/05/2026
सिंह	01/05/2027
कन्या	31/03/2028
तुला	01/03/2029
वृश्चि	29/01/2030
धनु	30/12/2030
मक	30/11/2031
कुंभ	30/10/2032
मीन	30/09/2033
मेष	30/08/2034

वृष 1 वर्ष	
30/08/2034	
31/08/2035	
मेष	30/09/2034
मीन	30/10/2034
कुंभ	30/11/2034
मक	30/12/2034
धनु	30/01/2035
वृश्चि	01/03/2035
तुला	31/03/2035
कन्या	01/05/2035
सिंह	31/05/2035
कर्क	01/07/2035
मिथु	31/07/2035
वृष	31/08/2035

मिथुन 3 वर्ष	
31/08/2035	
30/08/2038	
वृष	30/11/2035
मेष	29/02/2036
मीन	31/05/2036
कुंभ	30/08/2036
मक	29/11/2036
धनु	01/03/2037
वृश्चि	31/05/2037
तुला	30/08/2037
कन्या	29/11/2037
सिंह	01/03/2038
कर्क	31/05/2038
मिथु	30/08/2038

कर्क 4 वर्ष	
30/08/2038	
30/08/2042	
मिथु	30/12/2038
वृष	01/05/2039
मेष	31/08/2039
मीन	30/12/2039
कुंभ	30/04/2040
मक	30/08/2040
धनु	30/12/2040
वृश्चि	30/04/2041
तुला	30/08/2041
कन्या	30/12/2041
सिंह	01/05/2042
कर्क	30/08/2042

सिंह 12 वर्ष	
30/08/2042	
30/08/2054	
कन्या	31/08/2043
तुला	30/08/2044
वृश्चि	30/08/2045
धनु	30/08/2046
मक	31/08/2047
कुंभ	30/08/2048
मीन	30/08/2049
मेष	30/08/2050
वृष	31/08/2051
मिथु	30/08/2052
कर्क	30/08/2053
सिंह	30/08/2054

कन्या 12 वर्ष	
30/08/2054	
30/08/2066	
तुला	31/08/2055
वृश्चि	30/08/2056
धनु	30/08/2057
मक	30/08/2058
कुंभ	31/08/2059
मीन	30/08/2060
मेष	30/08/2061
वृष	30/08/2062
मिथु	31/08/2063
कर्क	30/08/2064
सिंह	30/08/2065
कन्या	30/08/2066

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मीन - तुला		मीन - वृश्चि		मीन - धनु		मीन - मक		मीन - कुंभ	
30/08/2018		01/07/2019		30/04/2020		01/03/2021		30/12/2021	
01/07/2019		30/04/2020		01/03/2021		30/12/2021		30/10/2022	
वृश्चि	25/09/2018	तुला	26/07/2019	वृश्चि	26/05/2020	धनु	26/03/2021	मीन	24/01/2022
धनु	20/10/2018	कन्या	21/08/2019	तुला	20/06/2020	वृश्चि	20/04/2021	मेष	19/02/2022
मक	15/11/2018	सिंह	15/09/2019	कन्या	15/07/2020	तुला	16/05/2021	वृष	16/03/2022
कुंभ	10/12/2018	कर्क	10/10/2019	सिंह	10/08/2020	कन्या	10/06/2021	मिथु	10/04/2022
मीन	04/01/2019	मिथु	05/11/2019	कर्क	04/09/2020	सिंह	05/07/2021	कर्क	06/05/2022
मेष	30/01/2019	वृष	30/11/2019	मिथु	29/09/2020	कर्क	31/07/2021	सिंह	31/05/2022
वृष	24/02/2019	मेष	25/12/2019	वृष	25/10/2020	मिथु	25/08/2021	कन्या	25/06/2022
मिथु	21/03/2019	मीन	20/01/2020	मेष	19/11/2020	वृष	19/09/2021	तुला	21/07/2022
कर्क	16/04/2019	कुंभ	14/02/2020	मीन	14/12/2020	मेष	15/10/2021	वृश्चि	15/08/2022
सिंह	11/05/2019	मक	10/03/2020	कुंभ	09/01/2021	मीन	09/11/2021	धनु	10/09/2022
कन्या	05/06/2019	धनु	05/04/2020	मक	03/02/2021	कुंभ	05/12/2021	मक	05/10/2022
तुला	01/07/2019	वृश्चि	30/04/2020	धनु	01/03/2021	मक	30/12/2021	कुंभ	30/10/2022

मीन - मीन		मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - कर्क		मेष - सिंह	
30/10/2022		31/08/2023		30/07/2024		30/06/2025		31/05/2026	
31/08/2023		30/07/2024		30/06/2025		31/05/2026		01/05/2027	
मेष	25/11/2022	मेष	28/09/2023	वृष	27/08/2024	मिथु	28/07/2025	कन्या	28/06/2026
वृष	20/12/2022	मीन	25/10/2023	मेष	24/09/2024	वृष	25/08/2025	तुला	26/07/2026
मिथु	14/01/2023	कुंभ	22/11/2023	मीन	22/10/2024	मेष	22/09/2025	वृश्चि	23/08/2026
कर्क	09/02/2023	मक	20/12/2023	कुंभ	19/11/2024	मीन	20/10/2025	धनु	20/09/2026
सिंह	06/03/2023	धनु	17/01/2024	मक	17/12/2024	कुंभ	17/11/2025	मक	18/10/2026
कन्या	31/03/2023	वृश्चि	14/02/2024	धनु	14/01/2025	मक	15/12/2025	कुंभ	15/11/2026
तुला	26/04/2023	तुला	13/03/2024	वृश्चि	11/02/2025	धनु	12/01/2026	मीन	12/12/2026
वृश्चि	21/05/2023	कन्या	10/04/2024	तुला	11/03/2025	वृश्चि	09/02/2026	मेष	09/01/2027
धनु	16/06/2023	सिंह	08/05/2024	कन्या	08/04/2025	तुला	08/03/2026	वृष	06/02/2027
मक	11/07/2023	कर्क	05/06/2024	सिंह	05/05/2025	कन्या	05/04/2026	मिथु	06/03/2027
कुंभ	05/08/2023	मिथु	03/07/2024	कर्क	02/06/2025	सिंह	03/05/2026	कर्क	03/04/2027
मीन	31/08/2023	वृष	30/07/2024	मिथु	30/06/2025	कर्क	31/05/2026	सिंह	01/05/2027

मेष - कन्या		मेष - तुला		मेष - वृश्चि		मेष - धनु		मेष - मक	
01/05/2027		31/03/2028		01/03/2029		29/01/2030		30/12/2030	
31/03/2028		01/03/2029		29/01/2030		30/12/2030		30/11/2031	
तुला	29/05/2027	वृश्चि	28/04/2028	तुला	28/03/2029	वृश्चि	26/02/2030	धनु	27/01/2031
वृश्चि	26/06/2027	धनु	26/05/2028	कन्या	25/04/2029	तुला	26/03/2030	वृश्चि	24/02/2031
धनु	24/07/2027	मक	22/06/2028	सिंह	23/05/2029	कन्या	23/04/2030	तुला	24/03/2031
मक	21/08/2027	कुंभ	20/07/2028	कर्क	20/06/2029	सिंह	21/05/2030	कन्या	21/04/2031
कुंभ	17/09/2027	मीन	17/08/2028	मिथु	18/07/2029	कर्क	18/06/2030	सिंह	19/05/2031
मीन	15/10/2027	मेष	14/09/2028	वृष	15/08/2029	मिथु	16/07/2030	कर्क	16/06/2031
मेष	12/11/2027	वृष	12/10/2028	मेष	12/09/2029	वृष	13/08/2030	मिथु	13/07/2031
वृष	10/12/2027	मिथु	09/11/2028	मीन	10/10/2029	मेष	10/09/2030	वृष	10/08/2031
मिथु	07/01/2028	कर्क	07/12/2028	कुंभ	07/11/2029	मीन	07/10/2030	मेष	07/09/2031
कर्क	04/02/2028	सिंह	04/01/2029	मक	05/12/2029	कुंभ	04/11/2030	मीन	05/10/2031
सिंह	03/03/2028	कन्या	01/02/2029	धनु	01/01/2030	मक	02/12/2030	कुंभ	02/11/2031
कन्या	31/03/2028	तुला	01/03/2029	वृश्चि	29/01/2030	धनु	30/12/2030	मक	30/11/2031

चर दशा - प्रत्यन्तर

मेष - कुंभ		मेष - मीन		मेष - मेष		वृष - मेष		वृष - मीन	
30/11/2031		30/10/2032		30/09/2033		30/08/2034		30/09/2034	
30/10/2032		30/09/2033		30/08/2034		30/09/2034		30/10/2034	
मीन	28/12/2031	मेष	27/11/2032	वृष	28/10/2033	वृष	02/09/2034	मेष	02/10/2034
मेष	25/01/2032	वृष	25/12/2032	मिथु	24/11/2033	मिथु	04/09/2034	वृष	05/10/2034
वृष	22/02/2032	मिथु	21/01/2033	कर्क	22/12/2033	कर्क	07/09/2034	मिथु	07/10/2034
मिथु	21/03/2032	कर्क	18/02/2033	सिंह	19/01/2034	सिंह	10/09/2034	कर्क	10/10/2034
कर्क	17/04/2032	सिंह	18/03/2033	कन्या	16/02/2034	कन्या	12/09/2034	सिंह	13/10/2034
सिंह	15/05/2032	कन्या	15/04/2033	तुला	16/03/2034	तुला	15/09/2034	कन्या	15/10/2034
कन्या	12/06/2032	तुला	13/05/2033	वृश्चि	13/04/2034	वृश्चि	17/09/2034	तुला	18/10/2034
तुला	10/07/2032	वृश्चि	10/06/2033	धनु	11/05/2034	धनु	20/09/2034	वृश्चि	20/10/2034
वृश्चि	07/08/2032	धनु	08/07/2033	मक	08/06/2034	मक	22/09/2034	धनु	23/10/2034
धनु	04/09/2032	मक	05/08/2033	कुंभ	06/07/2034	कुंभ	25/09/2034	मक	25/10/2034
मक	02/10/2032	कुंभ	02/09/2033	मीन	03/08/2034	मीन	27/09/2034	कुंभ	28/10/2034
कुंभ	30/10/2032	मीन	30/09/2033	मेष	30/08/2034	मेष	30/09/2034	मीन	30/10/2034

वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु		वृष - वृश्चि		वृष - तुला	
30/10/2034		30/11/2034		30/12/2034		30/01/2035		01/03/2035	
30/11/2034		30/12/2034		30/01/2035		01/03/2035		31/03/2035	
मीन	02/11/2034	धनु	02/12/2034	वृश्चि	02/01/2035	तुला	01/02/2035	वृश्चि	04/03/2035
मेष	04/11/2034	वृश्चि	05/12/2034	तुला	04/01/2035	कन्या	04/02/2035	धनु	06/03/2035
वृष	07/11/2034	तुला	07/12/2034	कन्या	07/01/2035	सिंह	06/02/2035	मक	09/03/2035
मिथु	09/11/2034	कन्या	10/12/2034	सिंह	09/01/2035	कर्क	09/02/2035	कुंभ	11/03/2035
कर्क	12/11/2034	सिंह	12/12/2034	कर्क	12/01/2035	मिथु	11/02/2035	मीन	14/03/2035
सिंह	15/11/2034	कर्क	15/12/2034	मिथु	14/01/2035	वृष	14/02/2035	मेष	16/03/2035
कन्या	17/11/2034	मिथु	17/12/2034	वृष	17/01/2035	मेष	16/02/2035	वृष	19/03/2035
तुला	20/11/2034	वृष	20/12/2034	मेष	19/01/2035	मीन	19/02/2035	मिथु	21/03/2035
वृश्चि	22/11/2034	मेष	23/12/2034	मीन	22/01/2035	कुंभ	21/02/2035	कर्क	24/03/2035
धनु	25/11/2034	मीन	25/12/2034	कुंभ	25/01/2035	मक	24/02/2035	सिंह	26/03/2035
मक	27/11/2034	कुंभ	28/12/2034	मक	27/01/2035	धनु	27/02/2035	कन्या	29/03/2035
कुंभ	30/11/2034	मक	30/12/2034	धनु	30/01/2035	वृश्चि	01/03/2035	तुला	31/03/2035

वृष - कन्या		वृष - सिंह		वृष - कर्क		वृष - मिथु		वृष - वृष	
31/03/2035		01/05/2035		31/05/2035		01/07/2035		31/07/2035	
01/05/2035		31/05/2035		01/07/2035		31/07/2035		31/08/2035	
तुला	03/04/2035	कन्या	03/05/2035	मिथु	03/06/2035	वृष	03/07/2035	मेष	03/08/2035
वृश्चि	06/04/2035	तुला	06/05/2035	वृष	05/06/2035	मेष	06/07/2035	मीन	05/08/2035
धनु	08/04/2035	वृश्चि	09/05/2035	मेष	08/06/2035	मीन	08/07/2035	कुंभ	08/08/2035
मक	11/04/2035	धनु	11/05/2035	मीन	11/06/2035	कुंभ	11/07/2035	मक	10/08/2035
कुंभ	13/04/2035	मक	14/05/2035	कुंभ	13/06/2035	मक	13/07/2035	धनु	13/08/2035
मीन	16/04/2035	कुंभ	16/05/2035	मक	16/06/2035	धनु	16/07/2035	वृश्चि	15/08/2035
मेष	18/04/2035	मीन	19/05/2035	धनु	18/06/2035	वृश्चि	19/07/2035	तुला	18/08/2035
वृष	21/04/2035	मेष	21/05/2035	वृश्चि	21/06/2035	तुला	21/07/2035	कन्या	21/08/2035
मिथु	23/04/2035	वृष	24/05/2035	तुला	23/06/2035	कन्या	24/07/2035	सिंह	23/08/2035
कर्क	26/04/2035	मिथु	26/05/2035	कन्या	26/06/2035	सिंह	26/07/2035	कर्क	26/08/2035
सिंह	28/04/2035	कर्क	29/05/2035	सिंह	28/06/2035	कर्क	29/07/2035	मिथु	28/08/2035
कन्या	01/05/2035	सिंह	31/05/2035	कर्क	01/07/2035	मिथु	31/07/2035	वृष	31/08/2035

उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, ग्रहों के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 1
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	88%	पराक्रम, सुख, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	80%	भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	67%	सन्तति सुख, पराक्रम
पन्ना	बुध	59%	कम खर्च, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	59%	धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	53%	धनार्जन
मोती	चंद्र	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	12%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
पुखराज	गुरु	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

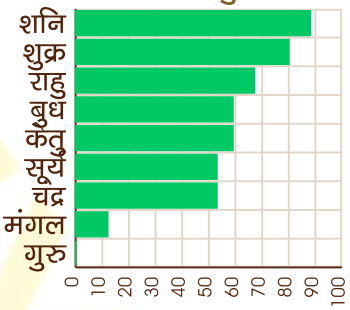

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	31/01/1999	60%	31%	12%	72%	0%	86%	88%	67%	59%
केतु	31/01/2006	32%	31%	25%	59%	0%	86%	75%	55%	72%
शुक्र	31/01/2026	32%	31%	12%	66%	0%	92%	94%	73%	66%
सूर्य	31/01/2032	66%	59%	25%	59%	0%	67%	75%	55%	44%
चंद्र	31/01/2042	60%	66%	12%	66%	0%	80%	88%	55%	44%
मंगल	30/01/2049	60%	59%	38%	44%	0%	80%	88%	55%	66%
राहु	31/01/2067	32%	31%	0%	59%	0%	86%	94%	80%	44%
गुरु	31/01/2083	60%	59%	25%	44%	6%	67%	88%	67%	59%
शनि	01/02/2102	32%	31%	0%	66%	0%	86%	100%	73%	44%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, पन्ना, लहसुनिया, माणिक्य एवं मोती रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुड़ली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न

धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यो में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि तीसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं

जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। आप बुध ग्रह की शुभता पाने के लिए पन्ना रत्न धारण करें। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान, विचारशील और विवेकी व्यक्ति बनेंगे। आपको धर्म के प्रति आस्थावान बनाएगा। यह रत्न आपको एक स्पष्ट वक्ता बनाएगा। बुध रत्न पन्ना से आपको आलस्य से बचाएगा। तथा रत्न शुभता से आप दूसरों के धन का लालच नहीं करेंगे। पन्ना रत्न शुभता आपको उच्च पद और प्रतिष्ठा देगा। बौद्धिक योग्यता से आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में भी यह रत्न शुभ फल प्रदान करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यों में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके शत्रु आपसे भयभीत होंगे। आपकी चिंताओं का निवारण होगी। संतान संबंधी चिंताओं को शीघ्र दूर करने में सफल होंगे। आपका घर सुंदर सज्जायुक्त हो सकता है। पेट के रोगों से आपको राहत मिलेगी। आमदनी के साधनों में

वृद्धि होगी। लहसुनिया रत्न आपको तेजस्वी, मनोहरी व्यक्तित्व और संतोषी जीवन देगा। आपको आय क्षेत्रों में प्रशंसा प्राप्त होगी।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य एकादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते है। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप धनवान, बलवान और सुखी बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप स्वाभिमानी बनेंगे। रत्न धारण से आप तपस्वी और योगी समान बनेंगे। आपका जीवन सदाचार युक्त होगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माणिक्य रत्न आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। उच्च अधिकारियों से आपके संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आपको महत्त्वाकांक्षी बनाएगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में

स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको नौकरी में स्थिरता प्रदान करेगा। मोती रत्न से आपके अपने मामा-मौसी से संबंध मधुर होंगे। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियों से राहत मिलेगी। आप अपने शत्रुओं की पहचान सरलता से कर पायेंगे। चंद्र रत्न मोती ऋण विषयों का समाधान करेगा। मोती रत्न शुभ होकर आपको उन्नति और सफलता देगा। आपको कोई बड़ा पद प्राप्त हो सकता है। मोती रत्न चंद्र ग्रह को शुभता प्रदान करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं

२ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको प्रसिद्धि की प्रतिकूलता, विद्वानों से शत्रुता, तकनीकी विषयों में अरुचि हो सकती है। अत्यधिक साहस, जोखिम लेने का स्वभाव आपको शारीरिक कष्ट दे सकता है। विरोधियों से कष्ट आपके लिए बने रहेंगे। यह रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति को बाधित कर सकता है। प्रतियोगिताओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। मूंगा रत्न आपको अधीनस्थों के द्वारा पीड़ित कर सकता है। माता के सुख में कमी के योग बन सकते है। मूंगा रत्न आपको रक्त प्रवाह से संबंधित रोग दे सकता है। शक्ति का दुरुपयोग आपके द्वारा हो सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको कुटुंब सुख और धन संचय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से आपको परिश्रम और बुद्धि का सहयोग पूर्ण रूप से नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको सभा में भाषण देने में संकोच भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। मूंगा रत्न धारण से आपका जीवन साथी अत्यधिक क्रोध करने वाला हो सकता है। रत्न प्रभाव आपके जीवन साथी में अत्यधिक जोश, ऊर्जा और उत्तेजना दे सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद व्यापारिक साझेदार से अनबन हो सकती है। ग्रहस्थ जीवन में तनाव, क्लेश और अंशान्ति की स्थिति बन सकती है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते है। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे है। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यो को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(31/01/2006 - 31/01/2026)

शुक्र की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पन्ना व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व मोती रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(31/01/2026 - 31/01/2032)

सूर्य की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य, मोती, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(31/01/2032 - 31/01/2042)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पन्ना, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(31/01/2042 - 30/01/2049)

मंगल की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य, मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(30/01/2049 - 31/01/2067)

राहु की दशा में आपका नीलम, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, माणिक्य व मोती रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(31/01/2067 - 31/01/2083)

गुरु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद, माणिक्य, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(31/01/2083 - 01/02/2102)

शनि की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, माणिक्य व मोती रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर

सकते हैं।

RATNA JYOTI

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्ठेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता हैं। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। मंगल का रोग भाव में होने से आपके जीवन साथी से सुखों में न्यूनता, मित्रों से धोखा, संतान सुख में न्यूनता, स्वजनों से झगड़ा, रक्त-विकार, धन-नाश का कारण बन सकता हैं।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि

विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ स्थित है, यद्यपि चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु मानसिक रूप से आप यदा कदा परेशानी की अनुभूति करेंगी। स्वभाव में उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में अनावश्यक विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व भी असफल हो सकती हैं। इससे आपके पति का स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे परेशान हो सकते हैं।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा साथ ही लग्न से चतुर्थ में दृष्टि के कारण आपको जीवन में भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति परिश्रम पूर्वक होगी। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाविक तेजी या क्रोध का भाव उनमें विद्यमान रहेगा जिससे यदा कदा संबंधों में मधुरता की न्यूनता रहेगी। साथ ही अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा उनकी सिद्धि में विलम्ब होगा परन्तु स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

अतः मंगल के अशुभ प्रभावों को कम करने तथा दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इस दोष के भंग होने पर आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा जीवन में आवश्यक भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही इनका उपभोग भी करेंगी। चल एवं अचल सम्पति की भी आपको प्राप्ति होगी। पति के साथ भी संबंधों में मधुरता रहेगी। जीवन में आप धन ऐश्वर्य सौभाग्य एवं शुभ प्रभावों से युक्त

होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

कुंडली मिलान के समय जिस युवक की कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ हो यदि आवश्यक न हो तो ऐसे विवाह की उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल की स्थिति से दोनों का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा इसके अतिरिक्त अन्य भावों में स्थित मंगल दोष भंग कर देगा तथा आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं आनंद पूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उचित मिलान करके अंतिम निर्णय लेना चाहिए।

RATNA JYOTI

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुडली में शनि और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा

पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक शास्त्र

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने-संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतर्संबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 30 है। तीन एवं शून्य का योग तीन आपका मूलांक होता है। मूलांक तीन का स्वामी बृहस्पति ग्रह को माना गया है। शून्य शिव है, अखण्ड़ ब्रह्माण्ड का द्योतक है।

मूलांक तीन के स्वामी बृहस्पति के प्रभाव वश आप एक अनुशासन प्रिय तथा कठोर महिला के रूप में चर्चित रहेंगी। आपकी स्वयं अनुशासन में रहने की इच्छा रहेगी और यही अपेक्षा दूसरों से करेंगी। मातहतों के साथ आपकी कार्यशैली कठोर रहेगी। इससे आपको अधीनस्थों के विरोध, आलोचनाओं का शिकार होना पड़ेगा। आपका रुझान ज्ञान की ओर होने से आप विद्याध्यन के क्षेत्र में सफल रहेंगी। बौद्धिक स्तर के कार्य आप भलीभाँति संपादित करेंगी। कार्यों में आपकी मौलिकता झलकेगी। आपकी मुखिया बनने की महत्वाकांक्षा कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत रहेगी और दूसरों पर शासन करने में निपुण रहेंगी। धर्मक्षेत्र, कार्यक्षेत्र, समाजसेवा इत्यादि के कार्यों में आपको ख्याति प्राप्त होगी।

तर्क, ज्ञान शक्ति आपमें होने से आप मानसिक रूप से संतुलित रहेंगी तथा इसकी छाया आपके कार्यों में दृष्टि गोचर होगी। आप सामाजिक भलाई के कार्यों में रुचि लेंगी एवं कभी-भी किसी का अहित नहीं करेंगी। शून्य प्रभाववश आप शान्त, कोमल हृदय की, वाणी से मधुर, सच्चाई के रास्ते पर चलने वाली, धर्म-कर्म के क्षेत्र में अग्रण्य महिला के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाली स्पष्ट वक्ता होंगी। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाली यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाली शूरवीर महिला के रूप में पहचान स्थापित करेंगी। आपका जीवन चक्र एक मुखिया की भाँति संचालित होगा अर्थात आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचारधारा पर निर्भीक चलेंगी। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगी। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगी। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगी, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका मूलांक 3 है तथा भाग्यांक 1 है। मूलांक 3 का स्वामी गुरु है तथा भाग्यांक 1 का स्वामी सूर्य है। मूलांक 3 तथा भाग्यांक 1 के बीच सम संबंध हैं। इसके प्रभाववश आपके अंदर सूर्य एवं गुरु का प्रभाव उच्च कोटि का होगा। आप रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में अत्यधिक सफल महिला सिद्ध होंगी। आप ऐसा रोजगार पसंद करेंगी, जिसमें आपकी हुकूमत बनी रहे,

अर्थात स्वतंत्र रूप से आप कार्य करना अधिक पसंद करेंगी। आपके रोजगार का क्षेत्र ऐसा रहेगा जिसमें दूसरों का भला और सामाजिक सुधार होता हो। आप स्वतंत्र रूप से रोजगार के क्षेत्र में अपने निर्णय लेंगी एवं निर्भीक चलते हुए नाम तथा धन प्राप्त करेंगी। अध्ययन-अध्यापन जैसे कार्य आपको विशेष पसंद आएंगे। जिस कार्य में मुखिया का पद प्राप्त हो, ऐसी आपकी महत्वाकांक्षा रहेगी। रोजगार में आप सच्चाई के मार्ग पर चलेंगी एवं दान-पुण्य भी करेंगी। आपके विरोधी परास्त होंगे और आपका कार्यक्षेत्र विशालता को प्राप्त करेगा।

आपका भाग्योदय 19 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 28 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 37 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं

घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

RATNA JYOTI

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

अनुकूल दिवस

गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार के दिन आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल तथा श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने, महत्वपूर्ण या विशिष्ट व्यक्तियों से मिलने, पत्र इत्यादि लिखने हेतु शुभ रहेंगी। अतः यदि आप उपर्युक्त तारीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करती हैं तो शीघ्र सफलता मिलेगी।

अशुभ तारीखें

आपको किसी भी अंग्रेजी माह की 4, 8, 13, 17, 22, 26 एवं 31 तारीखें प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उपर्युक्त तारीखों में संपन्न करना आपके लिए अहितकर रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें, जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24 27 एवं 30 तारीखों में, अथवा 15 दिसंबर से 13 जनवरी, 13 मार्च से 13 अप्रैल एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी तथा विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा वे रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपको विवाह या प्रेम संबंध स्थापित करते समय यह देखना लाभप्रद रहेगा कि उस महिला का मूलांक 3,6 या 9 हो अथवा ऐसी महिला का जन्म किसी भी अंग्रेजी मास की

3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 या 30 तारीख को हुआ हो। इन दिनांकों में जन्मी स्त्रियां आपके लिए विशेष फलदायी और अच्छा साथ निभाने वाली रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अनुकूल रंग हल्का गुलाबी, चमकीला गुलाबी है। गुलाबी भी पूरा गुलाबी नहीं, बल्कि हल्का गुलाबी होना चाहिए। अतः आप ड्रॉइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग के लें। हो सके तो इस रंग का रुमाल तो हर समय रखें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप हो सके तो इसी रंग के वस्त्र पहनें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामांक 3 हो। ईशान कोण दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप शहर की ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों के होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि आप दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

शुभ वाहन नं

अगर आप यात्रा के दौरान कमरा इत्यादि बुक करवाते हैं, तो आपको चाहिए की कमरे का नंबर आपके मूलांक या मूलांक के मित्र अंक से मेल करने वाले अंकों का रहे। आपका मूलांक 3 है। मूलांक के मित्र अंक 6, 9 रहेंगे। आपके कमरे का नंबर 102= 3 इत्यादि होना चाहिए और यदि आप वाहन आदि का पंजीकरण इत्यादि करवाते हैं, तब उसके लिए भी शुभ अंक 5232 =3 रहेंगे। आपके लिए यही अंक यात्रा के वाहन के रहेंगे, तो आपकी यात्रा सुखमय कहलाएगी।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको चर्म रोग, दाद, खाज, खुजली, प्रमेह, ज़हरवाद, पित्त प्रकोप, शूल रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक उद्वेग, गुप्तेंद्रिय शैथिल्य, भोग के प्रति अरुचि, रक्त दोष जैसे रोग होंगे। रोग अशुभता कष्ट और विपत्ति के समय आपको विष्णु उपासना, पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत कथा श्रवण करना चाहिए।

व्यवसाय

वस्त्र उद्योग, ढाबे, रेस्टोरेंट, होटल, पान की दुकान, अध्यापन, उपदेशक, व्याख्याता, प्राध्यापक, राजदूत, मंत्री, कानून के सलाहकार, वकील, न्यायाधीश, सचिव, दूत कार्य, क्लर्क, चिकित्सा कार्य, बैंकिंग के कार्य, दलाल, आढ़त, विज्ञापनकर्ता, अभिनेता, सेल्समैंन, टाइपिस्ट, स्टेनो, जल जहाज में कार्यकर्ता, पुलिस विभाग, दर्शनशास्त्री, प्रबंधक एवं जलीय व्यापार।

व्रतोपवास

बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीला भोजन ग्रहण करें एवं पीले पदार्थों का दान करें। यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवारों को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरु मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पुखराज आपके लिए मुख्य रत्न है। यदि पुखराज न मिले तब आप सुनेला, टाईगर आई, पीला हकीक धारण कर सकते हैं। इसे आप सोने की अंगूठी में चार से पांच रत्ती का बनवा कर दायें हाथ की तर्जनी उंगली को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र "ओम् नमो भगवते वासुदेवाय" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

गुरु गायत्री मंत्र - ऊँ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ आठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।। जप संख्या 10000।।

वनस्पति धारण

आप गुरुवार के दिन एक इंच लंबी नारंगी या केले की जड़ ला कर, पीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या स्वर्ण या पीतल के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक गुरुवार को एक बाल्टी या बर्तन में मुलेठी, सफेद सरसों तथा मालती के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ गुरु के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आप कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

गुरू की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को गुरु के पदार्थ, पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

गुरु को अनुकूल बनाये रखने हेतु गुरु यंत्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में गुरुवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जाएंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पाएंगे। यह सूचना आपको भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पाएंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्जवल है।

लग्न फल

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के चत्तुर्थ चरण में तुला लग्नोदय काल हुआ था। उस क्षण मेदिनीय क्षितिज पर तुला लग्न के साथ-साथ वृश्चिक नवमांश एवं तुला द्रेष्काण भी उदित था। जो यह संकेत देता है कि आप सदैव मात्र विलासिता संबंधी विषयों के प्रति रुचिवान रहेंगी। मुख्यतः वासनात्मक विलास प्रियता आप में विद्यमान रहेगी। आप अपने पति के साथ आनंद प्राप्ति में अभिभूत रहेंगी। यह संभाव्य है कि आप काम कला की उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अथवा प्रसार हेतु प्रयत्नशील रहेंगी। यह संभाव्य है कि आप कामसूत्र की विशेषज्ञ हो जाएं।

संप्रति यदि आपके लिए कार्य है तो वह कार्य घर से संबंधित है। आप अपने शयन कक्ष को अति आकर्षक बनाने के संबंध में सदैव चिंतित रहेंगी। आप अपने पति की प्रीति में पूर्ण समर्पित रहकर, पति के आकर्षण के कारण एवं विलासिता संबंधी प्रसन्नता हेतु कुछ भी संभव उपाय करने के लिए सीमोलंघन भी कर सकती हैं। संप्रति आप अपने साथी के प्रति अत्यन्त समर्पित हैं।

आप पूर्णरूपेण अश्वस्त होंगी कि आपको एक अच्छा जीवन संगी प्राप्त हुआ है। आप अपनी पसंद तथा इच्छानुरूप मिथुन अथवा कुंभ राशि के जीवन साथी का चयन करें तथा कर्क, मकर एवं मीन जल तत्व राशि के साथी का त्याग करें। आपके लिए यह अनिवार्य है कि आपका घरेलू जीवन सुव्यवस्थित हो। यदि संयोगवश आप अपने जीवन साथी के साथ समान तारतम्य नहीं रहा तो अप्रियता एवं दुःखद अनुभव करेंगी। इस प्रकार आपका पारिवारिक जीवन किसी संभावित घटना के कारण असंतुलित हो जाय तथा आपके संपर्क का परित्याग हो जाए। पुनः आप किस प्रकार गृह व्यवस्था सुनिश्चित करेंगी।

आपके जीवन का अन्य रुचिकर विषय आपके मित्र से संबंध स्थापित करने का है। आपकी इच्छा रहती है कि आपके अच्छी मित्र मण्डली हो। जिसके सहयोग के लिए आप सतत कुछ भी करने के तत्पर रहेंगी। आपका अन्य पक्ष यह है कि आप अपने स्तर से अपने मित्रों को प्रस्तुत करेंगी। वास्तविकता तो यह है कि आपके दृष्टिकोण में ऐसा है कि ये मित्र आपके लिए पीठ की हड्डी अर्थात् रीढ़ की भांति प्रमाणित होंगे।

आपके जन्म संयोजन में चित्रा नक्षत्र एवं तुला जन्म लग्न के प्रभाव से आप अत्यंत ही लाभ एवं जीवन की सभी सुविधाओं से युक्त रहेंगे, परंतु बृश्चिक नवमांश के कुप्रभाव से जहां तक हो अड़चन बाधाओं से युक्त परिस्थिति भी हो सकती है। इस प्रकार की परिस्थिति अन्त में आपकी बाधाओं से मुठभेड़ करा सकती है जो आपके शारीरिक अंगों में रोग उत्पन्न करा कर आपकी समृद्धि में बाधक बन जाएं। अतएव आपके लिए अति अनिवार्य है आप गुप्त रोग जनित कार्य से विक्षिप्त प्रभाव के कारण यह संभाव्य है कि आपको मुंह छिपाना पड़े। अतः आप मंगलवार के दिन उपवास रहने का प्रयास करें-यह आपके स्वास्थ्य के लिए सहायक होगा।

आप व्यक्तिगत रूप से सक्रियता पूर्वक आप में यह क्षमता विद्यमान है कि आप अपनी शक्ति सम्पन्नता का अच्छा प्रभाव अपने गुणों के अनुसार किसी भी क्षेत्र में अनिवार्य रूप से सफलता प्राप्त कर सकती हैं। आप कठिन श्रम करने के लिए सुनिश्चित कर सम्पन्नता का

लाभांश यथा धन प्राप्ति के अतिरिक्त भूमि भवन का लाभ प्राप्त कर सकती हैं।

आपको इस प्रकार की आदतों का परित्याग कर सुख आराम की प्राप्ति हेतु व्यवसायिक प्रवृति से पृथक करना चाहिए। आपको प्रेम-प्रसंग हेतु अपने समय का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। आपको अपनी उन्नति हेतु सही तरीके से किस प्रकार सरकारी अधिकारी को प्रभावित करने के लिए किस प्रकार का प्रभावशाली बातचीत कर सके, यह जानती हैं। आप अपने लिए कार्य व्यवसाय में ट्रांसपोर्टर का कार्य, औषधि का व्यवसाय एवं कांट्रेक्टर का कार्य कर सकती हैं।

आप किसी भी व्यक्ति के साथ संगठित हो कर अच्छी प्रकार मिलजुल कर साथियों के मध्य प्रख्यात हो जाती हैं। आप धैर्य पूर्वक विनोद प्रिय एवं आनंददायक बाते करके प्रसन्नता प्रदान करती हैं। इस प्रकार आप अपने स्वभाव को क्षति कर सकती हैं तथा जब किसी प्रकार की घटना क्रम में आप हिंसात्मक प्रवृति की हो जाती है। आप इस प्रकार की प्रवृति के प्रति शिक्षा ग्रहण कर विपरीत स्थिति के प्रति अपने में बदलाव करें। इस प्रकार की मनोवृति को रोकना उत्तम होगा। क्योंकि आपकी यह आदत हानिकारक है। आप अपने जीवन के इन तथ्यों पर विचार नहीं कर सकी तो आपकी बहुत बड़ी क्षति होकर आपकी वृद्धावस्था आर्थिक रूप से प्रभावित हो जाएगी। आप इस प्रकार की समर्पित भावनाओं को नियंत्रित कर लें। इसलिए कि आप को अपना संपूर्ण जीवन आरामदायक ढंग से बिताना है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरुवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए अंको में अनुकूल अंक 1, 2, 4, 7 एवं 8 अंक उत्तम है। इसके अतिरिक्त अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक उपयुक्त नहीं है।

रंगों में आपके लिए हरा, पीला रंग, आपके लिए रूचि कर एवं व्यवस्थित रंग है। परंतु रंग सफेद लाल, नारंगी आपके लिए अनुकूल एवं शुभ है।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आयुर्दाय, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता-पिता, रिपु, विवाह एवं व्यय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा- भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते है तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आपके प्रवृति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगी तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपके प्रवृति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृति काफी व्ययशील होगी। आपके प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगी तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगी।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगी जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों

को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगी। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

RATNA JYOTI

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में स्व प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही पैतृक सम्पति भी आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न एवं धातुओं को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी । आप भूमि या जायदाद संबंधी क्रय विक्रय या संबंधित कार्यो से भी लाभ अर्जित कर सकती हैं। साथ ही कृषि या बागवानी संबंधी कार्यो में भी आपकी रूचि रहेगी। आप एक महत्वांकाक्षी महिला होंगी तथा जीवन में परिवार के सहयोग से इच्छित उन्नति एवं सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी लेकिन विषम परिस्थितियों का सामना करने में आप स्वयं असमर्थ समझेंगी।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा के लिए सुख संसाधनों के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही उनकी सन्तुष्टि के लिए अधिक मात्रा में व्यय भी करेंगी। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी तर्क पूर्ण बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अधिकाशं लोग आपसे सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान की आप प्रिय रहेंगी तथा रूचि पूर्वक इसका भक्षण करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी परन्तु प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक परंपराओं का आप पूर्ण पालन करेंगी तथा शुभ एवं मंगल कार्यो को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सज्जन लोगों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव बना रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा दीर्घ काल तक स्मृति बनी रहेगी जिससे सामाजिक तथा अन्य क्षेत्र में आपको शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी। भाई बहिनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उनकी सुख सुविधाओं के प्रति चिंतित रहेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। वे सभी आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे अतः उनकी गलतियों की भी आप उपेक्षा करेंगी। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांतो पर दृढ़ रहेंगी चाहे इससे कोई परेशानी या समस्याएं क्यों न उत्पन्न हो। साथ ही स्पष्टवादिता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा नेतृत्व के गुण भी आप में विद्य मान रहेंगे। आप किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर उसके बारे में अपनी राय प्रदान करेंगी। आप सद् विचारों की महिला होंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में आस्था रहेगी। आधुनिक संचार साधनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। इसमें टेलीफोन टेलीविजन या वाहन आदि की प्रमुखता रहेगी। संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इससे भी अपना मनोंरजन करेंगी। आपके लिए समीपस्थ स्थानों की यात्राएं लाभदायक एवं ख्याति प्रदान करने वाली होंगी। साथ ही आपकी अध्ययन में रूचि होगी तथा धार्मिक ग्रन्थ वैज्ञानिक या साहित्यिक पुस्तकों का आप अध्ययन करेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था की पदाधिकारी या उच्चाधिकारी होंगी तथा दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगी जिससे समाज में आदरणीया समझी जाएंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगी। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में आदरणीय महिला मानी जाऐंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। विवाह के बाद पति के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगी। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकती है।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगी तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का ध्यान से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उतीर्ण करेंगी। स्नातक परीक्षा भी आप संतोष जनक रूप से उतीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगी। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्राप्त करेंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुंभ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा राहु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी बुबिमता से समस्त सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा उनमें आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। लेकिन राहु के प्रभाव से आप में अवसरानुकूल शीघ्र सटीक निर्णय लेने की क्षमता अल्प होगी जिससे यदा-कदा अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विषयों, विज्ञान एवं पाश्चात्य भाषा में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक उनके ज्ञानार्जन में रुचिशील होंगी तथा एक विदुषी के रूप में अपनी स्थिति स्थापित करने में समर्थ होंगी।

राहु की पंचम भावास्थ स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाव के लिए आप ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगी। लेकिन आपको इन प्रेम-प्रसंगों में मर्यादा एवं नैतिकता का विशेष ध्यान रखना चाहिए अन्यथा इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। वैसे आप प्रेम सम्बन्धों में आदर्शवादिता का भी प्रदर्शन कर सकती हैं।

संतति भाव में राहु के प्रभाव से आपको पुत्र संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति तेजस्वी, पराक्रमी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेगी। माता-पिता के प्रति उनके मन में सामान्य आदर का भाव होगा परन्तु वे अपने ही मन की करने वाले होंगे। अतः यदा-कदा माता-पिता की आज्ञा की अवहेलना भी कर सकते है। वे अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को भी स्वेच्छा से ही करेंगे तथा इसमें माता-पिता की सलाह कम ही लेंगे। लेकिन आपको इसकी चिन्ता कम ही करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देना चाहिए इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपकी उपेक्षा कर सकते है ऐसी स्थिति में अपने लिए वांछित धन अर्जित करके रखना चाहिए जिससे अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति सामान्य रूप से उन्नति शील होगी तथा परिश्रम पूर्वक वे सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी उनकी शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी। आपके बच्चे तेजस्वी एवं पराक्रमी होंगे तथा यदा-कदा अन्य जनों से वे वाद-विवाद भी कर सकते है। इससे आपके लिए यद्यपि अनावश्यक परेशानी होगी परन्तु अपने सद्व्यवहार से आप स्थिति संभालने में समर्थ होंगे। इस प्रकार संतति से सुख आपके लिए सामान्य ही होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही अन्य शत्रु भी मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। आपके सेवक भी आपके लिए आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगी तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले से ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी। साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगी परन्तु इसमें हानि की अवस्था में ऋण आदि भी ले सकती है लेकिन कर्जदाता आपसे विशेष सहयोग नहीं करेंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके मान सम्मान में न्यूनता कर सकते हैं। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश अच्छे कार्यो में करके आपको बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए । इसके साथ ही अवसरनुकूल बन्धुवर्ग या अन्य संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते है। अतः सोच समझकर किसी भी कार्य को प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक जमीन जायदाद या फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा जीवन में दाम्पत्य जीवन की मधुरता में न्यूनता आ सकती है। मामा मामी से आपके संबंध मध्यम ही रहेंगे तथा परस्पर सहयोग के भाव में न्यूनता ही रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब भी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो, तंत्र मंत्र या अन्य कार्यो से शान्ति एवं सफलता अर्जित करेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। वृश्चिक राशि के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त, सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रूचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगे। शुक्र के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आएगा। वह सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित रहेंगे तथा संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह बंधु वर्ग या संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा सप्तम भाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से आप प्रेम विवाह भी कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगी। इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि मित्रवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि पर भी आपका विश्वास रहेगा तथा न्यूनाधिक रूप से इसका ज्ञान भी प्राप्त कर सकती हैं। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की हमेशा प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से सुसम्पन्न रहेगी। अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगी। आप मित्र या बन्धुवर्ग से जायदाद की भी प्राप्ति कर सकती हैं। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी आपको प्राप्त होगी। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति की स्वामिनी बनकर समाज में इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनवान एवं सर्वप्रकार के गुणों से परिपूर्ण रहेंगे जिससे आपको कोई भी परेशानी नहीं होगी। आपकी प्रवृत्ति पार्टियों को भी आयोजित करने की रहेगी जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता होगी। बीमा आदि करके भी आपको इच्छित लाभ हो सकता है अतः अवसरानुकूल आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। साथ ही आपके घर में चोरी आदि की कोई बड़ी घटना नहीं होगी तथापि अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को पहले से ही किसी सुरक्षित स्थान में रख लेना चाहिए । दुर्घटना आदि के योग भी सामान्यतया अल्प रहेंगे तथा अपनी सतर्कता से इन घटनाओं सेसुरक्षित रहने में सफलता प्राप्त करेंगी तथापि आपको तीव्र गति से वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा जीवन में आनन्द एवं सुख का उपभोग करने में समर्थ रहेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा पैतृक एवं पारिवारिक नियमों के अनुसार अपने धर्म के अनुपालन में तत्पर रहेंगी। ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। साथ ही भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगी। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा भाग्यबल से इच्छित धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल तीर्थ यात्रा करने की भी इच्छुक रहेंगी ।

विभिन्न धार्मिक ग्रंथों का आप रूचि पूर्वक अध्ययन करेंगी तथा ध्यान योग, तंत्र मंत्र तथा ज्योतिष आदि में भी आपका विश्वास रहेगा एवं न्यूनाधिक रूप से इनका ज्ञान अर्जित करने में भी रूचिशील रहेंगी। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सकें तो अपनी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति के द्वारा आप पूर्वाभास तथा भविष्य वाणी करने में सफलता अर्जित कर सकती हैं।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने के लिए आत्मबल प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असन्तुलन के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान उत्पन्न होंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान में वृद्धि होगी। इससे जीवन में स्थायित्व आएगा तथा धनवैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान तथा विदुषी महिला होंगी तथा अपनी योजनाओं को बिना किसी रूकावट के सम्पन्न करेंगी। प्रथम पौत्र से आपको अत्यधिक सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त होगी। साथ ही जीवन में अन्यत्र भी शुभ एवं पुण्य कार्य करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा, सौभाग्यशाली, अतिथि सत्कार करने वाली तथा दीन दुःखियों पर कृपा करने वाली होंगी। तथा परोपकार संबंधी कार्य करने में भी तत्पर रहेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगी एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनोग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिटटी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थो यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार की इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षिणक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकती है जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा आर्थिक रूप से धनार्जन उत्तम रहेगा। आप महत्वाकांक्षी होंगी तथा मन में कई उमंगे एवं इच्छाएं विद्यमान रहेंगी साथ ही सौभाग्य के बल पर अधिकाशंतया इनकी पूर्ति में सफल भी रहेंगी। सरकार, औषधि विज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में आप विशेष रूप से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा इन्हीं के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त योग आपके पति की कुंडली में घटित होंगे। इस प्रकार धनार्जन की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में इच्छित सुख, सहयोग, लाभ एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा आप भी पितृवत् उनको आदर प्रदान करेंगी।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आदरणीया रहेंगी। आपके सभी मित्र शिक्षित बुद्धिमान एवं चतुर होंगे। आप एक समाजिक प्राणी होंगी तथा अपने क्षेत्र या समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी। साथ ही अन्य जनों की भलाई तथा सहयोग करने के लिए भी सर्वदा तत्पर रहेंगी। सामूहिक कार्य या मनोंरजन करना आपको रूचिकर लगेगा। जीवन में आप किसी विशिष्ट सामाजिक सम्मान को भी अर्जित करने में सफल हो सकती है। आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा गर्मी आदि से आपको परेशानी हो सकती है एवं बाएं कान में भी किसी परेशानी से कष्ट होगा। परन्तु आपका सामान्य जीवन धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुदृढ़ रहेंगी। जीवन में आपको एकानेक साधनों से धन की प्राप्ति होगी लेकिन आपका रहन सहन खान पान आदि उच्च स्तर का रहेगा अतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन के बाद भी उचित मात्रा में बचत कम ही होगी तथा व्यय ही अधिक रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों तथा उपकरणों पर उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगी। साथ ही वस्त्र आदि भी सुदंर कीमती एवं आकर्षक रहेंगे। इस प्रकार आप अपनी धनाढ्यता का अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा जिसकी सजावट में काफी व्यय होगा। वास्तव में आप कलात्मक रूप से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगी तथा इसके लिए अधिकाधिक धन व्यय की आवश्यकता रहेगी। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इनकी प्राप्ति में कितना भी व्यय क्यों न हो आप उसे अवश्य प्राप्त करेंगी। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ मंहगे होटलों में भोजन या नाश्ता करना आपका शौक रहेगा। अतः आपकी वैभवशालीनता तथा सफलता को देखकर शत्रु आपके लिए रुकावटें उत्पन्न करेंगे जिससे कभी कभी मानसिक रूप से आप तनाव ग्रस्त भी रहेंगी

यात्रा करने में आप रुचिशील रहेंगी तथा देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी सम्पन्न करेंगी। इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। यद्यपि इनमें व्यय अधिक होगा परन्तु भविष्य में लाभ तथा प्रसिद्धि के योग बनेंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न कर सकती हैं। इसके साथ ही विदेश में काफी समय तक प्रवास भी करेंगी।

नक्षत्र फल

नक्षत्र, राशि एवं पाया का संबंध चंद्र से है एवं ये आपके स्वभाव, व्यवहार, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के निधारण में महती भूमिका अदा करते हैं।

नक्षत्रफल आपके स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के संबंध में सटीक फलादेश बताता है। वैदिक अंक ज्योतिष में व्यक्तित्व के बारे में पता करने के लिए जन्म नक्षत्र की सहायता मुख्य रूप से ली जाती है। भारतीय महर्षियों का मानना रहा है कि नक्षत्र में ही हमारे कर्म के फल संचित रहते हैं। नक्षत्र, राशि एवं पाया चंद्र से संबंधित हैं तथा ये हमारे व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, योग्यता आदि का चित्रण करते हैं।

नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि गज, वर्ण विप्र, गण देव, वर्ग सर्प तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दो" या "दौ" अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से एक भद्र महिला होंगी तथा अन्य सामाजिक जनों से आपका व्यवहार मधुर रहेगा। इससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप जीवन में कभी भी धनैश्वर्य का अभाव महसूस नहीं करेंगी एवं सर्वदा इससे सुसम्पन्न रहकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। आप एक संयमशील महिला होंगी जिससे आप अनावश्यक इच्छाओं तथा आकांक्षाओ से भी सुरक्षित रहेंगी। आप में ईमानदारी का गुण विद्यमान रहेगा तथा सभी कार्यों को ईमानदारी से ही सम्पन्न करेंगी। आप की बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं व्यापारादि में शुद्ध मन से लाभ अर्जित करेंगी। साथ ही बुद्धिमता से विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति से युक्त रहकर सुखी रहेंगी।

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप सम्पूर्ण सुन्दर शरीर अंगों से युक्त होंगी एवं इससे आपके सौन्दर्य में विशेष आकर्षण रहेगा। आप समाज के सभी वर्गो में लोक प्रिय रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान तथा आदर भी अर्जित करेंगी। साथ ही उनको आप हर प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए भी उद्य त रहेंगी। आप में शौर्य गुण भी रहेंगे तथा नित्य साहसिक एवं पराक्रम संबंधी कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। आप हृदय से शुद्ध रहेंगी एवं अन्य जनों से आपका व्यवहार स्नेह एवं सम्मान से युक्त रहेगा। इसके अतिरिक्त एक धनाढ्य महिला के रूप में भी समाज में आपकी ख्याति रहेगी।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आप विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने में दक्ष होगी तथा अपने सभी महत्वपूर्ण कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी। आप एक विदुषी भी होंगी एवं विभिन्न प्रकार के शास्त्रादि का परिश्रमपूर्वक ज्ञानार्जन करती रहेंगी। इससे समाज में

आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा रहेगी साथ ही वैभव आदि से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

आपके जानु भाग में कोई चिन्ह या निशान भी हो सकता हैं। आप सलाह आदि के कार्यों में प्रवीण रहेगी तथा समाज में मान सम्मान प्राप्त करेंगी। साथ ही आप सुन्दर एवं गुणवान पति तथा पुत्रों से भी युक्त रहेंगी। आपकी मित्रता भी गुणवान तथा शिक्षित लोगों से रहेगी। आप दृढ निश्चय से अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगी एवं स्थिर लक्ष्मी से युक्त रहकर प्रसन्नता पूर्वक सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप का व्यक्तित्व तथा सौन्दर्य आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपका मस्तक विशाल एवं नासिका ऊंची रहेगी। साथ ही आखें देखने में सुन्दर तथा चित्ताकर्षक रहेंगी। आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर सुडौल तथा पुष्टता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी शिल्प विद्या या चित्रकारी के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इस क्षेत्र में सफलता तथा यशार्जन कर

सकेगी। शत्रु वर्ग को परास्त करने में आप सफल होंगी तथा वे भी आपसे भयभीत रहेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसका ज्ञान प्राप्त करने को भी उत्सुक रहेंगी। विविध प्रकार के शास्त्रों आदि का ज्ञानार्जन करके आप एक विदुषी महिला के रूप में समाज में पूर्ण आदरणीय तथा प्रतिष्ठित रहेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा इसके अनुपालन में भी आप यत्नशील रहेंगी। पुरूष वर्ग में आप अत्यन्त ही प्रिय एवं आदरणीय समझी जाएंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगी। आपकी वाणी मधुर एवं प्रिय होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। जीवन में आप आवश्यक भौतिक सुखों की प्राप्ति करके प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगी। आप में क्रोध की न्यूनता रहेगी एवं सरकारी सेवा में भी नियुक्त हो सकेंगी। जमीन के अन्दर या खान से उत्पन्न द्रव्यों से आप विशिष्ट लाभार्जन करेंगी। आपके पति हमेशा आपके वश में रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को आपके अनुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील स्वभाव की महिला होंगी एवं सभी लोगों से आपके मधुर संबंध रहेंगे। समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करके आप अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी एवं इसके लिए नित्य रूचिशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता का भाव भी आप में रहेगा तथा जीवन में यत्नपूर्वक यथा शक्ति आप इसका अनुपालन करती रहेंगी।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारूदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जलोत्पन्न द्रव्यों तथा मोती आदि रत्नों से सुशोभित रहेंगी एवं व्यापार आदि में इनसे इच्छित लाभ प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही आप अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति की धन सम्पति भी प्राप्त कर सकेंगी तथा जीवन में सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आप सुन्दर तथा नवीन आकर्षक परिधानों के प्रति अत्यन्त ही रूचि शील रहेंगी एवं प्रयत्नपूर्वक इनकी प्राप्ति के लिए सर्वथा उद्यत एवं उत्सुक रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारूदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

जल पीने की इच्छा की आप में प्रवलता रहेगी तथा दिन में कई बार इसका उपयोग करेंगी। आपका अपने पति के ऊपर पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास रहेगा एवं उनके आप पूर्ण रूपेण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। फलतः आपका गृहस्थ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप में विदुषी के सभी गुण विद्यमान रहेंगे। साथ ही कृतज्ञता की भावना भी आप में रहेगी एवं अन्य

व्यक्तियों के उपकृत होने पर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करेंगी। साथ ही आप भाग्यशाली महिला रहेंगी एवं आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न होंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्धान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप अपने जीवन में संयम का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगी तथा सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में रखने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप चतुराई तथा बुद्धिमता से अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगी तथा एक बुद्धिमान तथा चतुर महिला के रूप में सम्मान तथा ख्याति अर्जित करेंगी। जल में क्रीड़ा करना आपको अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा तथा इसके लिए आप नित्य यत्नशील रहेंगी। आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार के धोखे आदि का सर्वथा अभाव रहेगा। साथ ही शस्त्र चलाने में भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा जीवन में शारीरिक कमजोरी की भी अनुभूति करेंगी।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप आजीविकार्जन के कार्यों में ही सर्वदा व्यस्त रहेंगी एवं कभी कभी आपके आय स्रेतों में भी व्यवधान उत्पन्न होगा। फलतः आपको आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा। आपका शरीर कान्ति युक्त रहेगा तथा इससे आपके सौन्दर्याकर्षण में नित्य वृद्धि होती रहेगी। पिता से भी आप धन सम्पत्ति प्राप्त करेंगी एवं जीवन में सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगी। साथ ही आप स्वभाव से ही साहसी होंगी तथा साहसिक एवं पराक्रमी कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप स्वभाव से सन्तोषी होंगी तथा जो कुछ भी उपलब्ध हो उसी में सन्तुष्ट रहेंगी।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से गम्भीर रहेंगी तथा शौर्योचित कार्यों को करने में सर्वथा रूचिशील रहेंगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा सम्माननीय रहेंगी एवं लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे लेकिन आप कंजूस प्रवृति से भी युक्त रहेंगी तथा धन संचय के प्रति विशेष रूचिशील रहेंगी। परिवार या कुल में आप सर्वप्रिय रहेंगी। इसके साथ ही सेवाकार्यों को करने में भी आप तत्पर रहेंगी तथा इससे आपको आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। आप की गमन गति तीव्र रहेगी

तथा धीरे धीरे चलना आपको अरूचिकर लगेगा। आपका आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा तथा अन्य लोगों के लिए यह अनुकरणनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय एवं स्नेहशील रहेंगी।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप अपने आकर्षक व्यक्तित्व तथा विद्धता से समाज के सभी लोगों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा कई अन्य लोगों से भी आपके मधुर तथा मित्रता पूर्ण संबंध रहेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी प्रिय तथा मधुर होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप सरल बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा सब कुछ सरलता से ग्रहण करने की प्रतिभा से आप सम्पन्न रहेंगी। आप को अल्प मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना प्रियकर लगेगा। अन्य जनों के गुणों की आप ज्ञाता रहेंगी तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में सर्वथा सफल रहेंगी। इसके साथ ही आप स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित उत्तमगुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप अतुल धन सम्पति की भी स्वामिनी होगी तथा जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेंगी तथा दान शीलता की प्रवृति से आप सुशोभित रहेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा सभी लोग आपकी बुद्धिमता से प्रभावित रहेंगे। साथ ही आप सादगी पसन्द भी रहेंगी एवं अनावश्यक दिखावे की प्रयत्नपूर्वक उपेक्षा ही करेंगी। इसके साथ ही आप एक महान विदुषी होगी तथा समाज में पूर्ण प्रतिष्ठित जीवन यापन करेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गजयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप उच्चाधिकारियों के मध्य प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी एवं इनसे आपके मित्रता पूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे फलतः आपके महत्वपूर्ण कार्य

सुगमता पूर्वक होते रहेंगे। आप एक बलशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वबल से ही सम्पन्न करेंगी। आप कई प्रकार के सुखसंसाधनों से भी युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप किसी उच्चाधिकारी की सहयोगी या स्वयं भी एक उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित कर सकती हैं। आप एक उत्साही महिला होंगी तथा अपने सभी कार्यों को पूणोत्साह की भावना से सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से

वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक चिन्ताएं, शरीर में व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा वृहस्पतिवार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र पीत चन्दन, हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी तथा समस्त अशुभ प्रभाव दूर होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी एवं लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा मन को शान्ति प्राप्त होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब

लाल किताब को इसके सहज, सस्ते एवं विश्वसनीय उपायों के कारण ज्योतिष का वंडर बुक कहा जाता है।

लाल किताब के ज्ञान को व्यावहारिक माना जाता है क्योंकि यह परंपरागत ज्योतिष के ज्ञान से अलग है। वैदिक ज्योतिष की भांति लाल किताब में भी नौ ग्रहों को ही प्रधानता दी गई है। साथ ही 12 भावों की ग्रह स्थिति के अनुसार फलादेश किया जाता है। फिर भी वैदिक ज्योतिष और लाल किताब में कुछ मूलभूत अंतर है। वैदिक ज्योतिष में भाव स्थिर होते हैं किंतु राशियां स्थिर नहीं होतीं किंतु लाल किताब में भाव एवं राशियां दोनों ही स्थिर होते हैं। लाल किताब कुंडली एवं वर्षफल भी उपायों के संदर्भ में विशद सूचना प्रदान करते हैं जिसे बिल्कुल अलग तरह का, विश्वसनीय, सहज एवं सस्ता माना जाता है।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का

अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौडियां लेकर उसी दिन एक जगह इकटठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या

तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध

(जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य, बेटी-बुआ आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर 100 कुत्तों को एक ही दिन में खाना खिलाना।

RATNA JYOTI

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में ग्यारहवें खाने में सूर्य पड़ा है। इसकी वजह से आपकी इच्छाएं बहुत ऊंची होंगी और पूर्ण भी होंगी। आप पूर्ण धार्मिक विचारों वाली होंगी। सत्तापक्ष से लाभ होगा। आपको ऐशो-आराम मिलेगा और जीवन उत्तम रहेगा। आपको तीन पुत्रों का सुख मिलेगा। आप बाहर से सुंदर दिखने वाला मकान बनाएंगी। आप अमीरी जीवन व्यतीत करेंगी। सुस्ती और लापरवाही से जीवन में आए शुभ अवसरों को खो सकती हैं। आपके जीवन की आखिरी अवस्था अच्छी बीतेगी। आपके परिवार की उन्नति होती रहेगी। आप आस्तिक होंगी। आपके अपने सर्किल में अच्छे ताल्लुकात बनेंगे। बुराई के कामों से आप हमेशा दूर रहेंगी। आप शाकाहारी होंगी और आज्ञाकारी पति तथा संतान का सुख मिलेगा। जीवन में सभी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। आपके पूरे परिवार का धार्मिक होना शुभ होगा।

यदि आप पब्लिक को लाभ देने की बजाय उल्टे उनका काम बिगाड़ा, भेड़-बकरी को मारा या भेड़-बकरी का मांस खाया, पिता/ससुर के बहन-भाई से झगड़ा किया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से पिता के बहन भाई अशुभ फल देंगे। शराब पीने, मांस खाने और झूठ बोलने से चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा नजर आएगा। आपको सपने में सांप दिखें तो, इसका अशुभ फल होगा। दूसरे को गाली देना, लड़ाई-झगड़ा करना, झूठी गवाही देने पर किसी की अमानत में खयानत करने से आपका जीवन बर्बाद हो सकता है। पुत्र जन्म में बाधा या पुत्र सुख नहीं मिलेगा। झूठ बोलने से आपकी शक्ति कम होगी। यात्रा में चोट-हानि का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. झूठ-झूठ से परहेज रखें।
2. शराब-मांस-मछली का प्रयोग न करें।

उपाय :
1. मूली का दान करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

संतान सुख और संतान की लंबी आयु के लिए -
1. 45 वर्ष की आयु में कसाई से बकरा छुड़ा कर जंगल में खुला छोड़ दें।
2. 43 दिन तक रेत पर बिस्तर लगा कर सोयें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से कन्या संतान

अधिक होंगी। आप योजना बनाने में कुशल और बुद्धिमान होंगी। मुकद्दमे में आपको सफलता मिलेगी। मामा पक्ष के लोगों से सहयोग और लाभ की संभावना है। जैसी करनी वैसी भरनी की नसीहत को हर दम याद रखेंगी। आपकी बुआ-बहन-लड़की सुखी रहेगी। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है, आप तड़पते हुए व्यक्ति के मुंह में पानी डालने वाली सबकी हमदर्द होंगी। आपको गरीबी का मुंह नहीं देखना पड़ेगा। आप किसी गंभीर रोग की रोगी नहीं होंगी।

यदि आपने बहन-बेटी का धन प्रयोग किया, अपना भेद किसी को बताया, सूर्यास्त के बाद दूध पिया, छबील या प्याऊ लगाया या आम लोगों के लिए धर्मार्थ कुआं, हैंड पंप लगाया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी माता/सास के सुख में कमी आ सकती है या सौतेली मां के साथ जीवन बिताना पड़ सकता है। 24 वर्ष की आयु में यदि आम जनता के लिए कुआं या पानी का साधन लगवायेंगी तो उसका बुरा असर माता/सास और संतान पर पड़ेगा। आपके पति की आंख में कुछ खराबी होने की संभावना है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों का नुकसान होने की उम्मीद है। शत्रु आप से भय खाएंगे। कोर्ट-कचहरी का झमेला आपको झेलना पड़ सकता है। आपको कभी-कभी गंभीर चिंता करनी पड़ सकती है। आप जब कभी बिना सोचे-समझे काम करेंगी तो सामने परेशानी आ सकती है। माता/सास को कष्ट रहेगा, मौत तक भारी समय आयेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. 24 वर्ष आयु में मुफ्त पानी दान का साधन कायम न करें।
2. किसी को अपना भेद न बताएं।
3. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

उपाय :

1. शमशान-अस्पताल में पानी का साधन कायम करना शुभ है।
2. माता/सास को कष्ट के समय खरगोश पालें।
3. चन्द्र ग्रहण में 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल छठे खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आपका जन्म बड़ी मिन्नतें मांग-मांग कर हुई होगी या आपके संतान देरी से पैदा होगी या बुढ़ापे में औलाद का सुख मिलेगा। आप मान-सम्मान प्राप्त करेंगी। सरकारी विभाग में अच्छी उच्चाधिकारी होंगी। आपके भाग्य की रक्षा होगी। आप साधू-सन्यासी के विचारों की महिला हैं। आप धर्मवीर और ईश्वर पर विश्वास रखने वाली महिला होंगी। आपको दूसरों से दोस्ती करना, पढ़ाई-लिखाई का काम करना, राग विद्या या अपने भाषण, प्रवचन से धन कमाना शुभ रहेगा। आपकी लेखन

कला जानदार होगी। आपकी भाग्योन्नति होगी। आपकी औलाद पर किसी प्रकार का बुरा असर नहीं पड़ेगा। आप कुछ धन छोटे भाइयों को दें तो अच्छा रहेगा। आपके दुश्मन कम होंगे या दुश्मन आप से दबे रहेंगे, ऐसी उम्मीद है। आप स्वस्थ्य और प्रसन्न रहेंगी। विवाह के बाद तरक्की होगी। साहूकारी भी लाभ देगा।

यदि आपने भाई से शत्रुता रखी, मंदे राग गाने को शौक रखा, पशुओं से संबंधित काम किया, परिवार में बहनों में दूसरा नंबर हुआ तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके भाई का नुकसान होने की आशंका है। आप शारीरिक दृष्टि से कमजोर होंगी। आपको अचानक हानि भी उठानी पड़ सकती है। संतान का सुख कम ही मिलेगा या बच्चा गोद लेना पड़ सकता है। आपकी मनोदशा दूषित रहेगी। आप खुद दुःख झेलेंगी परंतु दूसरे को तकलीफ नहीं देंगी। आपकी भाई से शत्रुता आपको हानि देगी। आपके भाई की माली हालात कमजोर होगी। आपको माता/सास का सुख कम मिलने की शंका है। पशुओं से संबंधित व्यापार से हानि होगी। आपको सरकारी विभाग द्वारा परेशानी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. भाई से झगड़ा न करें।
2. खुशी के समय मीठा न बांटें, यदि मीठा बांटना हो तो साथ में नमक जरुर बांटें।

उपाय :
1. 9 मन (360 किलो) गेहूं हर समय घर में रखें।
2. भैंसे को चारा खिलायें या मजदूर पेशा आदमी की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से स्थिति अच्छी बन सकती है। वैसे आपको धन-संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगी। आपकी बहन/ननद-लड़की अपने ससुराल में ही सुखी बसेंगी, मगर पिता अपने घर में दुखी रहेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये-लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल रहेगी। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन/ननद, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगी। सट्टे-लाटरी का काम, दलाली या तंबोला आदि के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता/ससुर के धन पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा।

कभी-कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता/ससुर के लिए अशुभ होगा। आपके पति का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :
1. स्टैनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दीर्घायु, धनवान रहेंगी। आपकी और आपके पिता/ससुर की लंबी आयु होगी। आप चरित्रवान, शील स्वभाव से अच्छी, विवेकी एवं पूरे परिवार की विपत्ति को अपने सिर पर लेने वाली होंगी। धन और आयु वृद्धि होती रहेगी। अधिक कठिनाई में ईश्वर आपकी मदद करेंगे। आप आध्यात्मिक एवं गुप्त विद्या की माहिर होंगी।

यदि आपने दूसरे के धन का उपभोग किया, भलाई करने वाले का बुरा किया, दीन-दुःखियों को सताया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपको अपने पिता/ससुर से हमेशा दूर रहना पड़ सकता है। आप पिता/ससुर से अलग रहे तो आपका समय खराब होगा। आप अफवाहों की शिकार बनेंगी। आप यदि साध्वी हो जाएं तो दुःखी रहेंगी। आपके परिवार में कई प्रकार की मुसीबतें पैदा हो सकती हैं। कभी-कभी आपके हौसले मंदे पड़ जाएंगे। आपको मूत्र रोग आदि बीमारी या मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बार-बार जन्म लेना पड़ सकता है। मोक्ष मिलने की उम्मीद कम है। आपके कामों में अड़चनें आएंगी। आपके शरीर में सुस्ती रहेगी या हर समय मन बुझा-बुझा सा रहेगा। कोई दुर्घटना या बड़ी मुसीबत का योग बन सकता है। आप अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्य कर बैठेंगी जिससे आपको बहुत पछतावा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. आवारा साधू का साथ न रखें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. शरीर पर सोना पहनें।
2. दही, आलू, घी धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र नौंवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका भाग्य मंदा रहेगा। 25 वर्ष के बाद का समय अच्छा रहेगा। इसलिए 25 वर्ष की उम्र के बाद शादी करें। अमीरी होने के बाद भी परिश्रम से रोटी प्राप्त होगी। तीर्थयात्रा करना संतान के लिए शुभ है। आपके पास धन भी होगा। आप एक बुद्धिमान महिला की तरह हैं। आपको मन में शक्ति मिलेगी तथा धन-दौलत पर अच्छा असर पड़ेगा। नौकर-सेवकों से सुख मिलेगा।

यदि आपके घर में ढेक का वृक्ष, एल्युमिनीयम के बर्तन हुए, 25वें वर्ष में विवाह किया, छोटी आयु में मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से विवाह के बाद से आपके पीछे दुःख लग जाएगा। पुरुष, धन-दौलत पर बुरा असर पड़ेगा, ऐसी आशंका है। आप दूसरों की मुसीबत और मंदी सेहत का जंजाल अपने ही गले लगा लेंगी। आप नशे की बुरी लत के कारण बिमारियों से तंग रहेंगी। आपकी धन-दौलत की बर्बादी का कारण भाई-बंधु बनेंगे। गुप्त रोग हो सकते हैं। लोगों से एतबार पर लेन-देन का फल मंदा हो सकता है। आपको खेती-बाड़ी से अच्छा लाभ नहीं होगा। आपके और आपके पति के लिए परेशानियां पैदा होंगी। आपके पास धन-दौलत इकट्ठी नहीं होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. 25वें वर्ष विवाह न करावें।
2. एल्युमिनीयम का बर्तन प्रयोग न करें।

उपाय :
1. मकान बनावें तो नींव में चांदी के बर्तन में घहद भर कर रखें।
2. पति को चांदी के कड़े में तांबे की कील लगाकर दायें हाथ में पहनायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि तीसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप स्वस्थ, विद्वान, विवेकी और खर्चीले स्वभाव की होंगी। धन की कमी नहीं रहेगी। आपके पास बहुत धन आएगा। आप पराए लोगों की मदद करेंगी। आपको चोरी और धन नाश के लिए सतर्क रहना चाहिए। आप सबकी मदद करेंगी मगर वह व्यक्ति दूसरों का काम बिगाड़ेगा, और खुद आराम पाएगा। आपके जीवन में अड़चने भी पैदा हो सकती हैं। आप साहसी होंगी। भाई-बहन से सामान्य सुख के आसार हैं। आप दुःसाहस करने में भी बाज नही आएंगी। लोहा/मशीनरी से

संबंधित कामों से धन लाभ होगा।

यदि आपने चोरी-ठगी की, घर का मुख्य दरवाजा पूर्व या दक्षिण दिशा में हुआ, दूसरे लोगों के काम बिगाड़े तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से शराब पीना, मांस खाना अच्छा फल नहीं देगा। नगद धन का अभाव रह सकता है। नर संतान को कष्ट की आशंका है। आपकी आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। छोटे भाई से दूरी या उसका सुख न होगा। भाई-बंधु आपकी नेकी को भूल जाएंगे। चोरी-ठगी करने पर भी धन की कमी रहेगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। मकान बनाने में बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मछली का सेवन न करें। मछली का शिकार न करें।
2. कीकर-बेरी का वृक्ष घर में न लगावें।

उपाय :

1. तीन कुत्तों को भोजन का हिस्सा देवें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी बनावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में राहु पड़ा है। आपकी 21 वर्ष आयु में प्रथम पुत्र और 42 वर्ष आयु में दूसरा पुत्र पैदा होगा। आपको पुत्रों का सुख मिलेगा, उम्मीद है। औलाद मूर्ख और आप ब्रह्मज्ञानी होंगी। आपकी औलाद से अधिक सुखी जीवन आपके पोते-पड़पोते का होगा। आप चंचल और अस्थिर बुद्धि की होंगी। आपकी माता/सास का जीवन भर बड़ा सुखमय समय रहेगा। धन-संपत्ति और औलाद में वृद्धि होगी। आपको भाई का सुख मिलेगा। आप परिवार और माया की ओर से सुखिया होंगी। धर्म-मर्यादा की मालकिन होंगी। व्यापार आपके लिये सबसे उत्तम धन कमाने का साधन होगा, राज्याधिकारियों से लाभ होगा।

यदि आपने पति से अच्छे संबंध न रखे, उससे तलाक लिया, बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब कर ली, पिता या ससुर से झगड़ा किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप बचपन में शरारती होकर पढ़ाई-लिखाई में मन नहीं लगाएंगी। शिक्षा अधूरी रह जाएगी या मन के मुताबिक पढ़ाई नही कर सकेंगी। संतान हुई तो जन्म से 12 वर्ष पति का स्वास्थ्य खराब रहेगा। पहली संतान नहीं बचे ऐसी शंका बनती है। पति से तलाक या जुदाई हो, ऐसी शंका है। पति से तलाक या जुदाई की तो संतान का सुख न मिलेगा। आप पाप कर्म में रत हो सकती हैं। आपको पुत्र का सुख न मिले, ऐसी शंका है। आपकी सेहत बिगड़ सकती है तथा बेकार का धन खर्च होगा। आपकी आंखों की दृष्टि में भी कोई दोष उत्पन्न हो सकता है। आपके काम करने का ढंग भी स्थिर नहीं रहेगा। काम की चीजों को भी इधर से उधर करती रहेंगी। अस्थायित्व और चंचलता की आप

शिकार होंगी। आपका भाई अमीर या निःसंतान होगा, ऐसी आशंका है। समय साढ़े दस, 21-42वां वर्ष पिता या ससुर की आयु पर भारी रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. दूसरा विवाह न करें।

उपाय :

1. चांदी का ठोस हाथी घर पर रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज के नीचे चांदी की पत्ती लगाएं।

नोटः यदि दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले मकान में रिहाईश हो तो भी उपरोक्त उपाय जरूर करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप बहुत धन-दौलत की मालकिन होंगी। इसके श्रेष्ठ फल से आप निहाल हो जाएंगी। आपको अपने भविष्य के लिए जागरूक रहना चाहिए। आपको राजपक्ष से शासन से संबंधित कार्यों में अच्छा फल मिलेगा। खानदानी जायदाद से अधिक जायदाद अपने हाथों से बना लेंगी। आपके जीवन में उत्तम राजयोग की संभावना है। आप सरकार पक्ष से या सम्मानित व्यक्ति से लाभ प्राप्त करेंगी। आप यदा-कदा हिम्मत हार बैठेंगी। आपकी औलाद शारीरिक तौर पर अच्छे स्वभाव की और अच्छे काम करने वाली होगी।

यदि आपको काम पर जाते समय कोई पीछे से कोई आवाज दे, माता/सास से झगड़ा या माता/सास का विरोध किया, पुत्र संतान का लालन-पालन अच्छी प्रकार न किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से संतान पक्ष को कुछ कष्ट की आशंका है। मां/सास के साथ आपके मधुर संबंध में न्यूनता की आशंका है या माता/सास को आपकी संतान से सुख नहीं मिलेगा। आपको हमेशा ही पेट में दर्द की बीमारी लगी रह सकती है। आपके पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् माता/सास के सुख का अभाव हो जाएगा। माता/सास की आंखों का आप्रेशन हो सकता है। बल्कि कुछ सुस्त या सैक्स के प्रति अनिच्छा भी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शुभ काम पर जाते समय पीछे से कोई आवाज दे तो शुभ काम पर न जाएं।
2. व्यतीत समय को याद न करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता न पालें।
2. काले-सफेद पत्थर के चकले पर रोटी बेल कर बनायें।

PATNA JYOTI

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश

वार्षिक फलादेश गोचर पर आधारित हैं जिसमें शनि, राहु एवं बृहस्पति के गोचर से आपकी जन्मकुंडली का कोई अंश ऊर्जावान होता है जिसके प्रभाव से आपके जीवन में आने वाले वर्ष के घटनाक्रम की जानकारी प्राप्त होती है।

वार्षिक फलादेश से उस वर्ष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों जैसे स्वास्थ्य, परिवार, संपत्ति, धन, आजीविका, व्यवसाय, शिक्षा, यात्रा एवं स्थानांरण आदि का विवरण विस्तृत रूप में उपाय सहित दिया गया है। वार्षिक फलादेश मुख्य ग्रहों के गोचर पर आधारित है।

वार्षिक फलादेश - 2019

इस वर्ष शनि धनु राशि में तृतीय भाव में रहेंगे। 23 मार्च को राहु मिथुन राशि में नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को गुरु धनु राशि में तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 23 अप्रैल को वृश्चिक राशि में द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 05 नवम्बर को धनु राशि में तृतीय भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा फल दायक रहेगा। वर्षारंभ में आपको अकस्मात लाभ होने की प्रबल संभावना है। व्यापारी वर्ग को इस वर्ष अधिक से अधिक पूंजी निवेश करके व्यापार को बढ़ाना चाहिए जिससे उनको आने वाले समय में अधिक से अधिक लाभ हो सके।

जो लोग अपने स्थानान्तरण का इंतजार कर रहे हैं मार्च के बाद उनका अपनी मनचाही जगह पर स्थानांतरण हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे अपने कार्य स्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। द्वितीय स्थान का गुरु धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। जिससे आप इच्छित बचत करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि से पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने के योग बन रहे हैं।

परिवार में मांगलिक कार्योंपर खर्च हो सकता है। यदि आपका पैसा कहीं फसा है तो वो भी मिल जाएगा। परिवार में किसी बड़े सदस्य या अपने मातुल पक्ष से भी आपको धन लाभ हो सकता हैं। निवेश के लिए यह समय अच्छा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अनुकूल रहेगा।द्वितीय स्थान में गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको अपने पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

आपके मामा के साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। 23 मार्च के बाद समय और भी अनुकूल हो जाएगा। तृतीय स्थान का शनि आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा मे वृद्धि प्रदान करेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। शिक्षा के प्रति इनका रुझान बढेगा। अपनी मेहनत व परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। यदि विवाह के योग्य है तो इनका विवाह संस्कार भी हो सकता है।

23 मार्च के बाद पंचम स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण संतानोत्पति मे बाधा उत्पन्न हो सकती है। इनका स्वास्थ्य व शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समय अपनी संतान पर विशेष ध्यान देने की आावश्यकता है।

स्वास्थ्य

इसवर्ष आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपकी कार्य क्षमताओं व रोग प्रतिरोधक शक्तियों का विकास होगा। पारिवारिक जीवन की प्रसन्नता भी आपको तनाव मुक्त व स्वस्थ रखेगी।

रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए योग ध्यानादि क्रियाओं में रुचि लें व सात्विक आहार करें तथा प्रातः सूर्योदय से पहले उठने का अभ्यास करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह सफलतादायक सिद्ध होगा। यह वर्ष रोजगार प्राप्ति का शुभ समाचार लेकर आ रहा है। तकनीकि शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक विद्यार्थियों को विदेश जाने का अवसर प्राप्त होगा।

तकनीकि शिक्षा, प्रोद्योगिकी आदि के क्षेत्र में शिक्षा देने वाले बेहतर शैक्षणिक संस्थान में दाखिला मिलने की संभावनाएं बनी हुई हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 29 मार्च से 23 अप्रैल के बीच व्यवसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्रा होगी। द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बनाए हुए है।

23 मार्च के बाद आप कोई लम्बी यात्रा करेंगे परन्तु इस यात्रा के दौरान आपको शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आपके मन में धर्म के प्रति रुचि बढेगी और आप धार्मिक कार्य सम्पन्न करेंगे। शिव पूजा आपके लिए सभी प्रकार से कल्याणकारी सिद्ध होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।(तांबे की लोटे में लाल चावल डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।)
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने घी का दीपक जलाएं और लक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप उत्तम एवं शुभ फलों को अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल सिद्ध होंगी। साथ ही समाज में आपकी यश तथा प्रतिष्ठा भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए प्रवृत रहेंगी। साथ ही दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी आप कार्य करती रहेंगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आप वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी तथा उन्हें अपनी सहायता प्रदान करेंगी। इसके अलावा आप अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को पूर्ण करने में भी समर्थ रहेगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा बुद्धि में भी निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। नाना प्रकार के सुखों का आप इस समय उपभोग करेंगी तथा धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी जिसके फलस्वरूप आप घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन कर सकेंगी। इस प्रकार यह मास आपके लिए सुख दायक रहेगा।

फरवरी 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फल प्राप्त करेंगी। इससे आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक दुर्बलता की भी आप अनुभूति करेंगी। साथ ही दुश्मनों से भी आप चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी जिससे मानसिक रूप से चिन्तित एवं अशान्त होंगी। इस समय पारिवारिक जनों से संबधों में विशेष मधुरता नहीं रहेगी तथा परस्पर मन मुटाव अधिक मात्रा में रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में इस समय मन्दी आएगी तथा स्थान परिवर्तन के योग भी बन सकते है। साथ ही किसी कारण वश आपका कोई महत्वपूर्ण कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों से आपके मधुर संबध अल्प ही रहेंगे तथा विवाद अधिक मात्रा में सम्पन्न होंगे जिससे समाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग अथवा अन्य प्रकार से धन हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा अपनी तीव्र बुद्धि से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगी। धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा किसी धार्मिक कार्य क्रम का आयोजन भी आप इस मास में कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी शुभ फल प्राप्त हो सकते है।

मार्च 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप समान्यता शुभ फल ही प्राप्त करेंगी परन्तु अशुभ फल भी न्यून रूप से घटित होते रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा अपने महत्वपूर्ण कार्यों को आप बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगी। इस मास में आप पुत्र सुख अवश्य प्राप्त करेंगी एवं अन्य प्रकार से भी आपको धन एवं द्रव्य लाभ होगा। इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी महत्ता को मन से स्वीकार करेंगे। इसके साथ ही आपके कई शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से किसी शुभ समाचार के मिलने की भी सम्भावना रहेगी। आपके मन में धर्म के प्रति भी श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों की आप श्रद्धापूर्वक पूजा एवं सेवा करेंगी। सरकार या उच्चाधिकारीवर्ग से भी आप उचित सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके साथ ही समाज में आपकी मानप्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताएं भी खत्म होंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे। अतः आप पित्त या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक अस्वस्थता एवं दुर्बलता प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार रूधिर विकार की भी सम्भावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा के प्रति इस समय आपको पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए।

अप्रैल 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा। अतः इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी प्रबल रहेगा जिससे उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप बेचैनी की अनुभूत करेंगी। इस समय आपके घर में चोरी भी हो सकती है। आप अपने उच्चाधिकारियो की ऐसे समय में उपेक्षा न करें एवं उनकी आज्ञा का पालन करती रहें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित भी हो सकती हैं। इस मास में आपके शुभ कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा आपको अत्यधिक मात्रा में परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही अन्य प्रकार से धन हानि भी हो सकती है। जिसके कारण इस मास में आप आर्थिक संकट भी प्राप्त कर सकती हैं। इस मास में आपके मित्रों तथा सम्बन्धियों से सम्बन्ध अच्छ नहीं रहेंगे तथा आशाएं भी आपकी अल्पमात्रा में ही पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति तथा पुत्रों से वांछित सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या वस्तुओं का लाभ भी प्राप्त हो सकता है।

मई 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपको पति एवं बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त होगा तथा शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा जिससे उनकी ओर से आपको भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। अतः आप मानसिक रूप से उद्विग्न तथा असन्तुष्ट रहेंगी। इस मास आपके उत्साह में भी कमी आएगी तथा धन भी अधिक मात्रा में

खर्च होगा। अतः आप आर्थिक संकट से भी कष्टानुभूति करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा लोभ के भाव की भी प्रबलता आपके स्वभाव में रहेगी। मित्रों एवं बन्धुवर्ग से आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा मित्र भी इस समय शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक या अन्य समाजिक जनों से भी विवाद आदि की आशंका बनी रहेगी अतः यह समय आपके लिए कष्टदायक ही रहेगा।

साथ ही इस मास में आप वातजन्य रोगों से पीड़ित भी रहेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि का भी भय बना रहेगा एवं इसके द्वारा न्यूनाधिक आर्थिक हानि हो सकती है। अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें जिससे अशुभ फलों में न्यूनता हो सके।

जून 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप समान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी। इस समय आप शत्रुओं से अत्यंत ही भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी एवं मानसिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी आदि भी हो सकती है। साथ ही इस समय आपका धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे सामान्य आर्थिक संकट भी रहेगा। धर्म के प्रति भी आपकी इस मास में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा शारीरिक अस्वस्थता के कारण आप दुर्बलता की भी अनुभूति करेंगी। इस मास में घर से दूर किसी स्थान की यात्रा भी कर सकती हैं। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में विध्न बाधाएं अधिक मात्रा में आएंगी फलतः परिश्रम करने पर भी कार्यों में अल्प सिद्धि ही प्राप्त हो सकेगी। इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है। अतः सोच समझकर ही समय व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से अस्वस्थ रहेंगी तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिसके कारण बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा इससे आपकी समाजिक रूप से अवमानना भी हो सकती है। इसके साथ ही अग्नि के द्वारा भी आपकी धन सम्बन्धी हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

जुलाई 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण शुभफलदायक रहेगा अतः आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सफल रहेंगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप किसी सम्माननीय पद को प्राप्त कर सकेंगी। सरकार या अन्य उच्च वर्ग के लोगों से भी आप धनलाभ अर्जित करने में सफल होंगी। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम भी हो सकता है। साथ ही पति एवं पुत्र से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा इनकी पूजा एवं सेवा करने में भी आप तत्पर रहेंगी। इस मास

आपके समाज में यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता रहेगी एवं दूर समीपस्थ स्थानों में लाभदायक यात्राओं के योग बनेंगे। उच्चाधिकारियों से भी आप सहयोग अर्जित करेंगी एवं मित्र तथा बन्धुवर्ग से आपके अत्यंत ही मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करेंगी।

साथ ही इस मास में आपका गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा एवं नवीन वस्त्र तथा आभूषणादि को भी प्राप्त करने में आप सफल रहेंगी। इस प्रकार आप आनंदपूर्वक इस समय को व्यतीत करेंगी।

अगस्त 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इस समय अजीविका के क्षेत्र में पूर्ण उन्नति करेंगी तथा प्रचुर मात्रा में आपको धन लाभ भी होता रहेगा।साथ ही आपके उच्चाधिकारी वर्ग से भी मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा मित्र एवं बन्धु वर्ग से आप यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। साथ ही इनसे संबधों में मधुरता तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आपके कई विलम्बित कार्य भी इस मास सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण सुख अर्जित करेंगी तथा बन्धुबान्धवों में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साथ ही आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। इसके अतिरिक्त समाज में सर्वत्र आपके मान सम्मान में वृद्धि होती रहेगी तथा आप प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत कर सकेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित्तादि से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगी एवं रूधिर विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः सावधानीपूर्वक आप अपने कार्यों को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें जिससे अनावश्यक समस्या उत्पन्न न हो सके।

सितम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलप्रद रहेगा। इस समय सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी एवं पति से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। साथ ही पुरूष वर्ग से भी आप सहयोग तथा लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय उचित लाभ प्राप्त करने में आप समर्थ सिद्ध होंगी। इस मास में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। ज्ञान प्राप्त करने के लए भी आप उत्सुक रहेंगी तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा इनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख आपको प्राप्त होता रहेगा। साथ ही अन्य वांछित द्रव्यों की भी आपको प्राप्ति होगी। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इसके अलावा आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस समय

सम्पन्न हो सकते हैं। इससे आप हार्दिक व मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा अन्य पारिवारिक जनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग भी अर्जित करेंगी। इस समय आपकी बुद्ध में निर्मलता आएगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होगा। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में निष्ठा का भाव उत्पन्न होगा। इस प्रकार आप सुखपूर्वक रहेंगी तथा समाज में ख्याति भी अर्जित करेंगी।

अक्तूबर 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों की प्राप्ति करेंगी एवं सामान्य रूप से ही यह समय आपका व्यतीत होगा। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आपको दुर्जन लोगों की संगति भी मिलेगी जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। आपका स्वास्थ्य भी इस मास में अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। अत्यंत परिश्रम करने के बाद भी आपके शुभ कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे फलतः आप मानसिक रूप से कष्ट प्राप्त करेंगी। धर्म के प्रति भी इस समय आप विशेष श्रद्धा नहीं रखेंगी। साथ ही मित्रों एवं सम्बन्धियों से अनबन रहेगी तथा सम्बन्ध भी मधुर नहीं रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में भी इस समय विध्न बाधाएं उपस्थित होती रहेंगी तथा शत्रु पक्ष भी प्रबल रहेगा। जिससे आपके मन में भय तथा चिन्ता का वातावरण बना रहेगा। इसके अतिरिक्त मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी।

परन्तु इस समय अशुभ फलों के साथ साथ आपको शुभ फल भी अवश्य प्राप्त होंगे। अतः आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी तथा बुद्धि में भी निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा धर्मानुपालन में भी अपनी रूचि का प्रर्दशन करेंगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप सुखार्जन करने में सफल रहेंगी। अतः यह मास आपका मध्यम रूप से व्यतीत होगा।

नवम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहेगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आपके पराक्रम में इस समय वृद्धि होगी जिससे आप समाज में उचित मान प्रतिष्ठा अर्जित करेंगी।साथ ही आपका शत्रुपक्ष इस समय निर्बल रहेगा तथा आपसे पराजित एवं भयभीत होगा। आपके लाभार्जन के साधनों में इस समय वृद्धि होगी फलतः आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी या व्यापारके अलावा आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभ प्राप्त कर सकती हैं। इस मास में आपके भाग्योन्नति सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे तथा किसी महत्वपूर्ण कार्य में भी आप सफलता प्राप्त करेंगी जिसकी आप चिरकाल से आशा कर रहीं थीं। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा परस्पर यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी समय सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग को भी आप प्रसन्न करने में सफल रहेंगी जिससे अतिरिक्त लाभ एवं प्रतिष्ठा मिलेगी।

साथ ही इस मास में आप पति एवं पुरूष वर्ग से भी वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा लाभार्जन निरंतर होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धाभाव उत्पन्न होगा तथा समाज में पूर्ण मानप्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

दिसम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। इस समय आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगी तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में समर्थ सिद्ध होंगी। साथ ही समाजिक यश को अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगी। बन्धुओं तथा मित्रों से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे परस्पर पूर्ण सुख एव सहयोग का आदान प्रदान करने में सफल रहेंगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आप उचित आश्रय प्राप्त करेंगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल बनाएंगी। इस महीने आप अधिक मात्रा में मिष्ठानादि का भी भक्षण कर सकती हैं। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से आप शान्त एवं प्रसन्न रहेंगी आप इस समय शत्रुओं का दमन करने में सफल रहेंगी तथा वे आपसे अत्यंत ही भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि अन्य कार्यों से भी आप उचित लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों या उच्चाधिकारी वर्ग से वांछित सहयोग एवं सहायता भी अर्जित करेंगी जिससे आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति या विस्तार हो सकता है। इस समय आप नवीन वस्तुओं या वस्त्रों की प्राप्ति भी कर सकेंगी। अतः यह मास आपके लए शुभफलदायक सिद्ध होगा।

वार्षिक फलादेश - 2020

इस वर्ष शनि 24 जनवरी को मकर राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश रहेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में राहु मिथुन में नवम भाव में होंगे और 19 सितम्बर के बाद वृष राशि में अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 30 मार्च को गुरू मकर राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे एवं वक्री होकर 30 जून को धनु राशि में तृतीय़ भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 20 नवम्बर को मकर राशि में चतुर्थ भाव में आजाएंगे। 31 मई से 8 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। दशम भाव पर शनि की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में साधारण परेशानी हो सकती है जिससे आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगें। 30 मार्च से जून पर्यन्तदशम स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

29 जून के बाद फिर से समय सामान्य हो जाएगा। इस समय बड़ा व्यापार प्रारम्भ न करें। यदि करना जरूरी हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य फलदायक रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। जिससे पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर परिवार में मांगलिक कार्य में धन खर्च होगा।30 मार्च से जून पर्यन्तचतुर्थ स्थान में गुरू एवं शनि का युति प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सामान्ययोग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष आपकी पारिवारिक स्थिति के लिए उतार चढ़ाव वाला रहेगा।परिवार में किसी बडे व्यक्ति से वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। 30 मार्च से जून पर्यन्तचतुर्थ स्थान में गुरू एवं शनि की युति प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल हो जाएगा।

29 मार्च के बाद परिवार मे कुछ विषम परिस्थितिया उत्पन्न हो सकती है। परन्तु उस समय के अंतराल आपको सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि बच्चोंके स्वास्थ्य के लिए कुछ चिन्ताकारक है। यदि आपकी द्वितीय संतान विवाह के योग्य है तो उनका विवाह संस्कार हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष उतार-चढ़ाव वाला रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु की संयुक्त दृष्टि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है।

स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद जड़ी-बूटी और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो जल्दी लाभ मिलेगा। सूर्योदय से पहले उठ कर सैर करना लाभ प्रद रहेगा। 19 सितम्बर के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य अनुकूल रहेगा। यदि आप नौकरी पाने के लिए या किसी बड़े संस्थान में प्रवेश पाने के लिए किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष यात्राएं काफी होंगी परन्तु यात्रा के दौरान स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक रहेगा। आप तीर्थ यात्रा पर निकलेंगे।

30 मार्च के बाद विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा।नवम स्थान का राहु धार्मिक कार्यो में व्यवधान डाल रहे हैं। मन की एकाग्रता के लिए दुर्गा पूजा करें।

- सूर्योदय से पहले उठ कर प्रत्येक दिन को सूर्य को जल दे।
- काली वस्तुओं का दान करें एवं ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले में धारण करें।
- दुर्गा कवच का नियमित रूप से नित्य प्रति पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में सफल रहेगी। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा स्व पराक्रम से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही नाना प्रकार के सुखों का आप उपभोग करेंगी। इस समय सामाजिक जनों से आप मान सम्मान अर्जित करेंगी एवं आपका यश भी दूर दूर तक फैलेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा सम्पन्न करेंगी। अन्य जनों के परोपकार संबधी कार्य भी आप इस मास सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। इस समय आप शरीर से पूर्ण स्वस्थ रहेंगी तथा आपके शारीरिक बल में भी पूर्ण वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुजनों एवं मित्र जनों से भी अपेक्षित सहयोग तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा आपके मानसिक संकल्प भी पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगी। इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। अतः इस महीने को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

फरवरी 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में अर्जित करेंगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप पीड़ित रहेगी। साथ ही शत्रु वर्ग भी इस समय प्रबल रहेगा जिससे समय समय पर आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेगी। फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी। पारिवारिक जनों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा तनाव बना रहेगा। साथ ही व्यापार एवं कार्य क्षेत्र में भी हानि या मंदी भी आ सकती है। इस मास आपके स्थान परिर्वतन होने की भी संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से भी आपके मधुर संबध नही रहेंगे एवं उनसे अनबन रहेगी फलतः समाज में सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी से उत्पन्न बीमारियों से कष्ट प्राप्त करेंगी तथा किसी कारण रक्त विकार भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस समय आपको अग्नि के द्वारा भी धन हानि हो सकती है। अतः इस मास में सोच समझकर सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

मार्च 2020 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों को अधिक मात्रा में अर्जित करेंगी।अतः आपकी बुद्धि

में वृद्धि होगी तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता पूर्ण ढंग से सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप सुख प्राप्त करेंगी तथा अन्य प्रकार से भी द्रव्य लाभ होगा। इस समय आपके प्रभुत्व एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न हो जाएंगे साथ ही कोई शुभ समाचार भी आपको सुनने के लिए मिलेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे।सरकार या उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। इसके सअतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी एवं आपके मन की इच्छाएं भी पूर्ण होगी जिससे आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्रों की भी प्राप्ति करेंगी एवं स्वर्णादि के आभूषणों को अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा तथा चारों तरफ से आपको खुशी प्राप्त होगी।

अप्रैल 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः आप शारीरिक रूप से दुर्बल रहेंगी साथ ही आपके शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेगी जिससे आप मानसिक रूप से बैचेन रहेंगी। इस समय आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः इससे भी सावधान रहें। इस मास आपको अपने उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करना चाहिए तथा किसी भी प्रकार से उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अन्यथा आपको वे दण्डित भी कर सकते है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। साथ ही अनावश्यक एवं अधिक मात्रा में धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। इस मास में आपका अपने संबधियों एवं मित्रों से तनाव रहेगा तथा समाज से आप अपने को उपेक्षित महसूस करेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी आशाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण हो सकेंगी।

साथ ही इस मास में आप वायु रोगों से पीड़ित रहेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय अग्नि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय को व्यतीत करें।

मई 2020 के लिए फलादेश

इस महीने में आप कष्ट एवं परेशानियां ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। अतः पति एवं बन्धु जनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगी एवं दुश्मनों की ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी फलतः आपके मन में बैचेनी का भाव विद्यमान रहेगा। इस मास में आप उत्साह

पूर्वक किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में असफल रहेंगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आपको आर्थिक संकट से भी गुजरना पड़ेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मन में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा परस्पर अनावश्यक वैमनस्य एवं तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही ऐसे समय में आपके मित्र भी शत्रु की तरह वर्ताव करेंगे। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों से भी वाद विवाद होते रहेंगे। अतः आप अत्यत ही अशान्ति की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में आप वातोत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा इस समय किसी ऐसे कार्य को भी कर सकती हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा उसके लिए बाद में पश्चाताप करेंगी। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार की हानि प्राप्त कर सकती है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

जून 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को प्राप्त करेंगी तथा मध्यम रूप से आपका यह समय व्यतीत होगा। इस समय आपके शत्रु बलवान रहेंगे अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। साथ ही घर में चोरी आदि होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। साथ ही शारीरिक रूप से आप अस्वस्थ एवं परेशान रहेंगी जिससे शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस प्रकार आप कई प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगी इस मास में आपकी दूर या समीप की यात्रा भी हो सकती है तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य विध्न बाधाओं के कारण पूर्ण रूप से सफल नहीं होंगे। इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का अपव्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमता से अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगी तथा इस समय पति एवं पुत्र से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगी ।नवीन वस्त्र या आभूषण आदि की भी प्राप्ति हो सकेगी जिससे आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

जुलाई 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा ही रहेगा तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन को अर्जित करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। संतति पक्ष से आप निश्चिंत रहेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा। आपकी धार्मिक श्रद्धा में इस समय वृद्धि होगी एवं देवताओं तथा ब्राहमणों का आप हार्दिक पूजन तथा सम्मान करेंगी। साथ ही समाज में आपकी मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपका यश भी फैलेगा। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे जिससे आपकी भाग्योन्नति

होगी। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा यात्रा से आप लाभ अर्जित करेंगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आप पूर्ण सहयोग एवं सम्मान प्राप्त करेंगी इसके अतिरिक्त समाज में आप सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित महिला के रूप में जानी जाएंगी।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित दोष के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा इस समय रूधिर विकार का योग भी बनता है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा के प्रति सर्तक रहें।

अगस्त 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगी।साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। अपने मित्रों एवं बन्धुजनों से आपके इस मास मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगी। साथ ही इनके परोपकार संबधी कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगी आपके रूके हुए कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे जिससे आप हार्दिक प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगी एवं बन्धु वर्ग से आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में पति से आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। आप इस समय धनार्जन करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा श्रद्धा पूर्वक धर्म का पालन करेंगी। इस प्रकार समाज में आपकी यश तथा प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

सितम्बर 2020 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी एवं पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करेंगी। आपका स्वास्थ्य इस समय उत्तम रहेगा तथा मन में भी पूर्ण शान्ति रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आप रूचिशील रहेंगी तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगी। मित्रों तथा बन्धुजनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनके मध्य आप उचित सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी तथा उनका पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करेंगी। इस मास में आप वांछित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगी जिससे प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा इसके अतिरिक्त आपकी अपूर्ण मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगी तथा उनसे

आपको अपेक्षित सहयोग भी मिलता रहेगा। आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा उचित धन लाभ एवं सुखार्जन करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का आयोजन भी कर सकती हैं।

अक्तूबर 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फल प्राप्त करेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आप व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त करेंगी इसलिए आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेगी। आपका स्वास्थ्य भी इस मास में विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम के बाद भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनेंगे। अपने मित्रों तथा संबधियों से आपके विशेष मधुर संबध नही रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में अनावश्यक बाधाएं आएंगी। इस समय शत्रु पक्ष के प्रबल होने से आप उनसे भय त्रस्त एवं चिन्तित रहेगी तथा जिस कार्य को प्रारंभ करेंगी उसमें असफलता ही प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः पति तथा पुरूष वर्ग से आप सहयोग तथा लाभार्जन करने में सफल रहेंगी तथा बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। इस समय उचित लाभ तथा सुखार्जन करने में भी आप सफल रहेंगी। इसके साथ ही समाज एवं सामाजिक जनों में आप की प्रतिष्ठा एवं यश व्याप्त रहेगा।

नवम्बर 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन से भी आप शान्त रहेंगी। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगी। साथ ही आपके आय स्त्रोंतो में भी उन्नति तथा वृद्धि होगी। फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। इसके साथ ही व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोंतो से भी लाभार्जन करेंगी। इस मास में आप भाग्योदय संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा रूके हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सफल हो जाएंगे। अपने मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगी।

इसके साथ ही इस मास में आपके श्रेष्ठ जन तथा उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आप उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय आजिविका संबधी कार्य में भी उन्नति होगी तथा दूर समीप की यात्रा भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त आप इस समय नवीन वस्त्रों तथा द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकेंगी। अतः यह मास आप प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

दिसम्बर 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप शान्ति एवं सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। अतः आप उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगी एवं अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सफल रहेंगी।साथ ही समाज में आपकी मान एवं प्रतिष्ठा में भी पूर्ण वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा इनसे आपके संबध भी मधुर रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा तथा उनसे पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जन करेंगी। इस मास में आप मिष्ठान का उपभोग भी अधिक मात्रा में करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपका शत्रु वर्ग भी इस समय आपसे पराजित एवं भयभीत रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यों में भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभर्जन होता रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी एवं पुरूष वर्ग से आप उचित सहयोग एवं लाभ अर्जित करेंगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा की भावना रखेंगी तथा समाज में भी आपका यश व्याप्त रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2021

इस वर्ष शनि मकर राशि में चतुर्थ भाव में और राहु वृष राशि में अष्टम भाव में रहेंगे। 6 अप्रैल को गुरू कुम्भ राशि में पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 सितम्बर को मकर राशि में चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर फिर से 20 नवम्बर को कुम्भ राशि में पंचम भाव में आजाएंगे। मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 17 फरवरी से 19 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। समय-समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ भी प्राप्त होता रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे।

आप दैनिक कार्यों में स्फूर्तिवान बने रहेंगे और कार्यक्षेत्र में अच्छा करते रहेंगे। नौकरी वालों की पदोन्नती होने केप्रबल योग बने हुए हैं। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक आपका व्यवसाय और अच्छा हो जायेगा। परामर्श कार्यों में सफलता हासिल होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पायेंगे। चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरू के प्रभाव से पारिवारिक सुख सुबिधा एवं भूमि, भवन व वाहन इत्यादि पर निवेश होगा।

यदि किसी भी व्यापार में धन निवेश करेंगे तो उसमें लाभ मिलेगा परन्तु निवेश के मामले में जोखिम उठाने से बचें। आपके अन्दर परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपको धनार्जन में सहायता मिलेगी। 6 अप्रैल के बाद समय और अनुकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर शनि एवं की गुरु युति से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा तथा परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

6 अप्रैल से 14 सितम्बर के अंतरालमें सन्तान के मामले में अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो

सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। यदि आप का बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। कभी-कभी मौसम जनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे। 6 अप्रैल के बाद लग्न स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं तथा व्यक्तित्व विकास सम्बन्धी गतिविधियों जैसे शाकाहारी भोजन, योगासन व व्यायाम आदि में रुचि बढ़ेगी।

14 सितम्बर के बाद कुछ मानसिक तनाव रह सकता है तथा अष्टमस्थ राहु स्वास्थ्य के अचानक गिरने का योग भी बना रहा है। इसलिए राहु का दान करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है।

6 अप्रैल के बाद पंचम स्थान का गुरु विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग बना रहा है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अच्छे संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। 6 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। अष्टम स्थान का राहु समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा करा सकते है।

अपने जन्म स्थान से दूर रहने वाले व्यक्ति अपने परिवार सहित जन्म स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ साथ स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष अपने इष्ट देव की कृपा प्राप्ति, ईश्वर भक्ति तथा धार्मिक यात्राओं व मन्दिर निर्माण आदि कार्यों का संकेत दे रहा है।

- राहु मन्त्र का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले मे धारण करें।
- 21 मंगलवार हनुमान जी को चोला चढाएं।

वार्षिक फलादेश - 2022

इस वर्ष 13 अप्रैल को गुरु मीन राशि में षष्ठ भाव में और 17 मार्च को राहु मेष राशि में सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 12 जुलाई को मकर राशि में चतुर्थ भाव में आजाएंगे। 30 सितम्बर से 21 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। उस समय षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आप के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें।

कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। इस समय के अंतराल में किसी के साथ मिल कर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी पेशा वाले व्यक्ति को मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु गुरु एवं शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि करते हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा और आपका पैसा भी फंस सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक स्थिति के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः उस समय आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा।

जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। राहु एवं केतु के प्रभाव से शारीरिक बीमारी दूर करने में भी आपका धन खर्च होगा। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नही तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियो को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

परन्तु वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः उस समय सहनशीलता व धैर्य से काम लें नहीं तो स्थिति और प्रतिकूल हो जाएगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान में शनि एवं गुरु की युति प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अच्छे संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य हैं, तो उनका विवाह संस्कार भी हो जाएगा। 13 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित रहेगा। उस समय उनके स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से पुष्ट रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी तथा रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुरु शनि एवं राहु ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु जलीय राशि में होने के कारण कफ या मोटापा संबंधित परेशानी दे सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढिया रहेगा। पंचम स्थान का गुरु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे संस्थान में प्रवेश करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में षष्टस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त हो सकती है। आपके शत्रु आपसे पराजित होंगे। जिससे आपको करियर में सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति रोजगार की तलाश में है उनको नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है। 17 मार्च के बाद सप्तम स्थान का राहु आपको व्यवसाय से संबंधित यात्रा भी करा सकता है। यह यात्रा अचानक हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप विदेश यात्रा करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें या मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डुओं का वितरण करें।

RATNA JYOTI

वार्षिक फलादेश - 2023

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरू मेष राशि में सप्तम भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में पंचम भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में षष्ठ भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ राहु पर शनि एवं केतु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावट डाली जा सकती है। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान सम्मान प्राप्त होगा।

22 अप्रैल के बाद सप्तमस्थ गुरू पर शनि की दृष्टि होगी। उस समय आपको व्यवसाय में अच्छा लाभ होगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की सम्भावना है। इस अवधी में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपको कार्यों में लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप इच्छित बचत कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते है। रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। जिससे पुराने चले आरहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। 22 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर और अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। वर्षारम्भ में आपके घर मांगलिक कार्य संपन्न होने का योग बन रहा है।

22 अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो रहा है। यदि आप अविवाहित हैं तो इस समय के अंतराल में आपका विवाह संस्कार हो सकता है। अपने जीवनसाथी या मित्र के साथ

आपके मधुर संबंध होंगे। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि प्राप्त होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। षष्ठ स्थान में गुरू ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहींहोता। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी आ सकता है परन्तु 22 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा होगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। षष्ठ स्थान का गुरु छोटी मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो सावधानी बरतें। लग्नस्थ केतु पर राहु की दृष्टि अचानक आपका स्वास्थ प्रभावित कर सकती है। वर्षारम्भ में स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा।

22 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उसके बाद आपका स्वास्थ्य धीरे धीरे अनुकूल हो जाएगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके खान-पान एवं दिनचर्या में भी बदलाव आयेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

22 अप्रैल के बाद यदि किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी। यदि आप कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरू की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। राहु केतु के प्रभाव से छोटे मोटी यात्राओं के साथ-साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होते रहेंगी। आपकी अधिकांश यात्राएंअचानक होंगी।

22 अप्रैल के बाद सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यापारिक व्यक्ति व्यवसाय से संबंधित यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान का शनि भगवान के प्रति भक्ति का भाव उत्पन्न करेगा। जिससे आप मन्त्र पाठ, साधन और परमात्मा की भक्ति करेंगे। 22 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर और भी अच्छा हो रहा है। उस समय आपको आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। अपने गुरुजनो का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख प्राप्त होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में पंचम भाव में और राहु मीन राशि षष्ठ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरू मेष राशि में सप्तम भाव में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में अष्टम भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा।

यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों का अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान बढ़ेगा। अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उस समय शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं परन्तु षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आप उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे, और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में जीवनसाथी एवं बड़े भाई का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन खर्च होगा। बड़े निवेश के लिए भी समय अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगें। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह संस्कार हो सकता है। आपकी समाजिक पद व प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा। समाज में मान-सम्मान के साथ-साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण और उत्तम हो रहा है। उस समय परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बन रहा है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनकूल रहेगा। स्वगृही शनि पंचमस्थ होने के कारण आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम व पराक्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उसका चौमुखी विकास होगा। यदि वह विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

अप्रैल के बाद अष्टम स्थान का गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकता है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी पढ़ाई-लिखाई पर भी पड़ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या उत्तम होगी।

लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो सावधानी बरतें क्योंकि अप्रैल के बाद समय और प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षओं मे सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलैक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में सफलता मिलेगी।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद व्यापारिक वर्ग का समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से छोटी-मोटी यात्रा होती रहेंगी। सप्तमस्थ गुरू के प्रभाव से व्यापारिक व्यक्तियों को व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं होंगी।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने पत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्य भी कमायेंगे। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से आपके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा विश्वास बढ़ेगा। अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मो पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय अथवा गरीब बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर भी पैसा खर्च हो सकता है।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- गुरूवार के दिन केला या बेशन के लड्डू गरीबों में बांटे, और वीरवार का व्रत रखें।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु छठे भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि छठे भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुअष्टम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि नवम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि दशम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि नवम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु मई के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। वर्षारम्भ में आप परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। अष्टम स्थान के गुरुआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बना रहे हैं। कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे व्यवसाय को ही और सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं।

14 मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आप कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें भाग्य आपका साथ देगा। छठे स्थान के शनि आपके शत्रुओं का दमन करते हुए आपके ब्राण्ड नेम को ऊपर ले जा सकते हैं, जिससे आपके व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ भी प्राप्त होगा। अचल संपत्तित के साथ-साथ वाहनादि का भी सुख प्राप्त होगा।

मई के बाद नवम स्थान का गुरुआपकी आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। उस समय आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक कार्यों या सामाजिक कार्यों एवं बच्चे की उच्च शिक्षा पर आप का धन खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। घरेलू वातावरण अच्छा रहेगा परन्तु सप्तमस्थ शनि की दृष्टि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकती है या किसी कार्यवश आप पत्नी से दूर रह सकते हैं।

14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा ।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति करेगें। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय उच्च शिक्षा प्राप्ति के शुभ योग हैं।

मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। यह समय गर्भाधान के लिए अशुभ है साथ ही गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद लग्न स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी तथा आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सफलता प्रदायक रहेगा। वर्षारम्भ में छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं उनके लिए समय शुभ है। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओ को छोड़कर आगे निकलेंगे। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल जायेगा। मई के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

14 मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगे। नवमस्थ गुरुके प्रभाव से धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी, परन्तु 14 मई के बाद आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पुजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

RATNA JYOTI

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़ीया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे।गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल मेंबच्चेके स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नताएवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध मेंस्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकरघूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकीकिसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जूनके बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती हैअथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रो का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

RATNA JYOTI

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर करे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्टस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआधन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातार्वरण अनुकूल करने की कोशिश करेंगें और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता हैं।

दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में सफलता मिलेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नमम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दुर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छठे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधिओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे परिवारिक अनुकूलता भंग हो

सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नही तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरु हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना हरेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रुकावटें आ

सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। जैसे- माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहें हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नती के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्चे अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापर को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का

अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसाय से जोड़ कर देखा जाए तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए इस साल आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करेंगे। मुख्यतः ग्रहों के गोचर अनुकूल होने के कारण किसी भी समस्या का समाधान करना आपके लिए आसान होगा जिसके चलते आप अपने अधिकारियों की नजरों में आएंगे।

17 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान के शनि व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समृद्धि में कमी आएगी। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिसके चलते आपको आर्थिक तंगी आ सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें, नही तो पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ से ही आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। परिवार के कुछ

लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंग। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष का प्रथम माह बच्चों के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति संतान के लिए अच्छा नहीं है। इस समय के अंतराल में संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई-लिखाई पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

1 मई से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंग। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है। आपके बच्चों के साथ मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका बुरा असर आपके जीवन पर पड़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है। अतः आप खुद को बीमार होने से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

17 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि आपकी मेहनत ही आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगी।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 01 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इस समय आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्रा हो सकती है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 1 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आएगा। इस समय के अंतराल में किसी पर विश्वास करना या कोई नया कार्य प्रारम्भ करना आपके हित में नहीं रहेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यवसाय में साझेदार के साथ एक सफल योजना बना सकते हैं।

9 अगस्त के बाद कार्यस्थल पर वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपने आत्मविश्वास के साथ काम करते रहना चाहिए।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में ग्रह गोचर धन संचय में कमी करेगा। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय आपको बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

अगस्त के बाद आपको लाभ होगा। व्यावसायियों को अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए लुभावने अवसर मिलेंगे। 15 अक्टूबर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में गुरु एवं राहु की युति के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर आपके भाईयों के लिए बहुत शुभ रहेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

9 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे आपके

परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

संतान

वर्षारम्भ से 18 फरवरी तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। 9 अगस्त से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय श्रेष्ठतम है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट व शारीरिक रूप से रोग मुक्त रहेंगे।

9 अगस्त से राहु का गोचर लग्न स्थान में होने के कारण अचानक आप फिर से बीमार हो सकते हैं। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 18 फरवरी के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक सेवा, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

9 अगस्त के बाद लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक आलसी हो जाएंगे और यही आलस्य आपकी सफलता में रुकावट उत्पन्न करेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 15 अक्टूबर के बाद नौकरी मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 18 फरवरी के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटभ यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे। 14

जून के बाद विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्धि के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

RATNA JYOTI

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं अष्टम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिएयह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारणव्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे।आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। बिना किसी पर विश्वास किये आपको अपना कार्य करते रहना चाहिए और इस अंतराल में जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना चाहिए नहीं तो उसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें शनि के गोचर के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। उस समय आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष से प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। माता के लिए समय काफी शुभ है।

23 अक्तूबर से आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवंशनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी जिससे उनकीशिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। मई के बाद समय अच्छा हो रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिएसमय अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

पूरे वर्ष लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

सुबह जल्दी उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर होना शुरु हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 5 मई के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये समय बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए 12 अगस्त के बाद समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 5 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकती है।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है।आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को फलीभू करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।

RATNA JYOTI

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 18 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर भी प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण अचानक आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में है तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपको पुरस्कुत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान-संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का राहु आर्थिक स्थिति में उतार-चढाव करते रहेंगे। लगभग सभी वित्तीय मामलों में आपको निराशा ही हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। 18 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किंचित परेशानि आ सकती है। परन्तु आप नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 18 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे। उनके सारे विरोधी शान्त होंगे। इस वर्ष वे अच्छा उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। द्वादश स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए 18 मार्च के बाद का समय बहुत अच्छा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। 18

मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्राएं भी कराएगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्यक्रम अधिक होंगे। 18 मार्च से पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।
- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में लाल अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दुर्वा चढ़ाएं व गणेश अथर्वशीष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं नशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आपको ज्यादा से ज्यादा मुनाफा होगा। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। लॉटरी, सट्टा इत्यादि कार्यों में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। आप को अच्छी सफलता मिल सकती है। नवम स्थान का शनि अपेक्षाकृत ज्यादा मुनाफा देने वाला है, लेकिन आपकी सभी मनोकामनाएं जुलाई के बाद ही पूरी होंगी। हालाँकि जो लोग कारोबार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है। वैसे चिंता करने की बात नहीं है। क्योंकि 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति ले कर आ रहा है।

बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। सवाल यह नहीं उठता है कि आप किस प्रकार की नौकरी कर रहें हैं, हर हाल में आपको सराहना, सहयोग और ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान के राहु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। एकादशस्थ राहु के कारण अचानक धन लाभ होगा और आय के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। सभी लोगों के साथ स्नेह

और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि परिवार में कुछ परेशानियों को जन्म दे सकती है, लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है।

माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। पिता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा और कारोबार में मुनाफा होगा। अपने जीवनसाथी के साथ मां-बाप की सेवा कर पुण्यार्जन करें।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

जुलाई के बाद पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है जिसके कारण उनकी शिक्षा-दिक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। खान पान एवं दिनचर्या की अनुशासित बनायें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकुल रहेगा। खुद को मानसिक तौर पर खुश रखने की कोशिश करें। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और नियमित रूप से टहलना आपकी अच्छी सेहत का राज हो सकता है। हरी पत्तेदार सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। उपरोक्त सामान्य बातों का पालन कर आप निश्चित तौर पर स्वास्थ्य के धनी हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने का योग बन रहा है। व्यवसायी इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा। आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी शुभ है।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के उतरार्द्ध में नौकरी मिल जाएगी।

आपके लिए यह बहुत ही अच्छा समय चल रहा है। आप जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं उसमें आपको सम्मान मिलेगा।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रही है। 28 मार्च के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध सामान्य रहेगा। छोटी यात्रा तो होती रहेंगी। विशेष किसी प्रकार की यात्रा का योग नहीं बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण, भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करे।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि दशम भाव में और सिंह राशि का राहु एकादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो यह साल आपके लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छे लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उसके बाद आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें।

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में वृद्धि करगी। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे। तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। 6 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह

की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें क्योंकि पूरे वर्ष पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि बनी रहेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिससे आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। अप्रैल के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में है उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी छोटी मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

6 अप्रैल के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। सप्तमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। ईश्वर भक्ति के कार्यों में आप अधिक समय देंगे। भगवान के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

बेसन की लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल देना आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः

RATNA JYOTI

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। 15 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

9 सितम्बर के बाद समय बहुत ही अनुकूल हो रहा है। अतः उस समय व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होंगी, जो आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगी। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। पिता का सहयोग व भाग्य में रुकावटों का उन्मूलन होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। एकादशस्थ राहु के कारण विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 15 अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि-भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं। परन्तु 9 सितम्बर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

15 अप्रैल के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अष्टम स्थान के गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकते हैं, जिससे उसकी पढ़ाई-लिखाई प्रभावित हो सकती है। अतः वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

अप्रैल के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपका रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। आप अचानक बीमार हो सकते हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विदेश

जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी के तलाश में हैं उसको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को पीछे छोड़ कर आगे निकलेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से छोटी मोटी यात्राएं होंगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं भी होंगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चे की पढ़ाई-लिखाई पर भी आपका पैसे खर्च होगा।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बाटें और वीरवार का व्रत करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं उसका नित्य पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। नौकरी करने वालों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। 26 अप्रैल तक गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफि शुभ है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 16 सितम्बर से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में आप का धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे, उनके साथ झगड़ा होने की संभावना है। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ कुछ अनबन हो सकती है।

परन्तु 26 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई बहनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

सितम्बर के बाद पारिवारिक रूप से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी चाहिए। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

26 अप्रैल के बाद स्वतः आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 26 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। सितम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने

वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

यात्रा-तबादला

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। विद्यार्थियों के लिए बाधाएं आती रहेंगी। परन्तु अप्रैल माह के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। व्यापार व नौकरी में अचानक उन्नति के योग बने हुए हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपका मन कम ही लगेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में मन एकाग्र नहीं हो पायेगा। गुरु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

एकादश स्थान का शनि कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ है। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका चतुर्मुखी विकास होगा।

यदि आप भूमि से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो सफलता अवश्य मिलेगी। कुछ सम्मानित व बड़े लोगों का सहयोग मिलेगा। यदि कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। मई के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भुमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बीमारी इत्यादि में धन व्यय होगा। अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा किसी को उधार न दें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके के हक में नहीं होगा।

घर-परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य लोगों को भी इसमें सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर रहेंगे। मई के बाद आपके

माता पिता के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उनका स्वाभाव बहुत ही सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यामान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शान्ति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा।

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमत्ता एवं विद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने जीवन में अर्जित उपलब्धियों से सन्तुष्ट रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। परन्तु राहु की युति संतान संबंधित कुछ परेशानी भी उत्पन्न कर सकती है। लेकिन उसका हल आप निकाल लेंगे।

मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय संतान की भाग्योन्नति के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। मई के बाद समय और भी उत्तम हो रहा है। उस समय अच्छे स्वास्थ्य के साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी के चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में भी सफलता मिलेगी तथा करियर में अच्छी उन्नति करेंगे।

मई के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 22 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

छोटी मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

22 अक्टूबर के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे।

आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे जल चढ़ाएं एवं शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

दशा विश्लेषण

दशा विश्लेषण घटना के समय निर्धारण में दशा स्वामी की भूमिका के विषय में बताता है। कुंडली में दशा स्वामी की स्थिति के अनुसार फलादेश से अवगत कराता है। साथ ही दशाकाल में किस से सतर्क रहें व क्या उपाय करें इसका ज्ञान कराता है।

अच्छे या बुरे दशा के प्रभाव स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समय-समय पर खट्टा-मीठा अनुभव होता रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की जन्मकुंडली में शुभ एवं अशुभ योग होते हैं। यदि अच्छे ग्रह की दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। दूसरी ओर यदि बुरे ग्रह की दशा चलती है तो आपके समक्ष समस्याएं, बाधा, कष्ट, पीड़ा आदि उपस्थित होते हैं।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(31/01/2006 - 31/01/2026)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 31/01/2006 को आरम्भ होकर 31/01/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र नवम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है, और संगीत, नाटक और आनन्द का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का जबकि मीन राशि में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। नवम भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्म कुण्डली के तृतीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् तृतीय भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा अध्यात्मिक आस्था, ध्यान, त्याग, दान, पिता, गुरु, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फल स्वरूप आपको कोई क्षति नहीं होगी तथा आप बिना किसी समस्या के एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आप अपने कर्म और पिता सहित गुरु जनों के आशीर्वाद से काफी धन एकत्र कर पाएँगे।

व्यवसाय :

शुक्र नवम् भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आप अपने पारिवारिक व्यवसाय को जारी रखेंगे। आप भाग्यशाली हैं, आपको ख्याति मिलेगी, शिक्षा-प्रशिक्षण आपके पारिवारिक व्यवसाय को बड़े स्तर में ले जाने में सहायक होगा।

आप विदेश यात्रा कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

नवम भाव में स्थित शुक्र के फलस्वरूप आपके पिता दीर्घायु और समृद्धिशाली होंगे। आपकी दान-पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आप अपने परिवार की परंपरा का निर्वाह करते हुए धनोपार्जन करेंगे। आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे। और परिवार को एकरूपता से प्रगति के पथ पर ले जाएंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(01/12/2018 - 31/01/2022)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 31/01/2006 को प्रारंभ हुई थी और वद 31/01/2026 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 01/12/2018 को प्रारंभ होकर 31/01/2022 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप निर्दयी मगर साहसी हो सकते हैं। धनी बनेंगे, सरकार से सम्मान मिलेगा। बहुत सारे लोगों को संरक्षण प्रदान करेंगे। सफलता मिलेगी, मगर बाधाओं को पार करने के बाद। मन उदास या चिंतित रहेगा। वक्त गुज़रने पर सुधार आएगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी की अंगूठी में पूजा के उपरांत शनिवार के दिन रात्रिभोजन के बाद मध्यमा अंगुली में नीलम धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(31/01/2022 - 01/12/2024)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 31/01/2006 को प्रारंभ हुई थी और वद 31/01/2026 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 31/01/2022 जो आपके लिए 01/12/2024 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

द्वादश भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका मन व्यथित या भ्रमित रह सकता है। दार्शनिक स्वभाव हो सकता है। कार्य में दक्षता हासिल करने के बावजूद भ्रष्ट बुद्धि के कारण अप्रसन्न रह सकते हैं। विषय-वासनाओं में रुचि बढ़ सकती है; जीवनसाथी के अतिरिक्त व्यक्ति से आपके संबंध हो सकते हैं। सावधानी और मन पर नियंत्रण आवश्यक हैं। गलत मार्ग पर चलने से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(01/12/2024 - 31/01/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 31/01/2006 को प्रारंभ हुई थी और 31/01/2026 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 01/12/2024 को प्रारंभ होकर 31/01/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न यह किसी राशि का स्वामी होता है।

एकादश भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 5वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको सट्टेबाजी, शेयर, लॉटरी आदि से अचानक खूब धन प्राप्त हो सकता है। धन का संचय करेंगे। प्रसन्नचित्त रहेंगे, बुद्धि बढ़ेगी। विभिन्न स्थानों की यात्रा का मज़ा लेंगे। दान-धर्म में धन खर्च करेंगे। सुगुणों में वृद्धि होगी।

अरिष्ट के बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

महादशा :- सूर्य
(31/01/2026 - 31/01/2032)

सूर्य की महादशा 31/01/2026 को आरंभ और 31/01/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य एकादश भाव में अवस्थित है। सूर्य सम्पत्ति, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है जबकि एकादश भाव सभी प्रकार के लाभ, मनोकामनाओं की पूर्ति, शिक्षा तथा भौतिक सुखों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपको धन, प्रभावशाली मित्रों, पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में रोगों की प्रतिरोध शक्ति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रखने के लिए आपको सात्विक और सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और हृदयगति की पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अतिशयता का परित्याग करना चाहिए और जीवन के प्रति आपकी सोच सकारात्मक होनी चाहिए ताकि इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रह सके।

अर्थ :

आप भाग्यशाली होंगे और आपको पर्याप्त आर्थिक संसाधन प्राप्त होंगे। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको पिता से लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अधिक प्रयास किये बगैर आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। दशा ज्यों-ज्यों प्रगति करेगी त्यों-ज्यों आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। किन्तु, आपको फिजूलखर्ची के प्रति सावधान रहना चाहिए क्योंकि आप स्वभाव से उदार हैं।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता और लाभ मिलेंगे। आपको अधिक परिश्रम किये बगैर सफलता मिलेगी। आप सरकारी सेवा में अच्छा करेंगे। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों और संस्थानों में प्रबंधक के पद के लिये सर्वाधिक योग्य है। संगठन से सम्बद्ध कोई भी कार्य आपके अनुकूल होगा। रत्नों का व्यवसाय अथवा सम्पत्ति की परिरक्षा का कार्य लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोगों के कार्य-स्थान में वातावरण सौहार्द्रपूर्ण रहेगा, उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग तथा उच्चधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को स्व-प्रयास से धन तथा लाभ की प्राप्ति होगी। रत्न-आभूषण, धातु तथा बिजली के सामानों आदि के व्यापारियों के लिये यह दशा लाभदायक होगी।

परिवार :

आपका बच्चों से गहरा लगाव है। आपको उनसे अत्यधिक सुख मिलेगा। इस दशा-काल में आप उनके ऊपर बड़ी सीमा तक निर्भर करेंगे। आपके जीवन साथी के साथ आपके सम्बन्ध बहुत मधुर होंगे। आपके जीवन साथी को सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और उनका भाग्योदय होगा। आपकी माता को किसी अप्रत्याशित धन की प्राप्ति और धर्मशास्त्रों में उनकी रूचि हो सकती है। आपके पिता स्वयं धनोपार्जन करेंगे, प्रसन्न रहेंगे और छोटी यात्राओं पर जाएंगे। आपके भाई-बहनों के लिये यह समय समृद्धिशाली रहेगा और आपके साथ उनके

संबंध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपका अध्ययन उत्तम होगा और आप भौतिकी, ललित कला आदि में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। प्रशासकीय पाठ्यक्रमों और राजनीतिक इतिहास में आपकी रूचि होगी।

RATNA JYOTI

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(31/01/2026 - 20/05/2026)

आपके लिए सूर्य की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 20/05/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपको मान-सम्मान प्राप्त होगा। सरकार और सम्मानीय नागरिकों से मान्यता और प्रशंसा की उपलब्धि होगी। आपके मित्रों की संख्या पर्याप्त होगी। वे आपकी सहायता के लिए तत्पर रहेंगे और संभ्रांत वर्ग के विद्वान व्यक्ति होंगे। जो भी काम आप करेंगे, सफलता मिलेगी। सट्टेबाजी से या संतान के कारण धन प्राप्त होगा। मंत्रों और सिद्धियों में आपकी रुचि बढ़ेगी। जीवनसाथी की संपदा में वृद्धि होगी। व्यापार में साझेदार के साथ संबंध मधुर रहेंगे। विद्यार्थियों के लिए समय आकांक्षाओं की पूर्ति ओर परीक्षा में कीर्तिमान स्थापित करने का है। विरोधी परास्त होंगे। जीवनसाथी को मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

मसालेदार भोजन से परहेज करें क्योंकि पेट खराब हो सकता है। कैल्शियम की कमी से शरीर के नीचे के अंगों में कोई समस्या हो सकती है। इसके लिए दुग्ध, शहद का सेवन अधिक करें और अग्नि को दूध अर्पित करें। आटे, गुड़ और तांबे का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(20/05/2026 - 19/11/2026)

आपकी सूर्य की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 19/11/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कभी-कभी बेचैनी का अनुभव हो सकता है, मगर थोड़ी सावधानी से इसे समाप्त कर सकते हैं। समाजकार्य और महिलाओं से संबंधित कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। मातहतों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

संतान से लाभ प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी या भागीदार किसी लंबी यात्रा पर जा सकते हैं। व्यापारियों को ऋण प्राप्त हो सकता है। रसायन, द्रव पदार्थ आदि का आयात-निर्यात लाभप्रद रहेगा। सेवारत जातक सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आपके छोटे भाई-बहन खेती की जमीन आदि क्रय कर सकते हैं। बड़े भाई-बहनों के जीवन में अचानक परिवर्तन आ सकता है। माता का जीवन सुखी रहेगा। जायदाद से लाभ, किराया आदि संतोषप्रद रहेंगे। आप लंबी यात्रा पर जा सकते हैं।

ज्वर, मामूली चोट आदि के विरुद्ध सावधानी बरतें। चिंता से बचें क्योंकि यह रोगों को जन्म दे सकती है। शुभत्व वर्धन हेतु चंद्र गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(19/11/2026 - 27/03/2027)

आपकी सूर्य की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 27/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय और ऊर्जावान रहेंगे तथा मानसिक या शारीरिक बाधाओं को दृढ़ता से पार करेंगे। आपको प्रसिद्धि और सफलता की प्राप्ति होगी। प्रतिस्पर्धा में भाग लेने के लिए यह उत्तम समय है। विरोधी या प्रतिद्वंद्वी आपको हानि नहीं पहुंचा सकेंगे।

आपकी संतान बहुत सक्रिय और ऊर्जावान होगी। वे खेलकूद में भाग लेंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार का अप्रत्याशित खर्चा हो सकता है। माता में उत्साह और ऊर्जा रहेंगे। पिता को सत्ता और अधिकार प्राप्त होंगे। आपका खर्चा बढ़ सकता है। वाहन खरीद/बेच सकते हैं। बड़े भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन हो सकता है। मामा पक्ष के लोग भाग्यशाली रहेंगे।

सेवारत जातकों के लिए समय भाग्यशाली है। व्यापारियों को ऋण प्राप्त हो सकता है या ओवरड्राफ्ट सुविधा मिल सकती है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। फोड़े-फुंसी, ज्वर आदि हो सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(27/03/2027 - 18/02/2028)

आपके लिए सूर्य की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 27/03/2027 को प्रारंभ होकर 18/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपको धन की प्राप्ति होगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। खेलकूद और मनोरंजन में रुचि रहेगी। धनी बनेंगे। बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता होगी; समाज में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में उत्थान के अवसर आएंगे। आपके पिता के भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। छोटे-भाई-बहनों को धन लाभ होगा। उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। वे उत्साह से परिपूर्ण होंगे।

आपके जीवनसाथी को धनलाभ होगा। उनकी इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा संतोषजनक रहेगी। आपके यहां संतान का जन्म हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्य में बाधाएं आ सकती हैं। व्यापारी अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ होगा।

हृदय और उदर के रोगों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरवजी के रूप में शिव जी की पूजा करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(18/02/2028 - 07/12/2028)

आपके लिए सूर्य की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 18/02/2028 को प्रारंभ होकर 07/12/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको विरासत या किसी वसीयत आदि से लाभ हो सकता है। शुभग्रह बृहस्पति आपको धन, सौभाग्य प्रदान करेंगे। प्राच्य विद्या आदि में रुचि हो सकती है। धन प्राप्त होगा। अध्यात्म में रुचि होगी, धार्मिक स्थल की यात्रा संभव है। दान-धर्म में भाग लेंगे। वाहन द्वारा लाभ होगा। माता के साथ संबंध मधुर होंगे।

आपके जीवनसाथी को नाम, प्रसिद्धि, शत्रुओं पर विजय, यात्राएं, धन में वृद्धि संभावित हैं। आपके पिता की लंबी यात्रा हो सकती है, खर्चे बढ़ेंगे, अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी और अध्यात्म में रुचि की संभावना है। भाई-बहनों को मातहतों से लाभ होगा, स्पर्धा में विजय मिलेगी, धन प्राप्त होगा। माता को निवेश में लाभ, सुख-समृद्धि प्राप्त होंगे। आपकी संतान भविष्य के लिए सुदृढ़ नींव रखेगी। उन्हें धन मिलेगा, लंबी यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित परिणाम पाने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। वेतन बढ़ सकता है। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों के संपर्क बढ़ेंगे, अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

बदहज़मी, मधुमेह, जिगर-तिल्ली की बीमारी, श्वसनतंत्र के रोगों से बचें। कष्टों से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें और पीली वस्तुओं का दान करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(07/12/2028 - 19/11/2029)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 07/12/2028 को प्रारंभ होगी और 19/11/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी धर्म और सेवा कार्य में रुचि होगी। छोटे भाई-बहनों का विवाह हो सकता है। पिता के साथ मधुरता बनाये रखने के लिए प्रयास करना होगा। संतान के साथ भी संबंध बिगड़ सकते हैं। इस अवधि में किये निवेश की समीक्षा सावधानीपूर्वक करनी होगी। आपकी संन्यास और योग में रुचि होगी। खर्चे अधिक होंगे, मगर आय भी बनी रहेगी।

जीवनसाथी भाग्यशाली होंगे, धन प्रचुर होगा। आपके पिता को साझेदारों से लाभ

होगा, उच्च पद प्राप्त करेंगे। माता को धन मिलेगा, लंबी यात्राएं होंगी। भाई-बहनों के विवाह हो सकते हैं या शिशु का जन्म संभव है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। परामर्शदाता स्पर्धा में विजयी रहेंगे। व्यापारियों को ठोस लाभ होगा।

कान और श्वसन तंत्र के रोगों से सावधान रहें। कष्ट से छुटकारे के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(19/11/2029 - 25/09/2030)

आपकी सूर्य की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 19/11/2029 को प्रारंभ होकर 25/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आप आयात-निर्यात का काम कर सकते हैं। विदेश की यात्रा हो सकती है। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। व्यापार-उद्योग में विस्तार के लिए धन व्यय हो सकता है। मानसिक शांति, धन का लाभ संभावित हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लोकप्रियता और सम्मान अर्जित करेंगे।

मामा पक्ष के लोगों से लाभ और सुख प्राप्त होंगे। व्यापार के साझेदार को कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, उनका स्वास्थ्य उत्तम होगा और शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति प्राप्त होगी, वे मकान बना सकते हैं या निवास में परिवर्तन कर सकते हैं। माता के लिए समृद्ध समय का संकेत है। उन्हें आप से सुख मिलेगा। भाई-बहनों को धन मिलेगा, व्यस्तता बढ़ेगी, कार्यस्थल में परिवर्तन हो सकता है।

सेवारत जातक किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को विनिमय से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है। स्नायुतंत्र, आंख और पैरों की समस्याओं से सावधान रहें। बुध मंत्र का जाप और हरी वस्तुओं का दान लाभकारी रहेगा।

ॐ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(25/09/2030 - 31/01/2031)

आपके लिए सूर्य की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 25/09/2030 को आरंभ होकर 31/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों

RATNA JYOTI

महादशा :- चन्द्र
(31/01/2032 - 31/01/2042)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 31/01/2032 को आरम्भ और 31/01/2042 को समाप्त होगी।

चन्द्र षष्ठम भाव में अवस्थित है और षष्ठम भाव रोग, बीमारी, रोजगार अधीनस्थ कर्मचारियों या सेवकों, ऋण, शत्रुओं मामा, कृपणता, तथा तीव्र व्यथा का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षो की यह अवधि औसत अवधि होगी और उदास, राहत, दुःख तथा समस्याओं की अवधि होगी और आप परिस्थिति के अनुसार इनके साथ समझौता करने का प्रयास करेंगे।

स्वास्थ्य :

आप किसी बड़े या छोटे रोग से ग्रसित नहीं होंगे, अपना सन्तुलन बनाए रहेंगे और समय सारणी के अनुसार और स्फूर्ति तथा सक्रियता के साथ अपने कार्यो का संपादन करेंगे। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और शक्ति सामान्य रहेगी और आप अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और संपत्ति :

दस वर्ष की इस अवधि में आप के मामा आपकी बहुत सहायता करेंगे औन उनकी सहायता के कारण आपकी संपत्ति में वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आप सुख-साधनों पर व्यय करेंगे और जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे।

व्यवसाय :

आपका व्यावसायिक जीवन सुखी होगा। अगर नौकरी पेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर मिलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो नये व्यवसाय के अवसर मिलेंगे जिसमें आप सफल होंगे। घाटे के अवसर भी आ सकते हैं। आपके मामा आपकी आपकी समस्याओं के समय बहुत सहायता करेंगे। आपके मामा अपने जीवन में बहुत तरक्की करेंगे और आपके परिवार की सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा। किन्तु विषादपूर्ण मुद्रा और स्वभाव के कारण कभी-कभी समस्याएं आ सकती हैं जिसके फलस्वरूप आपका दैनिक जीवन अव्यवस्थित हो सकता है।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

विषादग्रस्त मुद्रा के कारण आप साहित्य के अध्ययन में लीन रहेंगे। आपका झुकाव ज्योतिष और खगोल की ओर भी हो सकता है।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(31/01/2032 - 01/12/2032)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 31/01/2032 को प्रारंभ होकर 31/01/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 31/01/2032 को प्रारंभ होकर 01/12/2032 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मपत्रिका में चंद्रमा छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, तीमारदारी, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। चंद्रमा मन का कारक है। छठे भाव में इसकी स्थिति के कारण यह अवधि अशुभ हो सकती है। उच्चाधिकारियों, सहकर्मियों और मातहतों के साथ संबंध कटु हो सकते हैं। चंद्र अगर उच्च का या शुभ हो, तो हानि कम होगी। कार्यक्षेत्र में गड़बड़ी या कुप्रबंधन का प्रसार संभव है; धनहानि भी हो सकती है। मष्तिष्क और यकृत की शक्ति कम हो सकती है।

खानपान कर नियंत्रण रखें। मष्तिष्क को सबल बनाने के लिए चांदी की अंगूठी में जड़ा 5 रत्ती का मोती कनिष्ठिका में दायें हाथ में, सोमवार को प्रातःकाल दूध से धोकर, चंद्र मंत्र का 11 बार उच्चारण करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(01/12/2032 - 02/07/2033)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 31/01/2032 को प्रारंभ होकर 31/01/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 01/12/2032 को प्रारंभ होकर 02/07/2033 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में स्थित है। छठा भाव व्याधि, अधीनस्थ कर्मचारी और शत्रुओं का प्रतिनिधि है। मंगल अशुभ ग्रह है और छठा भाव भी अशुभ समझा जाता है। अशुभ भाव में अशुभ ग्रह की स्थिति बहुत शुभ होती है। छठे भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 9, 12 और लग्न भावों पर दृष्टिपात कर रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप साहसी, शक्तिशाली और धैर्यवान होंगे। शत्रुओं का दमन करेंगे। फिजूलखर्ची बढ़ सकती है। त्वचा के रोगों से बचें। वासनाओं में वृद्धि होगी, विजयी होंगे। प्रबंधन शक्ति उत्तम रहेगी। नज़दीकी रिश्तेदारों के कारण चिंताएं बढ़ सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव और सकारात्मक विचारों की वृद्धि के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर जाएं।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(02/07/2033 - 31/12/2034)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 31/01/2032 को प्रारंभ हुई और 31/01/2042 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 02/07/2033 को प्रारंभ होकर 31/12/2034 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। यह शुभ या अशुभ अपनी स्थिति के अनुसार होता है।

इस अवधि में आपके संतान के साथ संबंध मधुर रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। प्रेम प्रसंग में सफलता मिलेगी। सामाजिक संपर्कों से प्रसन्नता मिलेगी। सट्टे में लाभ हो सकता है। हृदय रोग से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें और 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(31/12/2034 - 01/05/2036)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 31/01/2032 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 31/12/2034 को प्रारंभ होकर 01/05/2036 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभग्रह है। बृहस्पति अष्टम में स्थित होकर कुंडली के 12,2,4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप कुछ अप्रसन्न रह सकते हैं, मगर दयालु होंगे। आपकी प्रवृत्ति निम्नकोटि की हो सकती है, परंतु दिखावा आप सदाचारी होने का करेंगे। विपरीत लिंग के विधुर/विधवा से संबंध स्थापित कर सकते हैं। प्रत्येक कार्य सोच-समझकर करें ताकि कोई असम्मानीय स्थिति न उत्पन्न हो।

शुभत्व में वृद्धि ओर अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के 76000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(01/05/2036 - 01/12/2037)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 31/01/2032 को प्रारंभ हुई और 31/01/2042 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 01/05/2036 को प्रारंभ होकर 01/12/2037 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप साहसी और धनी होंगे, मगर कुछ एकांतप्रिय हो सकते हैं। उच्चाधिकारी आपको सम्मानित करेंगे। स्थानीय संस्थाओं के अध्यक्ष आदि बन सकते हैं। बहुत से व्यक्तियों को संरक्षण प्रदान करेंगे। सफलता बाधाओं को पार करने के बाद मिलेगी। मन उदास रह सकता है, पर कुछ समय बाद सुधार आएगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी में जड़ा नीलम शनिवार के दिन पूजा के बाद दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में अंगूठी को कच्चे दूध या गंगाजल से धोने के बाद शनि का वैदिक मंत्र पढ़ते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(01/12/2037 - 02/05/2039)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 31/01/2032 को प्रारंभ हुई थी और 31/01/2042 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 01/12/2037 को प्रारंभ होकर 02/05/2039 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है।

इस अवधि में आप दार्शनिक विचारों के होंगे। कुछ चिंताएं हो सकती हैं। नये कार्यों में दक्षता हासिल करेंगे। मन में वासनात्मक कुविचार आ सकते हैं और चरित्र का ह्रास हो सकता है। संयम धारण करना श्रेयस्कर होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ के द्वारा ज्योतिषीय घटनाओं का ग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है तथा ग्राफ के रूप में ही फलादेश दिया गया है।

जीवन में आने वाले समय का उतार-चढ़ाव का एस्ट्रोग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है जिसे समझना सहज और आसान होता है। यह एक खास समय में आपकी उन्नति अथवा अवनति की मात्रा को दर्शाता है। इस एस्ट्रोग्राफ पर सरसरी दृष्टिपात कर आप पता कर सकते हैं कि आनेवाला कौन सा समय आपके लिए उपयुक्त है अथवा नहीं।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2019

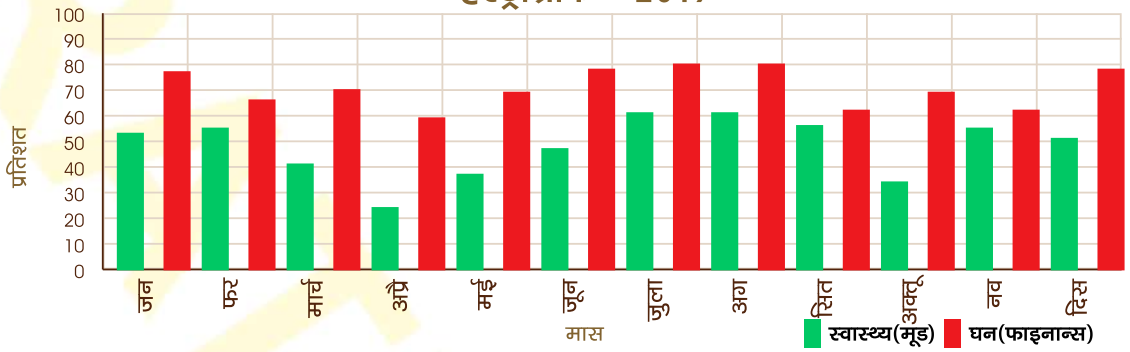

एस्ट्रोग्राफ - 2020

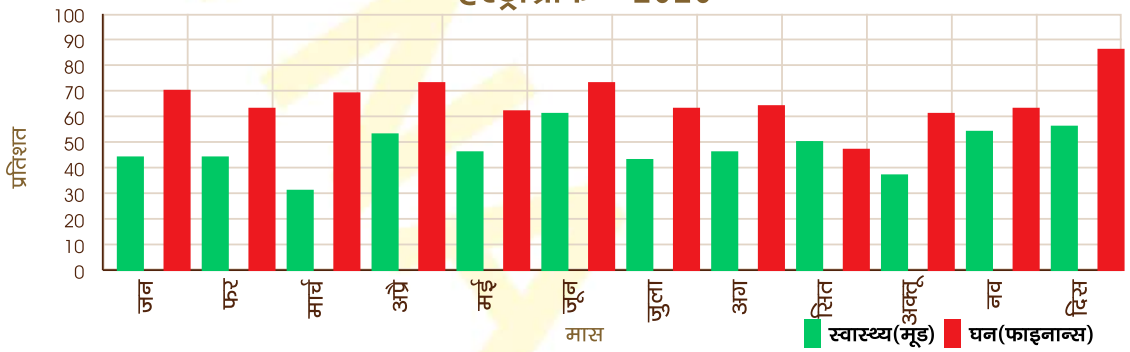

एस्ट्रोग्राफ - 2021

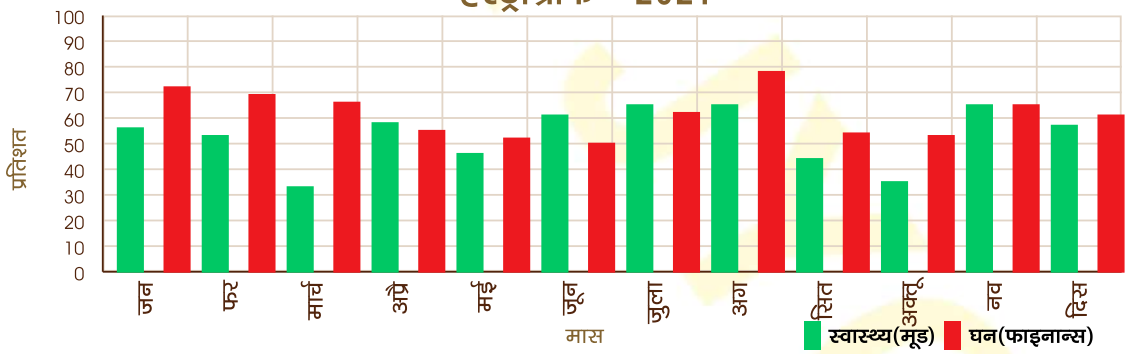

एस्ट्रोग्राफ - 2022

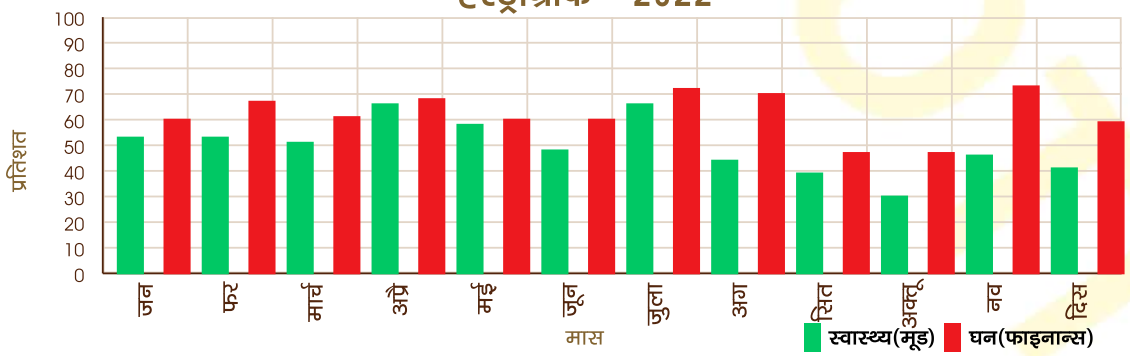

एस्ट्रोग्राफ - 2023

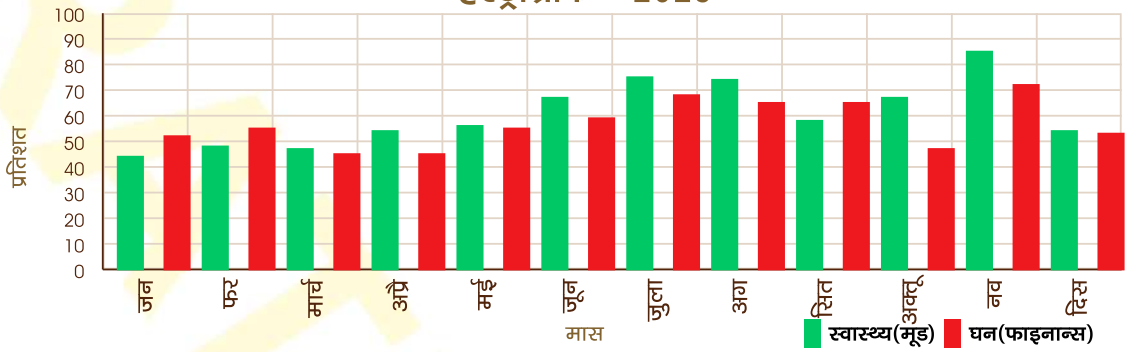

एस्ट्रोग्राफ - 2024

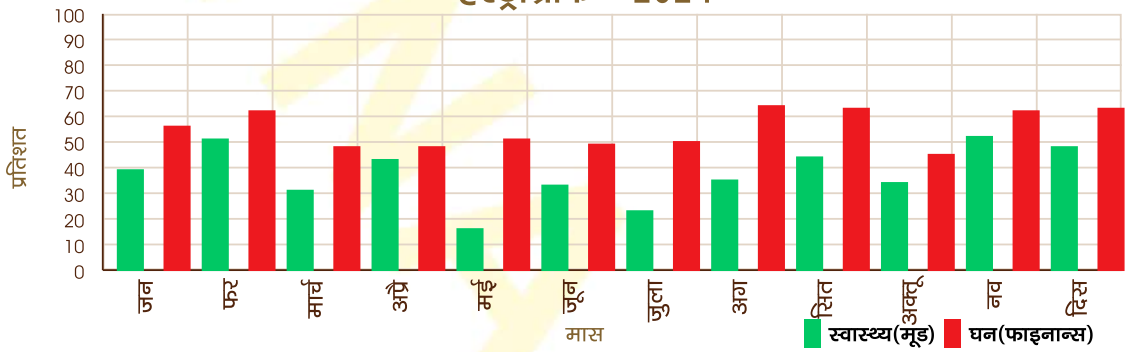

एस्ट्रोग्राफ - 2025

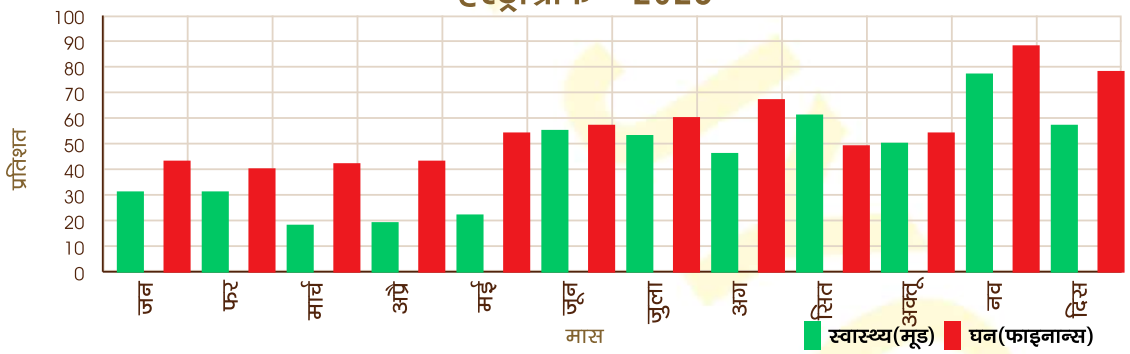

एस्ट्रोग्राफ - 2026

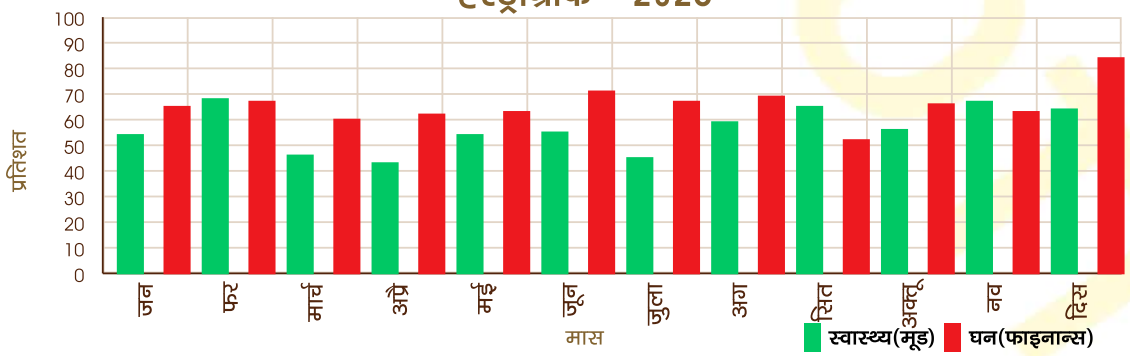

एस्ट्रोग्राफ - 2027

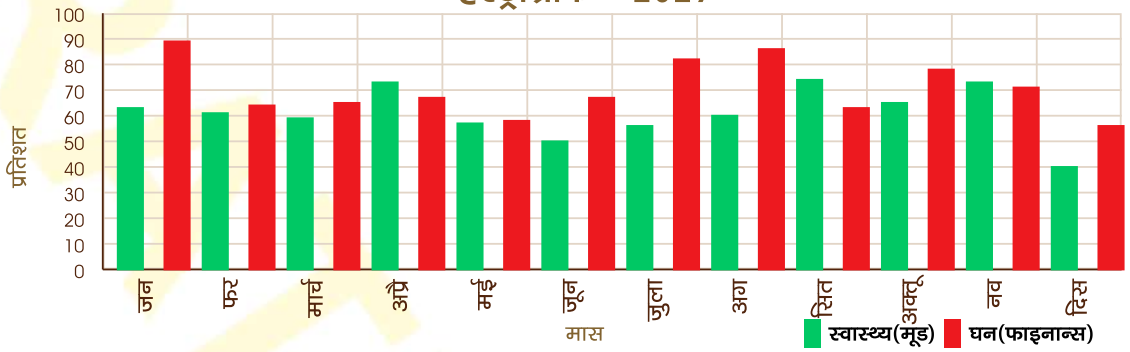

एस्ट्रोग्राफ - 2028

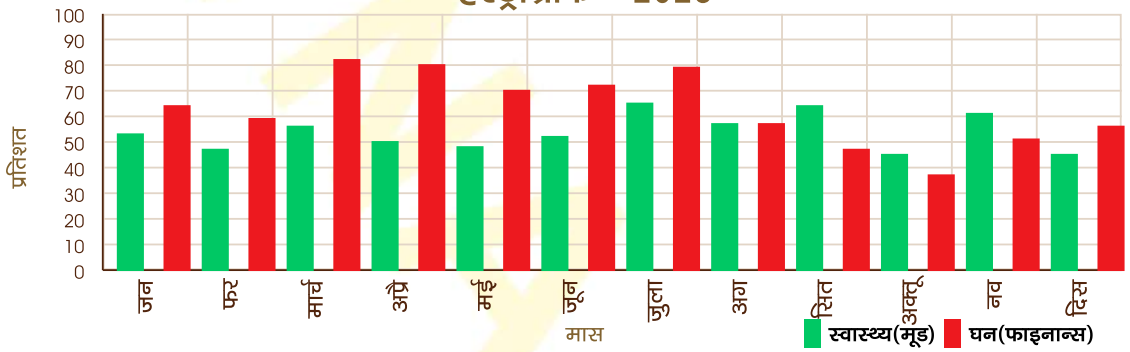

एस्ट्रोग्राफ - 2029

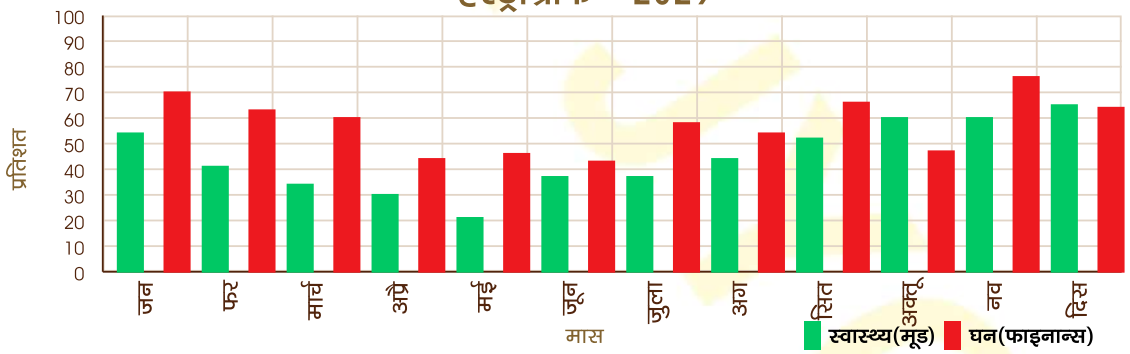

एस्ट्रोग्राफ - 2030

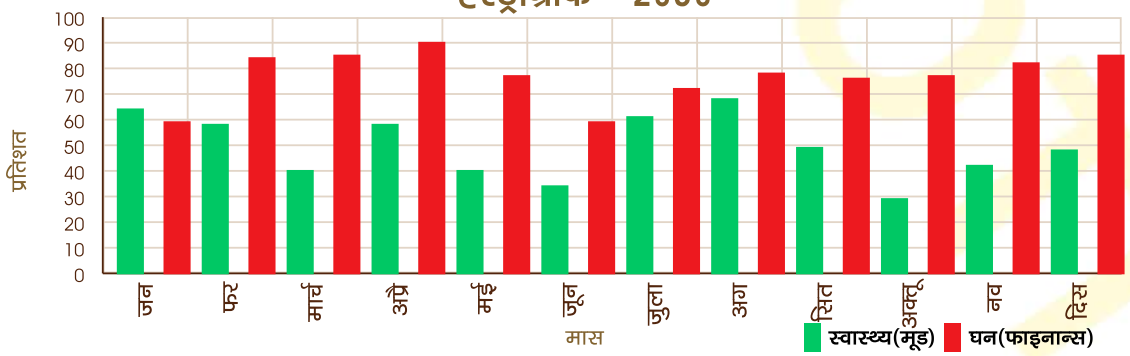

एस्ट्रोग्राफ - 2031

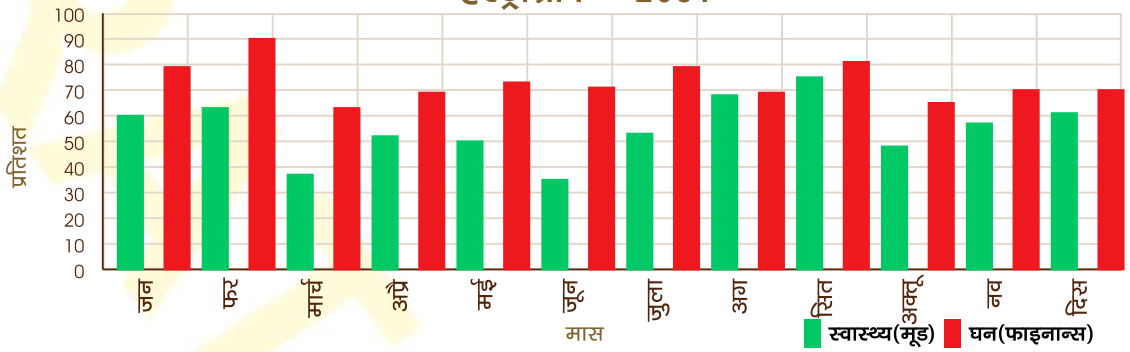

एस्ट्रोग्राफ - 2032

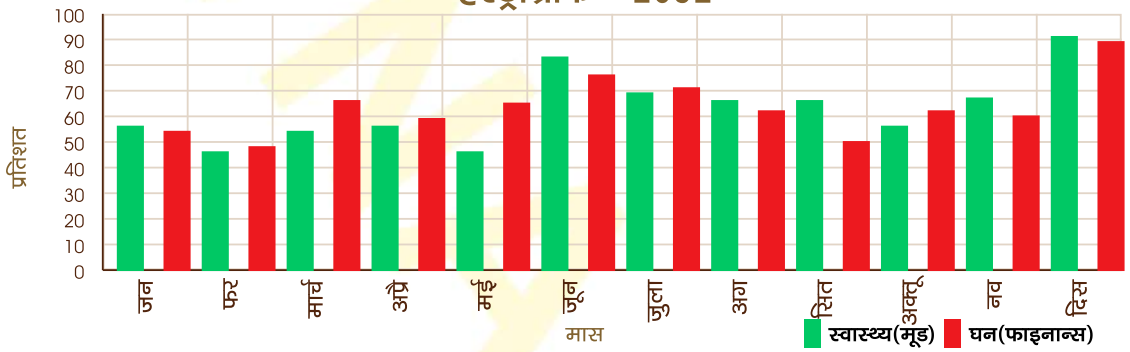

एस्ट्रोग्राफ - 2033

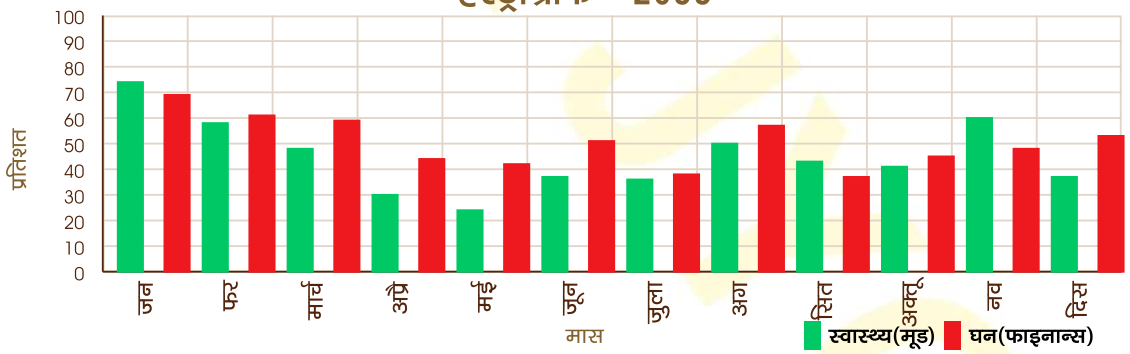

एस्ट्रोग्राफ - 2034

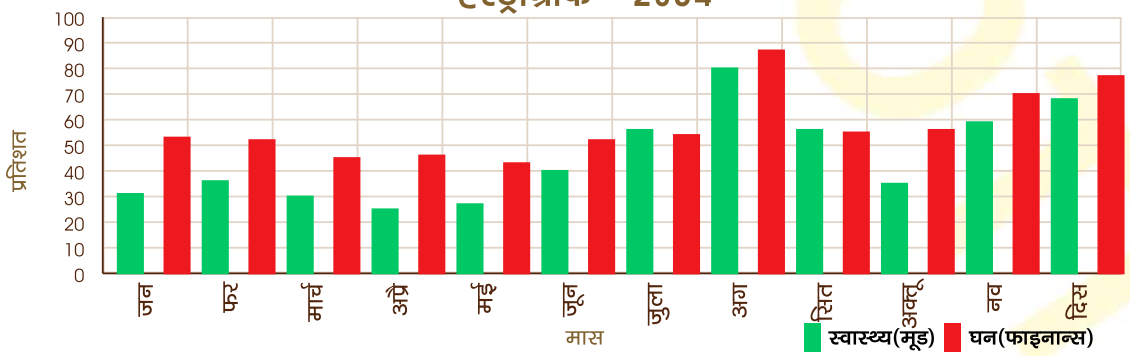

एस्ट्रोग्राफ - 2035

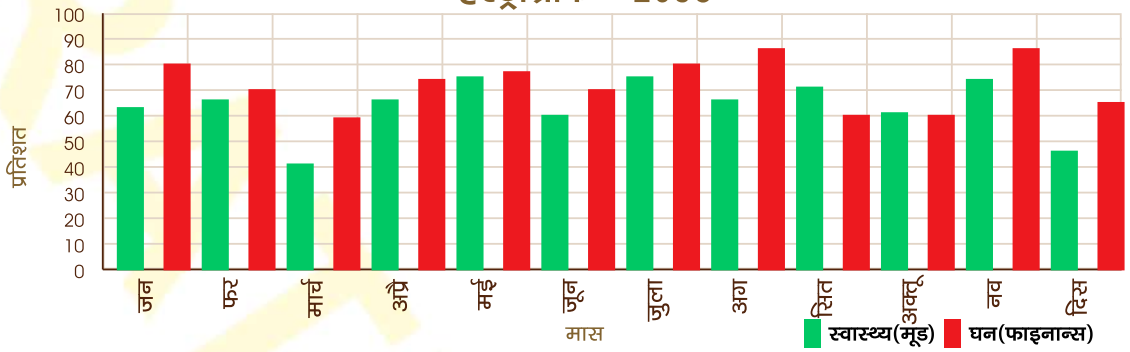

एस्ट्रोग्राफ - 2036

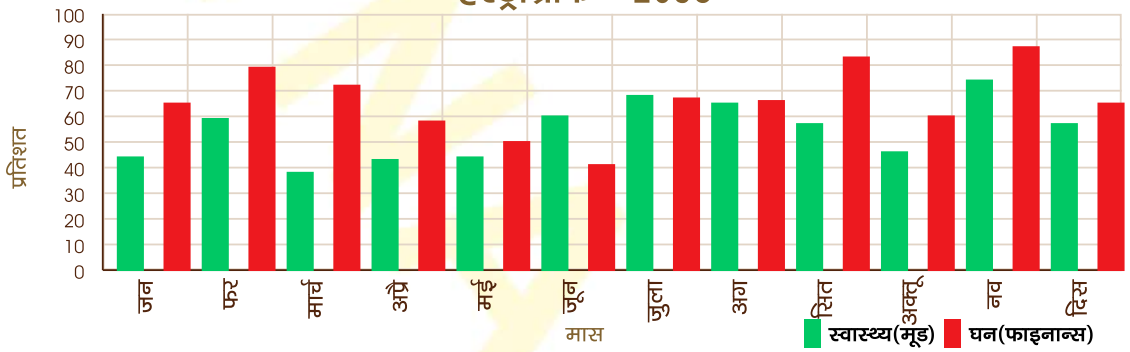

एस्ट्रोग्राफ - 2037

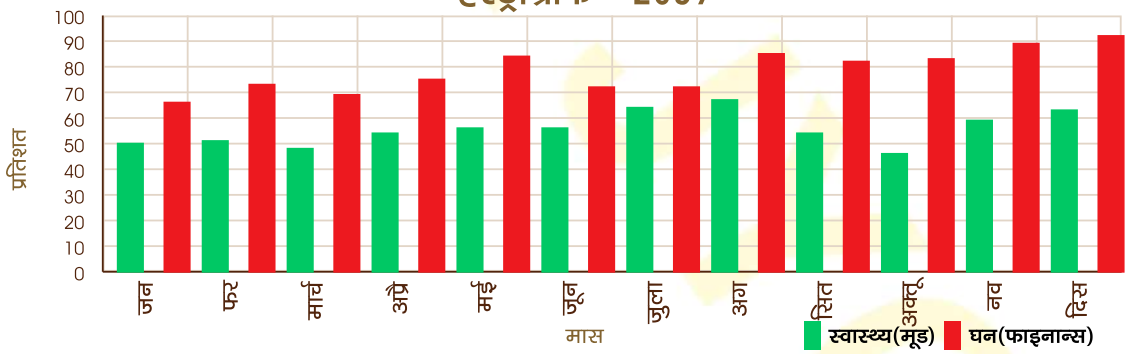

एस्ट्रोग्राफ - 2038

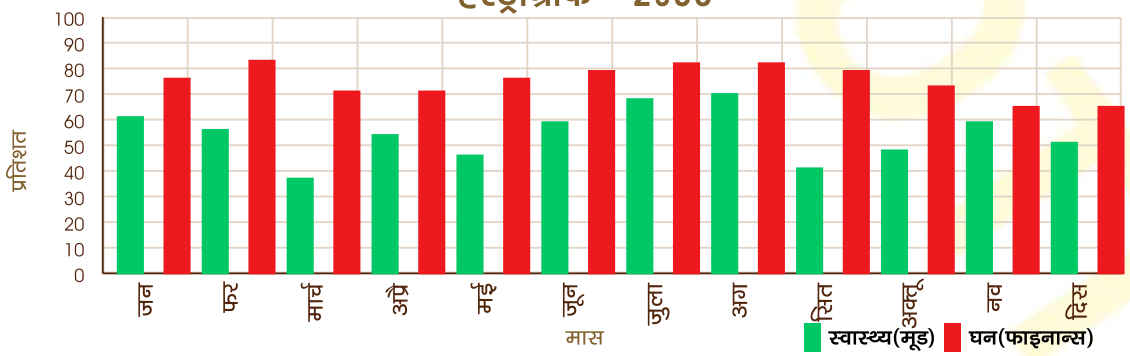

योग

जन्मकुंडली में मौजूद शुभ अथवा अशुभ योग किसी भी व्यक्ति के भाग्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

जन्मकुंडली में योग का निर्माण उस परिस्थिति में होता है जब किसी ग्रह, राशि अथवा भाव का संबंध किसी अन्य ग्रह, राशि अथवा भाव से खास रूप में स्थिति, दृष्टि अथवा युति के रूप में बनता है। इन योगों के शुभत्व अथवा अशुभत्व के कारण विभिन्न प्रकार की शुभाशुभ घटनाएं हमारे जीवन में घटित होती हैं। प्रत्येक कुंडली में योग का बनना 9 ग्रहों, 12 भावों, 12 राशियों एवं 27 नक्षत्रों के कारण अवश्यंभावी होता है। इन योगों का प्रभाव हर कुंडली में अलग-अलग उनकी उपलब्धता के अनुसार होता है। दुर्लभ योगों का जीवन में विशेष प्रभाव होता है।

योग

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमान्द्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढ्गात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,बुध योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

अचल लक्ष्मी योग

चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुंचति।।

।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 8।।

यदि जन्मकुंडली में मंगल के साथ चंद्रमा चाहे जिस भाव में हो जातक के पास सदैव लक्ष्मी निवास करती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके पास सदैव धन रहेगा। आपके घर में स्थिर लक्ष्मी निवास करेगी।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,शुक्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरू से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 302-3 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश और द्वितीयेश शुक्र के साथ अथवा पाप ग्रह के साथ होकर 6/8/12 वें भाव में हों तो एक स्त्री की मृत्यु के पश्चात् द्वितीय विवाह होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,शनि,राहु योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप एक जीवनसाथी की मृत्यु के उपरांत दूसरा विवाह संभाव्य है।

देवतुल्य अति दीर्घायु योग

न च केन्द्रगताः पापा न त्रिकोणे न नैधने।
तस्यायुरमरप्रख्यं निश्चयेन च कीर्त्यते।।

।। सारावली ।। अ.10/श्लो.-97।।

यदि जन्मपत्रिका में केन्द्र त्रिकोण या अष्टम भाव में पाप ग्रह न हों तो जातक की देवतुल्य आयु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मोक्ष योग

व्ययस्थानगते सौम्ये तदीशे स्वोच्चराशिगे ।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे मोक्षः स्यान्नात्र संशयः ।।

।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में बुध हो, व्ययेश अपनी उच्च राशि में हो, शुभ ग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो मोक्ष होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,गुरु योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मोक्ष प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।